गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका सितम्बर- 2012

गुरुत्व ज्योतिष

प्रश्नावली विशेष



NON PROFIT PUBLICATION

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका

सितम्बर 2012

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
http://gk.yolasite.com/
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

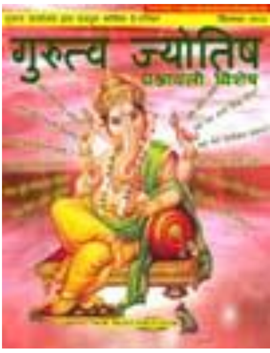
चिंतन जोशी,
स्वस्तिक.ऐन.जोशी

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी, स्वस्तिक आर्ट

हमारे मुख्य सहयोगी

स्वस्तिक.ऐन.जोशी (स्वस्तिक सोफ्टेक इन्डिया लि)



भारतीय परंपरा मूल रुप से विभिन्न धार्मिक आस्थ और विश्वास पर आधारित है। प्रश्नावली से भविष्य ज्ञात करने की पौराणिक प्रथा पुरातन काल से ही चली आरही हैं। यहि कारण हैं की अनेको विद्वानो अपनी खोज एवं अनुभव के आधार पर विभिन्न प्रश्नावलीयों ...4

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक शुभकार्य करने के पूर्व भगवान श्री गणेश जी की पूजा की जाती हैं इसी लिये ये किसी भी कार्य का शुभारंभ करने से पूर्व कार्य का "श्री गणेश करना" कहा जाता हैं। एवं प्रत्यक शुभ कार्य या अनुष्ठान करने के पूर्व *"श्री गणेशाय नमः"* का ...6

भविष्य ज्ञात प्रश्नावली विशेष में पढ़े

◈◈◈ विशेष में ◈◈◈

◈◈◈ स्थायी और अन्य लेख ◈◈◈

◈◈◈ प्रश्नावली विशेष ◈◈◈

◈◈◈ हमारे उत्पाद ◈◈◈

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

संपादकीय

जय गुरुदेव

भारतीय परंपरा मूल रुप से विभिन्न धार्मिक आस्थ और विश्वास पर आधारित है। प्रश्नावली से भविष्य ज्ञात करने की पौराणिक प्रथा पुरातन काल से ही चली आरही हैं। यहि कारण हैं की अनेको विद्वानो अपनी खोज एवं अनुभव के आधार पर विभिन्न प्रश्नावलीयों की रचना की हैं। जिसके माध्यम से अपने इष्ट का ध्यान करके, अपने अभिष्ट प्रश्ननों का संभवित प्रश्नावली से उत्तर प्राप्त किया जा सकता हैं। बताया जाता हैं की सैकड़ो वर्ष पूर्व हमारे विद्वानो ने अपने ज्ञान बल एवं खोज से निर्धारित शब्धों एवं अंको के माध्य में प्रश्नावली की संरचना की, इस प्रश्नावली के माध्यम से व्यक्ति अपने अतित की शुभ-अशुभ घटनाओं के रहस्य को सरलता से ज्ञात कर सकता हैं।

प्रश्नावली से भविष्य ज्ञात करना सबसे सरल विधि हैं, क्योकी, इस में नाहीं कोई लंबी चौड़ी गणनाएं हैं नाही कोई जटिल प्रणाली हैं। बस अपने प्रश्न को स्मरण करते हुवे निर्धारित प्रश्नावली पर शलाका या अपनी अनामिका अंगुलि धुमाकर आसानी से ज्ञात किया जा सकता हैं।

कुछ जानकारों का मानना हैं की प्रश्नावली के माध्यम से एकदम स्टिक भविष्यवाणी या अपने प्रश्नों का हल प्राप्त हो जाये यह संभव नहीं हैं, क्योकि प्रश्नावली में केवल उसे प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति के निर्धारित उत्तर हि होते हैं, जो की मनुष्य की वास्तविक समस्याओं का संपूर्ण हल बता पाये यह संभव नहीं हैं, लेकिन कुछ हद तक इस प्रश्नावली का उपयोग बिना कोई बड़ा जोखिम उठाये अपने मार्गदर्शन हेतु अवश्य किया जा सकता हैं।

पाठकों के मार्गदर्शन के लिये प्रश्नावली विशेषांक कि प्रस्तुति कि गई हैं।

सभी पाठको के मार्गदर्शन या ज्ञानवर्धन के लिए प्रश्नावली से संबंधित विभिन्न उपयोगी जानकारी इस अंक में विभिन्न ग्रंथो एवं निजी अनुभवो के आधार पर संकलित की गई हैं। जानकार एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि प्रश्नावली से संबंधित विषय में समय, स्थान, वस्तु, स्थिति इत्यादि के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य जानकार या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले। क्योकि प्रश्नावली की विभिन्न प्रणाली में अंतर होने के कारण एवं विद्वानो के निजी अनुभव व विभिन्न ग्रंथो में वर्णित प्रश्नावली से संबंधित जानकारीयों में एवं विद्वानो के स्वयं के अनुभवो में भिन्नता होने के कारण प्रश्नावली से संबंधित फलकथन भिन्नता संभव हैं।

सभी जैन बंधु/बहनो को पर्युषण महापर्व की ढेरसारी शुभकामनाएं और गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से...

॥मिच्छामी दुक्कड्म्॥

अपना सहयोग बनाएं रखे हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं.....

चिंतन जोशी

***** भविष्य ज्ञात प्रश्नावली से संबंधित विशेष सूचना *****

- पत्रिका में प्रकाशित प्रश्नावली से सम्बन्धित सभी जानकारीयां गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- पौराणिक ग्रंथो पर अविश्वास रखने वाले व्यक्ति प्रश्नावली के विषय को मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- प्रश्नावली का विषय आस्था एवं विश्वास पर आधारित होने के कारण इस अंकमें वर्णित सभी जानकारीया भारतिय ग्रंथो से प्रेरित होकर लिखी गई हैं।
- प्रश्नावली से संबंधित विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- प्रश्नावली में वर्णित संबंधित भविष्यवाणी कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- प्रश्नावली से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय उनका स्वयं का होगा।
- प्रश्नावली से संबंधित पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- प्रश्नावली से संबंधित लेख प्रामाणिक ग्रंथो, हमारे वर्षो के अनुभव एव अनुशंधान के आधार पर दिये गये हैं।
- हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रश्नावली पर विश्वास किए जाने पर उसके लाभ या नुक्शान की जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी प्रश्नावली पर विश्वास करने वाले या उसका प्रयोग करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रश्नावली का प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रश्नावली के उपयोग करने मे त्रुटि रखता हैं या उससे त्रुटि होती हैं तो इस कारण से प्रतिकूल अथवा विपरित परिणाम मिलने भी संभव हैं।
- प्रश्नावली से संबंधित जानकारी को मानकर उससे प्राप्त होने वाले लाभ, हानी कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये प्रश्नावली पर आधारित लेखों में वर्णित जानकारी को हमने कई बार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण ने भी अपने नीजी जीवन में अनुभव किया हैं। जिस्से हम कई बार प्रश्नावली के आधार पर स्टिक उत्तर की प्राप्ति हुई हैं। अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।

श्री गणेश सभी देवताओं में सर्वप्रथम पूजनीय कैसे बने?

✍ चिंतन जोशी

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक शुभकार्य करने के पूर्व भगवान श्री गणेश जी की पूजा की जाती हैं इसी लिये ये किसी भी कार्य का शुभारंभ करने से पूर्व कार्य का "श्री गणेश करना" कहा जाता हैं। एवं प्रत्यक शुभ कार्य या अनुष्ठान करने के पूर्व *"श्री गणेशाय नमः"* का उच्चारण किया जाता हैं। गणेश को समस्त सिद्धियों को देने वाला माना गया है। सारी सिद्धियाँ गणेश में वास करती हैं।

इसके पीछे मुख्य कारण हैं की भगवान श्री गणेश समस्त विघ्नों को टालने वाले हैं, दया एवं कृपा के अति सुंदर महासागर हैं, एवं तीनो लोक के कल्याण हेतु भगवान गणपति सब प्रकार से योग्य हैं। समस्त विघ्न बाधाओं को दूर करने वाले गणेश विनायक हैं। गणेशजी विद्या-बुद्धि के अथाह सागर एवं विधाता हैं।



भगवान गणेश को सर्व प्रथम पूजे जाने के विषय में कुछ विशेष लोक कथा प्रचलित हैं। इन विशेष एवं लोकप्रिय कथाओं का वर्णन यहा कर रहें हैं।

इस के संदर्भ में एक कथा है कि महर्षि वेद व्यास ने महाभारत को से बोलकर लिखवाया था, जिसे स्वयं गणेशजी ने लिखा था। अन्य कोई भी इस ग्रंथ को तीव्रता से लिखने में समर्थ नहीं था।

सर्वप्रथम कौन पूजनीय हो?

कथा इस प्रकार हैं : तीनो लोक में सर्वप्रथम कौन पूजनीय हो?, इस बात को लेकर समस्त देवताओं में विवाद खडा हो गया। जब इस विवादने बडा रुप धारण कर लिये तब सभी देवता अपने-अपने बल बुद्धिअ के बल पर दावे प्रस्तुत करने लगे। कोई परीणाम नहीं आता देख सब देवताओं ने निर्णय लिया कि चलकर भगवान श्री विष्णु को निर्णायक बना कर उनसे फैसला करवाया जाय।

सभी देव गण विष्णु लोक मे उपस्थित हो गये, भगवान विष्णु ने इस मुद्दे को गंभीर होते देख श्री विष्णु ने सभी देवताओं को अपने साथ लेकर शिवलोक में पहुच गये। शिवजी ने कहा इसका सही निदान सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी हि बताएंगे। शिवजी श्री विष्णु एवं अन्य देवताओं के साथ मिलकर ब्रह्मलोक पहुचें और ब्रह्माजी को सारी बाते विस्तार से बताकर उनसे फैसला करने का अनुरोध किया। ब्रह्माजी ने कहा प्रथम पूजनीय वहीं होगा जो जो पूरे ब्रह्माण्ड के तीन चक्कर लगाकर सर्वप्रथम लौटेगा।

समस्त देवता ब्रह्माण्ड का चक्कर लगाने के लिए अपने अपने वाहनों पर सवार होकर निकल पड़े। लेकिन, गणेशजी का वाहन मूषक था। भला मूषक पर सवार हो गणेश कैसे ब्रह्माण्ड के तीन चक्कर लगाकर सर्वप्रथम लौटकर सफल होते। लेकिन गणपति परम विद्या-बुद्धिमान एवं चतुर थे।

गणपति ने अपने वाहन मूषक पर सवार हो कर अपने माता-पित कि तीन प्रदक्षिणा पूरी की और जा पहुँचे निर्णायक ब्रह्माजी के पास। ब्रह्माजी ने जब पूछा कि वे क्यों नहीं गए ब्रह्माण्ड के चक्कर पूरे करने, तो गजाननजी ने जवाब दिया कि माता-पित में तीनों लोक, समस्त ब्रह्माण्ड, समस्त तीर्थ, समस्त देव और समस्त पुण्य विद्यमान होते हैं।

अतः जब मैंने अपने माता-पित की परिक्रमा पूरी कर ली, तो इसका तात्पर्य है कि मैंने पूरे ब्रह्माण्ड की प्रदक्षिणा पूरी कर ली। उनकी यह तर्कसंगत युक्ति स्वीकार कर ली गई और इस तरह वे सभी लोक में सर्वमान्य 'सर्वप्रथम पूज्य' माने गए।

लिंगपुराण के अनुसार (105। 15-27) – एक बार असुरों से त्रस्त देवतागणों द्वारा की गई प्रार्थना से भगवान शिव ने सुर-समुदाय को अभिष्ट वर देकर आश्वस्त किया। कुछ ही समय के पश्चात तीनो लोक के देवाधिदेव महादेव भगवान शिव का माता पार्वती के सम्मुख परब्रह्म स्वरूप

गणेश जी का प्राकट्य हुआ। सर्वविघ्नेश मोदक प्रिय गणपतिजी का जातकर्मादि संस्कार के पश्चात् भगवान शिव ने अपने पुत्र को उसका कर्तव्य समझाते हुए आशीर्वाद दिया कि जो तुम्हारी पूजा किये बिना पूजा पाठ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्मों का अनुष्ठान करेगा, उसका मंगल भी अमंगल में परिणत हो जायेगा। जो लोग फल की कामना से ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र अथवा अन्य देवताओं की भी पूजा करेंगे, किन्तु तुम्हारी पूजा नहीं करेंगे, उन्हें तुम विघ्नों द्वारा बाधा पहुँचाओगे।

जन्म की कथा भी बड़ी रोचक है।

गणेशजी की पौराणिक कथा

भगवान शिव कि अन उपस्थिति में माता पार्वती ने विचार किया कि उनका स्वयं का एक सेवक होना चाहिये, जो परम शुभ, कार्यकुशल तथा उनकी आज्ञा का सतत पालन करने में कभी विचलित न हो। इस प्रकार सोचकर माता पार्वती नें अपने मंगलमय पावनतम शरीर के मैल से अपनी माया शक्ति से बाल गणेश को उत्पन्न किया।

एक समय जब माता पार्वती मानसरोवर में स्नान कर रही थी तब उन्होंने स्नान स्थल पर कोई आ न सके इस हेतु अपनी माया से गणेश को जन्म देकर 'बाल गणेश' को पहरा देने के लिए नियुक्त कर दिया।

इसी दौरान भगवान शिव उधर आ जाते हैं। गणेशजी शिवजी को रोक कर कहते हैं कि आप उधर नहीं जा सकते हैं। यह सुनकर भगवान शिव क्रोधित हो जाते हैं और गणेश जी को रास्ते से हटने का कहते हैं किंतु गणेश जी अड़े रहते हैं तब दोनों में युद्ध हो जाता है। युद्ध के दौरान क्रोधित होकर शिवजी बाल गणेश का सिर धड़ से अलग कर देते हैं। शिव के इस कृत्य का जब पार्वती को पता चलता है तो वे विलाप और क्रोध से प्रलय का सृजन करते हुए कहती है कि तुमने मेरे पुत्र को मार डाला।

पार्वतीजी के दु:ख को देखकर शिवजी ने उपस्थित गणको आदेश देते हुवे कहा सबसे पहला जीव मिले, उसका सिर काटकर इस बालक के धड़ पर लगा दो, तो यह बालक जीवित हो उठेगा। सेवको को सबसे पहले हाथी का एक बच्चा मिला। उन्होंने उसका सिर लाकर बालक के धड़ पर लगा दिया, बालक जीवित हो उठा।

उस अवसर पर तीनो देवताओं ने उन्हें सभी लोक में अग्रपूज्यता का वर प्रदान किया और उन्हें सर्व अध्यक्ष पद पर विराजमान किया। **स्कंद पुराण**

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार (गणपतिखण्ड) –

शिव-पार्वती के विवाह होने के बाद उनकी कोई संतान नहीं हुई, तो शिवजी ने पार्वतीजी से भगवान विष्णु के शुभफलप्रद 'पुण्यक' व्रत करने को कहा पार्वती के 'पुण्यक' व्रत से भगवान विष्णु ने प्रसन्न हो कर पार्वतीजी को पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। 'पुण्यक' व्रत के प्रभाव से पार्वतीजी को एक पुत्र उत्पन्न हुवा।

पुत्र जन्म कि बात सुन कर सभी देव, ऋषि, गंधर्व आदि सब गण बालक के दर्शन हेतु पधारे। इन देव गणो में शनि महाराज भी उपस्थित हुवे। किन्तु शनिदेव ने पत्नी द्वारा दिये गये शाप के कारण बालक का दर्शन नहीं किया। परन्तु माता पार्वती के बार-बार कहने पर शनिदेव नें जेसे हि अपनी द्रष्टि शिशु बालके उपर पडी, उसी क्षण बालक गणेश का गर्दन धड़ से अलग हो गया। माता पार्वती के विलप करने पर भगवान् विष्णु पुष्पभद्रा नदी के अरण्य से एक गजशिशु का मस्तक काटकर लाये और गणेशजी के मस्तक पर लगा दिया। गजमुख लगे होने के कारण कोई गणेश कि उपेक्षा न करे इस लिये भगवान विष्णु अन्य देवताओं के साथ में तय किय कि गणेश सभी मांगलीक कार्यो में अग्रणीय पूजे जायेंगे एवं उनके पूजन के बिना कोई भी देवता पूजा ग्रहण नहीं करेंगे।

इस पर भगवान् विष्णु ने श्रेष्ठतम उपहारों से भगवान गजानन कि पूजा कि और वरदान दिया कि

सर्वाग्रे तव पूजा च मया दत्ता सुरोत्तम।
सर्वपूज्यश्च योगीन्द्रो भव वत्सेत्युवाच तम्।।

(गणपतिखं. 13। 2)

भावार्थ: 'सुरश्रेष्ठ! मैंने सबसे पहले तुम्हारी पूजा कि है, अतः वत्स! तुम सर्वपूज्य तथा योगीन्द्र हो जाओ।'

ब्रह्मवैवर्त पुराण में ही एक अन्य प्रसंगान्तर्गत पुत्रवत्सला

पार्वती ने गणेश महिमा का बखान करते हुए परशुराम से कहा –

त्वद्विधं लक्षकोटिं च हन्तुं शक्तो गणेश्वरः।
जितेन्द्रियाणां प्रवरो नहि हन्ति च मक्षिकाम्।।
तेजसा कृष्णतुल्योऽयं कृष्णांश्च गणेश्वरः।
देवाश्चान्ये कृष्णकलाः पूजास्य पुरतस्ततः।।

(ब्रह्मवैवर्तपु., गणपतिख., 44। 26-27)

भावार्थ: जितेन्द्रिय पुरूषों में श्रेष्ठ गणेश तुममें जैसे लाखों-करोड़ों जन्तुओं को मार डालने की शक्ति है; परन्तु तुमने मक्खी पर भी हाथ नहीं उठाया। श्रीकृष्ण के अंश से उत्पन्न हुआ वह गणेश तेज में श्रीकृष्ण के ही समान है। अन्य देवता श्रीकृष्ण की कलाएँ हैं। इसीसे इसकी अग्रपूजा होती है।

शास्त्रीय मतसे

शास्त्रोमें पंचदेवों की उपासना करने का विधान हैं।

आदित्यं गणनाथं च देवीं रूद्रं च केशवम्।
पंचदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।। (शब्दकल्पद्रुम)

भावार्थ: - पंचदेवों कि उपासना का ब्रह्मांड के पंचभूतों के साथ संबंध है। पंचभूत पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से बनते हैं। और पंचभूत के आधिपत्य के कारण से आदित्य, गणनाथ(गणेश), देवी, रूद्र और केशव ये पंचदेव भी पूजनीय हैं। हर एक तत्त्व का हर एक देवता स्वामी हैं-

आकाशस्याधिपो विष्णुरग्नेश्चैव महेश्वरी।
वायोः सूर्यः क्षितेरीशो जीवनस्य गणाधिपः।।

भावार्थ:- क्रम इस प्रकार हैं महाभूत अधिपति

1. क्षिति (पृथ्वी) शिव
2. अप् (जल) गणेश
3. तेज (अग्नि) शक्ति (महेश्वरी)
4. मरूत् (वायु) सूर्य (अग्नि)
5. व्योम (आकाश) विष्णु

भगवान् श्रीशिव पृथ्वी तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शिवलिंग के रुप में पार्थिव-पूजा का विधान हैं। भगवान् विष्णु के आकाश तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शब्दों द्वारा स्तुति करने का विधान हैं। भगवती देवी के अग्नि तत्त्व का अधिपति होने के कारण उनका अग्निकुण्ड में हवनादि के द्वारा पूजा करने का विधान हैं। श्रीगणेश के जलतत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी सर्वप्रथम पूजा करने का विधान हैं, क्योंकि ब्रह्मांद में सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाले जीव तत्त्व 'जल' का अधिपति होने के कारण गणेशजी ही प्रथम पूज्य के अधिकारी होते हैं।

आचार्य मनु का कथन है-

"अप एच ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्।" (मनुस्मृति 1)

भावार्थ:

इस प्रमाण से सृष्टि के आदि में एकमात्र वर्तमान जल का अधिपति गणेश हैं।

गणेश पूजन हेतु शुभ मुहूर्त

✍ चिंतन जोशी

वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार ब्रह्मांड में समय व अनंत आकाश के अतिरिक्त समस्त वस्तुएं मर्यादा युक्त हैं। जिस प्रकार समय का न ही कोई प्रारंभ है न ही कोई अंत है। अनंत आकाश की भी समय की तरह कोई मर्यादा नहीं है। इसका कहीं भी प्रारंभ या अंत नहींहोता। आधुनिक मानव ने इन दोनों तत्वों को हमेशा समझने का व अपने अनुसार इनमें भ्रमण करने का प्रयास किया हैं परन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

सामान्यतः मुहूर्त का अर्थ है किसी भी कार्य को करने के लिए सबसे शुभ समय व तिथि चयन करना। कार्य पूर्णतः फलदायक हो इसके लि, समस्त ग्रहों व अन्य ज्योतिष तत्वों का तेज इस प्रकार केन्द्रित किया जाता है कि वे दुष्प्रभावों को विफल कर देते हैं। वे मनुष्य की जन्म कुण्डली की समस्त बाधाओं को हटाने में व दुर्योगो को दबाने या घटाने में सहायक होते हैं।

शुभ मुहूर्त ग्रहो का ऎसा अनूठा संगम है कि वह कार्य करने वाले व्यक्ति को पूर्णतः सफलता की ओर अग्रस्त कर देता है।

हिन्दू धर्म में शुभ कार्य केवल शुभ मुहूर्त देखकर किए जाने का विधान हैं। इसी विधान के अनुसार श्रीगणेश चतुर्थी के दिन भगवान श्रीगणेश की स्थापना के श्रेष्ठ मुहूर्त आपकी अनुकूलता हेतु दर्शाने का प्रयास किया जा रहा हैं। हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार शुभ मुहूर्त देखकर किए गए कार्य निश्चित शुभ व सफलता देने वाले होते हैं।

श्रीगणेश चतुर्थी के लिये (19 सितंबर 2012 बुधवार)

प्रातः 6: 08 से 7:38 तक लाभ

सुबह 7: 38 से 9:08 तक अमृत

सुबह 10:38 से 12:08 तक शुभ

संध्याः 4:38 से 6:08 तक लाभ

अन्य शुभ समय

वृश्चिक लग्न में (10:36 से दोपहर 12:55 तक) तथा कुंभ लग्न में (संध्या 04:41 से संध्या 06:09 तक) भगवान श्रीगणेश प्रतिमा की स्थापना की जा सकती हैं।

क्योंकि ज्योतिष के अनुशार वृश्चिक और कुंभ दोनों स्थिर लग्न हैं। स्थिर लग्न में किया गया कोई भी शुभ कार्य स्थाई होता हैं।

विद्वानो के मतानुशार शुभ प्रारंभ यानि आधा कार्य स्वतः पूर्ण।

शुभकार्यों में सर्वप्रथम गणेशजी की पूजा क्यों होती हैं?

चिंतन जोशी

गणपति शब्द का अर्थ हैं।

गण(समूह)+पति (स्वामी) = समूह के स्वामी को सेनापति अर्थात गणपति कहते हैं। मानव शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और चार अन्तःकरण होते हैं। एवं इस शक्तिओं को जो शक्तियां संचालित करती हैं उन्हीं को चौदह देवता कहते हैं। इन सभी देवताओं के मूल प्रेरक हैं भगवान श्रीगणेश।

भगवान गणपति शब्दब्रह्म अर्थात् ओंकार के प्रतीक हैं, इनकी महत्व का यह हीं मुख्य कारण हैं।

श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ओंकार का ही व्यक्त स्वरूप गणपति देवता हैं। इसी कारण सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति कि प्रथम पूजा कि जाती हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्यक लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये पर भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य मानी गई हैं। इस सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं इसका सदीयों से भगवान गणेश जी क प्रथम पूजन करने कि परंपरा का अनुसरण करते चले आरहे हैं।

गणेश जी की ही पूजा सबसे पहले क्यों होती है, इसकी पौराणिक कथा इस प्रकार है -

पद्मपुराण के अनुसार (सृष्टिखण्ड 61। 1 से 63। 11) –

एक दिन व्यासजी के शिष्य ने अपने गुरूदेव को प्रणाम

करके प्रश्न किया कि गुरूदेव! आप मुझे देवताओं के पूजन का सुनिश्चित क्रम बतलाइये। प्रतिदिन कि पूजा में सबसे पहले किसका पूजन करना चाहिये ?

तब व्यासजी ने कहा: विघ्नों को दूर करने के लिये सर्वप्रथम गणेशजी की पूजा करनी चाहिये। पूर्वकाल में पार्वती देवी को देवताओं ने अमृत से तैयार किया हुआ एक दिव्य मोदक दिया। मोदक देखकर दोनों बालक (स्कन्द तथा गणेश) माता से माँगने लगे। तब माता ने मोदक के प्रभावों का वर्णन करते हुए कहा कि तुम दोनो में से जो धर्माचरण के द्वारा श्रेष्ठता प्राप्त करके आयेगा, उसी को मैं यह मोदक दूँगी। माता की ऐसी बात सुनकर स्कन्द मयूर पर आरूढ हो कर अल्प मुहूर्तभर में सब तीर्थों की स्न्नान कर लिया। इधर लम्बोदरधारी गणेशजी माता-पिता की परिक्रमा करके पिताजी के सम्मुख खड़े हो गये। तब पार्वतीजी ने कहा- समस्त तीर्थों में किया हुआ स्न्नान, सम्पूर्ण देवताओं को किया हुआ नमस्कार, सब यज्ञों का अनुष्ठान तथा सब प्रकार के व्रत, मन्त्र, योग और संयम का पालन- ये सभी साधन माता-पिता के पूजन के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकते।

इसलिये यह गणेश सैकड़ों पुत्रों और सैकड़ों गणों से भी बढ़कर श्रेष्ठ है। अतः देवताओं का बनाया हुआ यह मोदक मैं गणेश को ही अर्पण करती हूँ। माता-पिता की भक्ति के कारण ही गणेश जी की प्रत्येक शुभ मंगल में सबसे पहले पूजा होगी। तत्पश्चात् महादेवजी बोले- इस गणेश के ही अग्रपूजन से सम्पूर्ण देवता प्रसन्न होंजाते हैं। इस लिये तुमहें सर्वप्रथम गणेशजी की पूजा करनी चाहिये।

सरल विधि से श्री गणेश पूजन

✍ विजय ठाकुर

श्री गणेशजी की पूजा से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है

श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।

जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दुःख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।

जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऎश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग मंत्र व विधि-विधान से किया जाता हैं, इस लिये यहां दर्शाई गई पूजन विधि में अंतर होना सामान्य हैं।

सभी पाठको के मार्गदर्शन हेतु श्री गणेश जी का पूजन विधान दिया जा रहा हैं।

गणेश पूजा:

पूजन सामग्री :

कुंकुंम, केसर, सिंदूर, अवीर-गुलाल, पुष्प और माला, चालव, पान, सुपारी, पंचामृत, पंचमेवा, गंगाजल, बिलपत्र, धूप-दीप, नैवैद्य में लड्डू)लड्डू3 ,5,7, 11विषम संख्या में (या गूड अथवा मिश्री का प्रसाद लगाएं। लौंग, इलायची, नारीयल, कलश, 1मिटर लाल कपडा, बरक, इत्र, जनेऊ, पिली सरसों, इत्यादि आवश्यक सामग्रीयां।

पवित्र करण:

सबसे पहले पूजन सामग्री व गणेश प्रतिमा चित्र पवित्र करण करें

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो पि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इस मंत्र से शरीर और पूजन सामग्री पर जल छीटें इसे अंदर बाहर और बहार दोनों शुद्ध हो जाता है

आचमन:

ॐ केशवाय नमः
ॐ नारायण नमः
ॐ मध्वाये नमः
हस्तो प्रक्षल्य हर्शिकेशय नम :

आसान सुद्धि:

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्व विद्गणुनाधृताः।
त्व च धारय मा देवि पवित्र कुरू च आसनम्॥

रक्षा मंत्र:

'अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशा।
सर्वेषामवरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।
अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विनकर्तारस्ते नष्टन्तु शिवाज्ञया।'

इस मंत्र से दशों दिशाओं में पिला सरसों छिटके जिसेस समस्त भूत प्रेत बाधाओं का निवारण होता है

स्वस्ती वाचन:

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा :स्वस्ति न :पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्ता रक्षो अरिष्टनेमि :स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधात॥

इस के बाद श्री गणेश जी के मंगल पाठ करना चाहिए जो की इस प्रकार है

गणेश जी का मंगल पाठ:

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वाद्शैतानि नामानि य :पठेच्छेणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

एकाग्रचिन होकर गणेश का ध्यान करना चाहिए

श्री गणेश का ध्यान करें :

गजाननं भूतगणादि सेवितम् कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणम्। उमासुतम् शोक विनाश कारकम् नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥ ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः गणेशं ध्यायामि मंत्र का उच्चारण करें।

आह्वानं:

इस मंत्र से श्री गणेश का आहवान करे या मन ही मन में श्री गणेश जी को पधारने के लिये विनति करें। हाथमें अक्षत लेकर आहवान करें।

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सन्निधौ भव।।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः

गणेशं ध्यायामि मंत्र का उच्चारण करके अक्षते डालदें.....

इस मंत्र से श्री गणेश की मूर्ति या प्रतिमा पर हल्दी या कुमकुम से रंगे चालव डालें। यदि प्रतिमा के प्रहले से प्राण-प्रतिष्ठा हो गई हैं तो आवश्यक्ता नहीं हैं तब केवल सुपारी पर ही चालव डालें।

स्मरण:

हाथमें पुष्प लेकर श्री गणेशजी का स्मरण करें।
नमस्तस्मै गणेशाय सर्व विध्न विनाशिने॥
कार्यारंभेषु सर्वेषु पूजितो यः सुरैरपि।
सुमुखश्चैक दंतश्च कपिलो गजकर्णकः॥
लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजानन॥
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छ्रणु यादऽपि॥
विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशांतये॥
जपेद् गणपति स्तोत्रं षड्भिर्मासे फलं लभेत्।
संवंत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥
वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि सम प्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥
अभिप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लंबोदराय सकलाय जगत्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञ विभुषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः गणेशं स्मरामि मंत्र का उच्चारण करके पुष्प अर्पित करें

षोडशोपचार गणपतीपूजन:

अस्यै प्राणः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवतमचीर्य मामहेति च कश्चन॥

आसनं:

आसन समर्पित करें। यदि पहले से वस्त्र बिछाया हुवा हैं तो उस स्थान पर हल्दी या कुमकुम से रंगे अक्षत डालकर पुष्प अर्पित करें।

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम्।
आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आसनं समर्पयामि॥

यदि श्लोक पढने में कठिनाई हो तो आसन समर्पामि श्री गं गणेशाय नमः का उच्चारण करते हुवे गणेश जी के चरण धोये।

पाद्यं:

उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्यं:

आचमनीमें जल, फूल, फल, चंदन, अक्षत, दक्षिणा इत्यादि हाथ में रख कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें...

अर्घ्य गृहाण देवेश गंध पुष्पक्षतैः सह।
करुणा कुरु में देव गृहाणार्ध्यैः नमोस्तुते॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि मंत्र का उच्चारण करके अर्ध्य की सामग्रीया अर्पित करदें।

आचमन:

सर्व तीर्थ समायुक्तं सुगंधि निर्मल जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वरं॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आचमनं समर्पयामि॥

स्नानं:

गंगा च यमुना रेवा तुंगभद्रा सरस्वति।
कावेरी सहिता नद्यः सद्यः स्नार्थमर्पिता॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः स्नानं समर्पयामि

मंत्र का उच्चारण करते हुवे स्नान कराये।

पंचामृत स्नान :

तत पश्चयात पंचामृत से क्रमशः दूध, दही, घी, शहद, शक्कर से स्नान करा कर शुद्धजल या गंगाजल से उक्त मंत्र से पुनः स्वच्छ करले।

तत पश्चयात शुद्ध वस्त्र से पोछ कर प्रतिष्ठित करें।

दूध स्नान :

कामधेनु समुत्पनं सर्वेषां जीवन परम्।
पावनं यज्ञ हेतुश्च पय :स्नानार्थमर्पितम्॥

इस के स्थान पर पयः स्नानम् समर्पयामि गं गणेशाय नमः का उच्चारण करे तथा पयः के स्थान पर दूध कहें, दहीं कहें, धृतम् कहें, मधु कहें, शर्करा कहें के स्नान कराये।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
तरु पुष्प समुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् ।
मलापहारिकां दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
पयो दधि धृत चैव मधु च शर्करायुतम्।
पंचामृत मयानीतं सनानार्थ प्रतिघृहयताम॥

वस्त्रं:

पंचामृत स्नान के बाद स्वच्छ कर के वस्त्र पहनाये या समर्पित करें।

सर्व भूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृहीताम् ॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि॥

यज्ञोपवीत

ततपश्चयात निम्न मंत्र से यज्ञोपवीत पहनाये
नवमिस्तंतुभियुक्त त्रिगुणं देवतामयं।
सपबीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरम्॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः यज्ञोपवितं समर्पयामि॥

चंदन:

ततपश्चयात लाल चंदन चढाये।
श्रीखण्ड चन्दन दिव्यं केशरादि सुमनीहरम्।
विलेपनं सुश्रष्ठ चन्दनं प्रतिगृहयतम्॥ ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः कुंकुमं समर्पयामि॥

कुंकुम:

ततपश्चयात कुंकुम अवीर-गुलाल चढाये।
कुंकुम कामना दिव्यं कामना काम संभवम्।
कुंकुम नार्चितो देव गृहाण परमेश्वरम्॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः कुंकुमं समर्पयामि॥

सिंदूर :

ततपश्चयात सिंदूर चढाये।
सिंदूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिंदूरं प्रतिगृहयताम।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः सिंदूरं समर्पयामि॥

अक्षत:

ततपश्चयात हल्दी या कुंकुम से रंगे अक्षत चढाये।
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः अक्षतान् समर्पयामि॥

पुष्प :

ततपश्चयात पुष्प माला आदि चढाये।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि॥

दूर्वा:

ततपश्चयात दूर्वा चढाये।
दुर्वा करान्सह रितान मृतन्मंगल प्रदान।
आनी तांस्तव पूजार्थ गृहाण परमेश्वर॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दूर्वांकुरान समर्पयामि॥

आभूषण :

ततपश्चयात आभूषण चढाये।
अलंकारान्महादिव्यान्नानारतन विनिर्मितान।
गृहाण देव-देवेश प्रसीद परमेश्वर॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आभूषण समर्पयामि॥

इत्र:

ततपश्चयात इत्र अर्थात् सुगंधित तेल चढाये।
चम्पकाशो वकुलं मालती मोगरादिभिः।
वासितं स्निग्ध तासेलु तैलं चारु प्रगृहयातम्॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः तैलम् समर्पयामि॥

धूप :

ततपश्चयात धूप आदि जलाये।
वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः।
आध्नय सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः धूपं समर्पयामि॥

दीप:

ततपश्चयात दीप आदि जलाये।
आज्येन वर्तिना युक्तं वह्निना च प्रयोजितम् मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह॥।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य :

ततपश्चयात नैवेद्य अर्पित करें।
शर्करा खंडखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।
आहारं भक्ष्यं भोज्यं च गृहाण गणनायक।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि॥

ततपश्चयात नैवेद्य पर जल छिडके।
गं गणपतये नमः

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे पांच बार भोजन कराये.....

ॐ प्राणाय नमः।
ॐ अपानाय नमः।
ॐ व्यानाय नमः।
ॐ उदानाय नमः।
ॐ समानाय नमः।

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे जल अर्पित करें।

मध्ये पानीयं समर्पयामि।

फिर से उक्त मंत्र का पांच बार उच्चारण करते हुवे पांच बार भोजन कराये....

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे तीन बार जल अर्पित करें....

ॐ गणेशाय नमः उत्तर पोषणं समर्पयामि।
ॐ गणेशाय नमः हस्त प्रक्षालनं समर्पयामि।
ॐ गणेशाय नमः मुख प्रक्षालनं समर्पयामि।

हाथ से भोजन की गंध दूर करने हेतु चंदनयुक्त पानी अर्पित करें।

ॐ गणेशाय नमः करोद्वर्तनार्थे गंधं समर्पयामि.

मुख शुद्धि हेतु पान-सुपारी इलायची और लवंग अर्पित करें।

एलालवेंग संयुक्तं पुगीफलं समन्वितम्,
तांबुलं च मया दत्तं गृहाण गणनायक.
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः मुखवासं समर्पयामि।

दक्षिणाः

ततपश्चयात दक्षिणा अर्पित करें।
हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनंत पूण्य फलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे॥।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा:

ततपश्चयात प्रदक्षिणा करें।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः प्रदक्षिणां करोमि।

आरती:

नीराजन-आरती प्रगट कर उसमें चंदन-पुष्प लगाये कपुर प्रज्वलित करें।

चंद्रादित्यौ च धरणि विद्युदग्नि त्वमेव च।
त्वमेव सर्व ज्योतिषि आर्तीक्यं प्रतिगृह्यताम्॥
कर्पुर पूरेण मनोहरेण सुवर्ण पात्रान्तर संस्थितेन।
प्रदिप्तभासा सहगतेन नीराजनं ते परित करोमि।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नीराजनं समर्पयामि।

॥श्री गणेश आरति॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा.
माता जाकी पारवती पिता महादेवा॥ जय गणेश.....
एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी
माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी॥ जय गणेश.....
पान चढ़े फल चढ़े और चढ़े मेवा
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा॥ जय गणेश.....
अंधे को आँख देत कोढ़िन को काया
बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ जय गणेश.....
'सूर' श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा॥ जय गणेश.....

आरती के चारो और जल घुमाये फिर गणेशजी को आरती दिखाये खुद आरती लेकर हाथ धोले।
फिर दोनो हाथकी अंजलिमें पुष्प लेकर पुष्पांजलि दें।

नाना सुगंधी पुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानि च।
पुष्पांजलि प्रदानेन प्रसीद गणनायक।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पुष्पांजलि समर्पयामि।

प्रार्थना:

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लंबोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञ विभुषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते। भक्तार्तिनाशन पराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय। विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्ति प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते।

नमस्कार:

लंबोदर नमस्तुभ्यं सतत मोदक प्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

विशेष अर्घ्य:

आचमनी में जल, चावल, फूल, फल, चंदन दक्षिणा आदि अर्घ्य में ले

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तनाम भयंकर्ता त्राता भवभवार्णवात्॥
फलेन फलितं तोयं फलेन फलितं धनम्।
फलास्यर्घ्यं प्रदानेन पूर्णा सन्तु मनोरथाः॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

क्षमापन:

आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व गणनायक॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः क्षमापनं समर्पयामि॥
अनया पूज्या सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशः प्रियताम्॥

***

गणेश पूजन में कोन से फूल चढाए।

✍ चिंतन जोशी

गणेश जी को दूर्वा सर्वाधिक प्रिय है। इस लिये सफेद या हरी दूर्वा चढ़ानी चाहिए। दूर्वा की तीन या पाँच पत्ती होनी चाहिए।

गणेश जी को तुलसी छोड़कर सभी पत्र और पुष्प प्रिय हैं। गणेशजी पर तुलसी चढाना निषेध हैं।

न तुलस्या गणाधिपम् (पद्मपुराण)

भावार्थ :तुलसी से गणेशजी की पूजा कभी नहीं करनी चाहिये।

'गणेश तुलसी पत्र दुर्गा नैव तु दूर्वाया' (कार्तिक माहात्म्य)

भावार्थ :गणेशजी की तुलसी पत्र से एवं दुर्गाजी की दूर्वा पूजा नहीं करनी चाहिये।

गणेशजी की पूजा में मन्दार के लाल फूल चढ़ाने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। लाल पुष्प के अतिरिक्त पूजा में श्वेत,पीले फूल भी चढ़ाए जाते हैं।

संकटनाशन गणेशस्तोत्रम्

संकटनाशन गणेश स्तोत्रम् का प्रति दिन पाठ करने से समस्त प्रकार के संकटोका नाश होता है, श्री गणेशजी कि कृपा एवं सुख समृद्धि कि प्राप्त होती है।

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ । निर्विघ्नम् कुरु में देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ विघ्नेश्वराय वरदाय सूरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्विताय । नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमोनमस्ते ॥

स्तोत्र:

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुंत्र विनायकम् भक्तावासं स्मरे नित्यं आयुकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥
प्रथमं वक्रतुंडं च एकदंतं द्वितियकम् तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवकत्रं चतुर्थकम् ॥ २ ॥
लंबोदरं पंचमं च षष्टमं विकटमेव च सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाअष्टकम् ॥ ३ ॥
नवं भालचंद्रं च दशमं तु विनायकम् एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ ४ ॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः न च विघ्नभयं तस्य सर्व सिद्धि करं प्रभो ॥ ५ ॥
विद्यार्थि लभते विद्यां धनार्थि लभते धनम् पुत्रार्थि लभते पुत्रांमोक्षार्थि लभते गतिम् ॥ ६ ॥
जपेत्गणपतिस्तोत्रं षडभिमासैः फलं लभेत संवतसरेणसिद्धिं च लभते नात्रसंशयः ॥ ७ ॥
अष्टभ्योब्राह्मणोभ्यस्य लिखित्वा यः समर्पयेत् तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥ ८ ॥
॥ इतिश्री नारदपुराणे 'संकटनाशन गणेशस्तोत्रम्' संपूर्णम् ॥

शाप के कारण गणपति पूजन में तुलसी निषिद्ध हैं?

✍ चिंतन जोशी



तुलसी समस्त पौधों में श्रेष्ठ मानी जाती हैं। हिंदू धर्म में समस्त पूजन कर्मो में तुलसी को प्रमुखता दी जाती हैं। प्रायः सभी हिंदू मंदिरों में चरणामृत में भी तुलसी का प्रयोग होता हैं। इसके पीछे ऎसी कामना होती है कि तुलसी ग्रहण करने से तुलसी अकाल मृत्यु को हरने वाली तथा सर्व व्याधियों का नाश करने वाली हैं।

परन्तु यही पूज्य तुलसी को भगवान श्री गणेश की पूजा में निषिद्ध मानी गई हैं।

शास्त्रों में उल्लेख हैं:

तुलसीं वर्जयित्वा सर्वाण्यपि पत्रपुष्पाणि गणपतिप्रियाणि। *(आचारभूषण)*

गणेशजी को तुलसी छोड़कर सभी पत्र-पुष्प प्रिय हैं! गणपतिजी को दूर्वा अधिक प्रिय है।

इनसे सम्बद्ध ब्रह्मकल्प में एक कथा मिलती हैं

एक समय नवयौवन सम्पन्न तुलसी देवी नारायण परायण होकर तपस्या के निमित्त से तीर्थो में भ्रमण करती हुई गंगा तट पर पहुँचीं। वहाँ पर उन्होंने गणेश को देखा, जो कि तरूण युवा लग रहे थे। गणेशजी अत्यन्त सुन्दर, शुद्ध और पीताम्बर धारण किए हुए आभूषणों से विभूषित थे, गणेश कामनारहित, जितेन्द्रियों में सर्वश्रेष्ठ, योगियों के योगी थे गणेशजी वहां श्रीकृष्ण की आराधना में ध्यानरत थे। गणेशजी को देखते ही तुलसी का मन उनकी ओर आकर्षित हो गया। तब तुलसी उनका उपहास उडाने लगीं। ध्यानभंग होने पर गणेश जी ने उनसे उनका परिचय पूछा और उनके वहां आगमन का कारण जानना चाहा। गणेश जी ने कहा माता! तपस्वियों का ध्यान भंग करना सदा पापजनक और अमंगलकारी होता हैं।

शुभे! भगवान श्रीकृष्ण आपका कल्याण करें, मेरे ध्यान भंग से उत्पन्न दोष आपके लिए अमंगलकारक न हो।

इस पर तुलसी ने कहा—प्रभो! मैं धर्मात्मज की कन्या हूं और तपस्या में संलग्न हूं। मेरी यह तपस्या पति प्राप्ति के लिए हैं। अत: आप मुझसे विवाह कर लीजिए। तुलसी की यह बात सुनकर बुद्धि श्रेष्ठ गणेश जी ने उत्तर दिया हे माता! विवाह करना बडा भयंकर होता हैं, मैं ब्रम्हचारी हूं। विवाह तपस्या के लिए नाशक, मोक्षद्वार के रास्ता बंद करने वाला, भव बंधन से बंधे, संशयों का उद्गम स्थान हैं। अत: आप मेरी ओर से अपना ध्यान हटा लें और किसी अन्य को पति के रूप में तलाश करें। तब कुपित होकर तुलसी ने भगवान गणेश को शाप देते हुए कहा कि आपका विवाह अवश्य होगा। यह सुनकर शिव पुत्र गणेश ने भी तुलसी को शाप दिया देवी, तुम भी निश्चित रूप से असुरों द्वारा ग्रस्त होकर वृक्ष बन जाओगी।

इस शाप को सुनकर तुलसी ने व्यथित होकर भगवान श्री गणेश की वंदना की। तब प्रसन्न होकर गणेश जी ने तुलसी से कहा हे मनोरमे! तुम पौधों की सारभूता बनोगी और समयांतर से भगवान नारायण कि प्रिया बनोगी। सभी देवता आपसे स्नेह रखेंगे परन्तु श्रीकृष्ण के लिए आप विशेष प्रिय रहेंगी। आपकी पूजा मनुष्यों के लिए मुक्ति दायिनी होगी तथा मेरे पूजन में आप सदैव त्याज्य रहेंगी। ऎसा कहकर गणेश जी पुन: तप करने चले गए। इधर तुलसी देवी दु:खित ह्वदय से पुष्कर में जा पहुंची और निराहार रहकर तपस्या में संलग्न हो गई। तत्पश्चात गणेश के शाप से वह चिरकाल तक शंखचूड की प्रिय पत्नी बनी रहीं। जब शंखचूड शंकर जी के त्रिशूल से मृत्यु को प्राप्त हुआ तो नारायण प्रिया तुलसी का वृक्ष रूप में प्रादुर्भाव हुआ।

गणेश के चमत्कारी मंत्र

✍ चिंतन जोशी

ॐ गं गणपतये नमः ।

एसा शास्त्रोक्त वचन हैं कि गणेश जी का यह मंत्र चमत्कारिक और तत्काल फल देने वाला मंत्र हैं। इस मंत्र का पूर्ण भक्तिपूर्वक जाप करने से समस्त बाधाएं दूर होती हैं। षडाक्षर का जप आर्थिक प्रगति व समृध्दिदायक है।

ॐ वक्रतुंडाय हुम् ।

किसी के द्वारा कि गई तांत्रिक क्रिया को नष्ट करने के लिए, विविध कामनाओं कि शीघ्र पूर्ति के लिए उच्छिष्ट गणपति कि साधना किजाती हैं। उच्छिष्ट गणपति के मंत्र का जाप अक्षय भंडार प्रदान करने वाला हैं।

ॐ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा ।

आलस्य, निराशा, कलह, विघ्न दूर करने के लिए विघ्नराज रूप की आराधना का यह मंत्र जपे।

ॐ गं क्षिप्रप्रसादनाय नमः।

मंत्र जाप से कर्म बंधन, रोगनिवारण, कुबुद्धि, कुसंगति, दूर्भाग्य, से मुक्ति होती हैं। समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए हेरम्बं गणपति का मंत्र जपे।

ॐ गूं नमः।

रोजगार की प्राप्ति व आर्थिक समृध्दि प्राप्त होकर सुख सौभाग्य प्राप्त होता हैं।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गण्पत्ये वर वरदे नमः ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात।

लक्ष्मी प्राप्ति एवं व्यवसाय बाधाएं दूर करने हेतु उत्तम मानगया हैं।

ॐ गीः गूं गणपतये नमः स्वाहा।

इस मंत्र के जाप से समस्त प्रकार के विघ्नो एवं संकटो का का नाश होता हैं।

गणेश के कल्याणकारी मंत्र

गणेश मंत्र **कि** प्रति दिन एक माला मंत्रजाप अवश्य करे। दिये गये मंत्रो मे से कोई भी एक मंत्रका जाप करे।

(०१) गं ।
(०२) ग्लं ।
(०३) ग्लौं ।
(०४) श्री गणेशाय नमः ।
(०५) ॐ वरदाय नमः ।
(०६) ॐ सुमंगलाय नमः ।
(०७) ॐ चिंतामणये नमः ।
(०८) ॐ वक्रतुंडाय हुम् ।
(०९) ॐ नमो भगवते गजाननाय ।
(१०) ॐ गं गणपतये नमः ।
(११) ॐ ॐ श्री गणेशाय नमः ।

यह मंत्र के जप से व्यक्ति को जीवन में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं रेहता है।

- आर्थिक स्थिति मे सुधार होता है।
- एवं सर्व प्रकारकी रिद्धि-सिद्धि प्राप्त होती है।

ॐ श्री गं सौभाग्य गणपत्ये वर वरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा।

विवाह में आने वाले दोषो को दूर करने वालों को त्रैलोक्य मोहन गणेश मंत्र का जप करने से शीघ्र विवाह व अनुकूल जीवनसाथी की प्राप्ति होती है।

ॐ वक्रतुण्डेक द्रष्टाय क्लींहीं श्रीं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मं दशमानय स्वाहा ।

इस मंत्रों के अतिरिक्त गणपति अथर्वशीर्ष, संकटनाशक, गणेश स्त्रोत, गणेशकवच, संतान गणपति स्त्रोत, ऋणहर्ता गणपति स्त्रोत मयूरेश स्त्रोत, गणेश चालीसा का पाठ करने से गणेश जी की शीघ्र कृपा प्राप्त होती है।

ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः।

इस मंत्र के जाप से मुकदमे में सफलता प्राप्त होती हैं।

ॐ गं गणपतये सर्वविघ्न हराय सर्वाय सर्वगुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः।

वाद-विवाद, कोर्ट कचहरी में विजय प्राप्ति, शत्रु भय से छुटकारा पाने हेतु उत्तम।

ॐ नमः सिद्धिविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्न प्रशमनाय सर्व राज्य वश्य कारनाय सर्वजन सर्व स्त्री पुरुषाकर्षणाय श्री ॐ स्वाहा।

इस मंत्र के जाप को यात्रा में सफलता प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रा गणपत्ये वरद वरद सर्वजन हृदये स्तम्भय स्वाहा।

यह हरिद्रा गणेश साधना का चमत्कारी मंत्र हैं।

ॐ ग्लौं गं गणपतये नमः।

गृह कलेश निवारण एवं घर में सुखशान्ति कि प्राप्ति हेतु।

ॐ गं लक्ष्म्यौ आगच्छ आगच्छ फट्।

इस मंत्र के जाप से दरिद्रता का नाश होकर, धन प्राप्ति के प्रबल योग बनने लगते हैं।

ॐ गणेश महालक्ष्म्यै नमः।

व्यापार से सम्बन्धित बाधाएं एवं परेशानियां निवारण एवं व्यापर में निरंतर उन्नति हेतु।

ॐ गं रोग मुक्तये फट्।

भयानक असाध्य रोगों से परेशानी होने पर, उचित ईलाज कराने पर भी लाभ प्राप्त नहीं होरहा हो, तो पूर्ण विश्वास सें मंत्र का जाप करने से या जानकार व्यक्ति से जाप करवाने से धीरे-धीरे रोगी को रोग से छुटकारा मिलता हैं।

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा।

इस मंत्र के जाप से मनोकामना पूर्ति के अवसर प्राप्त होने लगते हैं।

गं गणपत्ये पुत्र वरदाय नमः।

इस मंत्र के जाप से उत्तम संतान कि प्राप्ति होती हैं।

ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः।

इस मंत्र के जाप से मुकदमे में सफलता प्राप्त होती हैं।

ॐ श्री गणेश ऋण छिन्धि वरेण्य हुं नमः फट ।

यह ऋण हर्ता मंत्र हैं। इस मंत्र का नियमित जाप करना चाहिए। इससे गणेश जी प्रसन्न होते है और साधक का ऋण चुकता होता है। कहा जाता है कि जिसके घर में एक बार भी इस मंत्र का उच्चारण हो जाता है है उसके घर में कभी भी ऋण या दरिद्रता नहीं आ सकती।

जप विधि

प्रातः स्नानादि शुद्ध होकर कुश या ऊन के आसन पर पूर्व कि और मुख होकर बैठें। सामने गणेशजी का चित्र, यंत्र या मूर्ति स्थापित करें फिर षोडशोपचार या पंचोपचार से भगवान गजानन का पूजन कर प्रथम दिन संकल्प करें। इसके बाद भगवान ग्णेशका एकाग्रचित्त से ध्यान करें। नैवेद्य में यदि संभव होतो बूंदि या बेसन के लड्डू का भोग लगाये नहीं तो गुड का भोग लगाये। साधक को गणेशजी के चित्र या मूर्ति के सम्मुख शुद्ध घी का दीपक जलाए। रोज १०८ माला का जाप कर ने से शीघ्र फल कि प्राप्ति होती हैं। यदि एक दिन में १०८ माला संभव न हो तो ५४, २७,१८ या ९ मालाओं का भी जाप किया जा सकता हैं। मंत्र जाप करने में यदि आप असमर्थ हो, तो किसी ब्राह्मण को उचित दक्षिणा देकर उनसे जाप करवाया जा सकता हैं।

गणेश पूजन से ग्रहपीडा दूर होती हैं।

✍ चिंतन जोशी

गणपति समस्त लोकोंमें सर्व प्रथम पूजेजाने वाले एकमात्र देवाता हैं। गणेश समस्त गण के गणाध्यक्षक होने के कारणा गणपति नाम से भी जाने जाते हैं।

मनुष्य को जीवन में समस्त प्रकार कि रिद्धि-सिद्धि एवं सुखो कि प्राप्ति एवं अपनी सम्स्त आध्यात्मिक-भौतिक इच्छाओं कि पूर्ति हेतु गणेश जी कि पूजा-अर्चना एवं आराधना अवश्य करनी चाहिये।
गणेशजी का पूजन अनादिकाल से चला आ रहा हैं,

इसके अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्रों के अनुशार ग्रह पीडा दूर करने हेतु भगवान गणेश कि पूजा-अर्चना करने से समस्त ग्रहो के अशुभ प्रभाव दूर होते हैं एवं शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं। इस लिये गणेश पूजाका अत्याधिक महत्व हैं।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

भगवान गणेश सूर्य तेज के समान तेजस्वी हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से सूर्य के प्रतिकूल प्रभाव का शमन होकर व्यक्ति के तेज-मान-सम्मान में वृद्धि होती हैं, उसका यश चारों और बढता हैं। पिता के सुख में वृद्धि होकर व्यक्ति का आध्यात्मिक ज्ञान बढता हैं।

भगवान गणेश चंद्र के समान शांति एवं शीतलता के प्रतिक हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से चंद्र के प्रतिकूल प्रभाव का नाश होकर व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त होती हैं। चंद्र माता का कारक ग्रह हैं इस लिये गणेशजी के पूजन से मातृसुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश मंगल के समान शिक्तिशाली एवं बलशाली हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से मंगल के अशुभ प्रभाव दूर होते हैं और व्यक्ति कि बल-शक्ति में वृद्धि होती हैं। गणेशजी के पूजन से ऋण मुक्ति मिलती हैं। व्यक्ति के साहस, बल, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं जिस कारण व्यक्ति में नेतृत्व करने कि विलक्षण शक्ति का विकास होता हैं। भाई के सुख में वृद्धि होती हैं।

गणेशजी बुद्धि और विवेक के अधिपति स्वामि बुध ग्रह के अधिपति देव हैं। अतः विद्या-बुद्धि प्राप्ति के लिए गणेश जी की आराधना अत्यंत फलदायी सिद्धो होती हैं। गणेशजी के पूजन से वाकशक्ति और तर्कशक्ति में वृद्धि होती हैं। बहन के सुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश बृहस्पति(गुरु) के समान उदार, ज्ञानी एवं बुद्धि कौशल में निपूर्ण हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से बृहस्पति(गुरु) से संबंधित पीडा दूर होती हैं और व्यक्ति के आध्यात्मिक ज्ञान का विकास होता हैं। व्यक्ति के धन और संपत्ति में वृद्धि होती हैं। पति के सुख में वृद्धि होती हैं। भगवान गणेश धन, ऐश्वर्य एवं संतान प्रदान करने वाले शुक्र के अधिपति हैं। गणेशजी का पूजन करने से शुक्र के अशुभ प्रभाव का शमन होता हैं। व्यक्ति को समस्त भौतिक सुख साधन में वृद्धि होकर व्यक्ति के सौन्दर्य में वृद्धि होती हैं। पति के सुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश शिव के पुत्र हैं। भगवान शिव शनि के गुरु हैं। गणेशजी का पूजन करने से शनि से संबंधित पीडा दूर होती हैं। भगवान गणेश हाथी के मुख एवं पुरुष शरीर युक्त होने से राहू व केतू के भी अधिपति देव हैं। गणेशजी का पूजन करने से राहू व केतू से संबंधित पीडा दूर होती हैं। इसलिये नवग्रह कि शांति मात्र भगवान गणेश के स्मरण से ही हो जाती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं हैं। भगवान गणेश में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास कि आवश्यक्ता हैं। भगवान गणेश का पूजन अर्चन करने से मनुष्य का जीवन समस्त सुखो से भर जाता है। जन्म कुंडली में चाहें होई भी ग्रह अस्त हो या नीच हो अथवा पीडित हो तो भगवान गणेश कि आराधना से सभी ग्रहो के अशुभ प्रभाव दूर होता हैं एवं शुभ फलो कि प्राप्ति होती हैं।

गणेश चतुर्थी पर चंद्र दर्शन निषेध क्यों...

✍ चिंतन जोशी

गणेश चतुर्थी पर चंद्र दर्शन निषेध होने कि पौराणिक मान्यता हैं। शास्त्रोंक्त वचन के अनुशार जो व्यक्ति इस दिन चंद्रमा को जाने-अन्जाने देख लेता हैं उसे मिथ्या कलंक लगता हैं। उस पर झूठा आरोप लगता हैं।



कथा

एक बार **जरासन्ध** के भय से भगवान कृष्ण समुद्र के बीच नगर बनाकर वहां रहने लगे। भगवान कृष्ण ने जिस नगर में निवास किया था वह स्थान आज द्वारिका के नाम से जाना जाता हैं।

उस समय द्वारिका पुरी के निवासी से प्रसन्न होकर सूर्य भगवान ने सत्रजीत यादव नामक व्यक्ति अपनी स्यमन्तक मणि वाली माला अपने गले से उतारकर दे दी।

यह मणि प्रतिदिन आठ सेर सोना प्रदान करती थी। मणि पातेही सत्रजीत यादव समृद्ध हो गया। भगवान श्री कृष्ण को जब यह बात पता चली तो उन्होंने सत्रजीत

से स्यमन्तक मणि पाने की इच्छा व्यक्त की। लेकिन सत्रजीत ने मणि श्री कृष्ण को न देकर अपने भाई प्रसेनजीत को दे दी। एक दिन प्रसेनजीत शिकार पर गया जहां एक शेर ने प्रसेनजीत को मारकर मणि ले ली। यही रीछों के राजा और रामायण काल के जामवंत ने शेर को मारकर मणि पर कब्जा कर लिया था।

कई दिनों तक प्रसेनजीत शिकार से घर न लौटा तो सत्रजीत को चिंता हुई और उसने सोचा कि श्रीकृष्ण ने ही मणि पाने के लिए प्रसेनजीत की हत्या कर दी। इस प्रकार सत्रजीत ने पुख्ता सबूत जुटाए बिना ही मिथ्या प्रचार कर दिया कि श्री कृष्ण ने प्रसेनजीत की हत्या करवा दी हैं। इस लोकनिंदा से आहत होकर और इसके निवारण के लिए श्रीकृष्ण कई दिनों तक एक वन से दूसरे वन भटक कर प्रसेनजीत को खोजते रहे और वहां उन्हें शेर द्वारा प्रसेनजीत को मार डालने और रीछ द्वारा मणि ले जाने के चिह्न मिल गए। इन्हीं चिह्नों के आधार पर श्री कृष्ण जामवंत की गुफा में जा पहुंचे जहां जामवंत की पुत्री मणि से खेल रही थी। उधर जामवंत श्री कृष्ण से मणि नहीं देने हेतु युद्ध के लिए तैयार हो गया। सात दिन तक जब श्री कृष्ण गुफा से बाहर नहीं आए तो उनके संगी साथी उन्हें मरा हुआ जानकार विलाप करते हुए द्वारिका लौट गए। २१ दिनों तक गुफा में युद्ध चलता रहा और कोई भी झुकने को तैयार नहीं था। तब जामवंत को भान हुआ कि कहीं ये वह अवतार तो नहीं जिनके दर्शन के लिए मुझे श्री रामचंद्र जी से वरदान मिला था। तब जामवंत ने अपनी पुत्री का विवाह श्री कृष्ण के साथ कर दिया और मणि दहेज में श्री कृष्ण को दे दी। उधर कृष्ण

जब मणि लेकर लौटे तो उन्होंने सत्रजीत को मणि वापस कर दी। सत्रजीत अपने किए पर लज्जित हुआ और अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह श्री कृष्ण के साथ कर दिया।

कुछ ही समय बाद अक्रूर के कहने पर ऋतु वर्मा ने सत्रजीत को मारकर मणि छीन ली। श्री कृष्ण अपने बड़े भाई बलराम के साथ उनसे युद्ध करने पहुंचे। युद्ध में जीत हासिल होने वाली थी कि ऋतु वर्मा ने मणि अक्रूर को दे दी और भाग निकला। श्री कृष्ण ने युद्ध तो जीत लिया लेकिन मणि हासिल नहीं कर सके। जब बलराम ने उनसे मणि के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मणि उनके पास नहीं। ऐसे में बलराम खिन्न होकर द्वारिका जाने की बजाय इंद्रप्रस्थ लौट गए। उधर द्वारिका में फिर चर्चा फैल गई कि श्री कृष्ण ने मणि के मोह में भाई का भी तिरस्कार कर दिया। मणि के चलते झूठे लांछनों से दुखी होकर श्री कृष्ण सोचने लगे कि ऐसा क्यों हो रहा है। तब नारद जी आए और उन्होंने कहा कि हे कृष्ण तुमने भाद्रपद में शुक्ल चतुर्थी की रात को चंद्रमा के दर्शन कियेथे और इसी कारण आपको मिथ्या कलंक झेलना पड़ रहा हैं।

श्रीकृष्ण चंद्रमा के दर्शन कि बात विस्तार पूछने पर नारदजी ने श्रीकृष्ण को कलंक वाली यह कथा बताई थी। एक बार भगवान श्रीगणेश ब्रह्मलोक से होते हुए लौट रहे थे कि चंद्रमा को गणेशजी का स्थूल शरीर और गजमुख देखकर हंसी आ गई। गणेश जी को यह अपमान सहन नहीं हुआ। उन्होंने चंद्रमा को शाप देते हुए कहा, 'पापी तूने मेरा मजाक उड़ाया हैं। आज मैं तुझे शाप देता हूं कि जो भी तेरा मुख देखेगा, वह कलंकित हो जायेगा। गणेशजी शाप सुनकर चंद्रमा बहुत दुखी हुए। गणेशजी शाप के शाप वाली बाज चंद्रमा ने समस्त देवताओं को सोनाई तो सभी देवताओं को चिंता हुई। और विचार विमर्श करने लगे कि चंद्रमा ही रात्री काल में पृथ्वी का आभूषण हैं और इसे देखे बिना पृथ्वी पर रात्री का कोई काम पूरा नहीं हो सकता। चंद्रमा को साथ लेकर सभी देवता ब्रह्माजी के पास पहुचें। देवताओं ने ब्रह्माजी को सारी घटना विस्तार से सुनाई उनकी बातें सुनकर ब्रह्माजी बोले, चंद्रमा तुमने सभी गणों के अराध्य देव शिव-पार्वती के पुत्र गणेश का अपमान किया हैं। यदि तुम गणेश के शाप से मुक्त होना चाहते हो तो श्रीगणेशजी का व्रत रखो। वे दयालु हैं, तुम्हें माफ कर देंगे। चंद्रमा गणेशजी को प्रशन्न करने के लिये कठोर व्रत-तपस्या करने लगे। भगवान गणेश चंद्रमा की कठोर तपस्या से प्रसन्न हुए और कहा वर्षभर में केवल एक दिन भाद्रपद में शुक्ल चतुर्थी की रात को जो तुम्हें देखेगा, उसे ही कोई मिथ्या कलंक लगेगा। बाकी दिन कुछ नहीं होगा। ’ केवल एक ही दिन कलंक लगने की बात सुनकर चंद्रमा समेत सभी देवताओं ने राहत की सांस ली। तब से भाद्रपद में शुक्ल चतुर्थी की रात को चंद्रमा के दर्शन का निषेध हैं।

गणेश चतुर्थी ज्योतिष की नजर में

गणपति समस्त लोकोंमें सर्व प्रथम पूजेजाने वाले एकमात्र देवाता हैं। गणेश समस्त गण के गणाध्यक्षक होने के कारणा गणपति नाम से भी जाने जाते हैं।

मनुष्य को जीवन में समस्त प्रकार कि रिद्धि-सिद्धि एवं सुखो कि प्राप्ति एवं अपनी समस्त आध्यात्मिक-भौतिक इच्छाओं कि पूर्ति हेतु गणेश जी कि पूजा-अर्चना एवं आराधना अवश्य करनी चाहिये।
गणेशजी का पूजन अनादिकाल से चला आ रहा हैं,

इसके अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्रों के अनुशार ग्रह पीडा दूर करने हेतु भगवान गणेश कि पूजा-अर्चना करने से समस्त ग्रहो के अशुभ प्रभाव दूर होते हैं एवं शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं। इस लिये गणेश पूजाका अत्याधिक महत्व हैं।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

भगवान गणेश सूर्य तेज के समान तेजस्वी हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से सूर्य के प्रतिकूल प्रभाव का शमन होकर व्यक्ति के तेज-मान-सम्मान में वृद्धि होती हैं, उसका यश चारों और बढता हैं। पिता के सुख में वृद्धि होकर व्यक्ति का आध्यात्मिक ज्ञान बढता हैं।

भगवान गणेश चंद्र के समान शांति एवं शीतलता के प्रतिक हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से चंद्र के प्रतिकूल प्रभाव का नाश होकर व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त होती हैं। चंद्र माता का कारक ग्रह हैं इस लिये गणेशजी के पूजन से मातृसुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश मंगल के समान शिक्तिशाली एवं बलशाली हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से मंगल के अशुभ प्रभाव दूर होते हैं और व्यक्ति कि बल-शक्ति में वृद्धि होती हैं। गणेशजी के पूजन से ऋण मुक्ति मिलती हैं। व्यक्ति के साहस, बल, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं जिस कारण व्यक्ति में नेतृत्व करने कि विलक्षण शक्ति का विकास होता हैं। भाई के सुख में वृद्धि होती हैं।

गणेशजी बुद्धि और विवेक के अधिपति स्वामि बुध ग्रह के अधिपति देव हैं। अतः विद्या-बुद्धि प्राप्ति के लिए गणेश जी की आराधना अत्यंत फलदायी सिद्धो होती हैं। गणेशजी के पूजन से वाकशक्ति और तर्कशक्ति में वृद्धि होती हैं। बहन के सुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश बृहस्पति(गुरु) के समान उदार, ज्ञानी एवं बुद्धि कौशल में निपूर्ण हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से बृहस्पति(गुरु) से संबंधित पीडा दूर होती हैं और व्यक्ति कें आध्यात्मिक ज्ञान का विकास होता हैं। व्यक्ति के धन और संपत्ति में वृद्धि होती हैं। पति के सुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश धन, ऐश्वर्य एवं संतान प्रदान करने वाले शुक्र के अधिपति हैं। गणेशजी का पूजन करने से शुक्र के अशुभ प्रभाव का शमन होता हैं। व्यक्ति को समस्त भौतिक सुख साधन में वृद्धि होकर व्यक्ति के सौन्दर्य में वृद्धि होती हैं। पति के सुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश शिव के पुत्र हैं। भगवान शिव शनि के गुरु हैं। गणेशजी का पूजन करने से शनि से संबंधित पीडा दूर होती हैं। भगवान गणेश हाथी के मुख एवं पुरुष शरीर युक्त होने से राहू व केतू के भी अधिपति देव हैं। गणेशजी का पूजन करने से राहू व केतू से संबंधित पीडा दूर होती हैं। इसलिये नवग्रह कि शांति मात्र भगवान गणेश के स्मरण से ही हो जाती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं हैं। भगवान गणेश में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास कि आवश्यक्ता हैं। भगवान गणेश का पूजन अर्चन करने से मनुष्य का जीवन समस्त सुखो से भर जाता है।

जन्म कुंडली में चाहें होई भी ग्रह अस्त हो या नीच हो अथवा पीडित हो तो भगवान गणेश कि आराधना से सभी ग्रहो के अशुभ प्रभाव दूर होता हैं एवं शुभ फलो कि प्राप्ति होती हैं।

जब गणेशजी ने धारण किया ज्योतिषी का रुप

✍ चिंतन जोशी

हिन्दु धर्म में सर्वप्रथन पूजनीय भगवान गणेश ने एक बार ज्योतिषी का रुप धारण कर लिया। हलांकि हम भगवान गणेश के विभिन्न रुपों से परिचित हैं, लेकिन उनके ज्योतिषीय रुप से कम ही लोग परिचित होंगे! विद्वानों का कथन हैं की भगवान गणेश ज्योतिषी रुप ब्रह्मा जी की सृष्टि संचालन में सहायता हेतु धारण किया था।

पौराणिक कथा के अनुशार एकबार एक बार राजा रिपुञ्जय ने कठिन साधना से मन तथा इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया। राजा रिपुञ्जय की साधना से सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा जी ने उन्हें सम्पूर्ण भूलोक पर प्रजापालन और नागराज वासुकि की कन्या के साथ विवाह का आशिर्वाद दिया।

ब्रह्मा जी की आज्ञा को सुनकर रिपुञ्जय ने कहा, मैं आपका यह आशिर्वाद स्वीकार करता हूँ, लेकिन मेरी एक शर्त है कि जब तक पृथ्वी पर मेरा शासन रहेगा, तब तक सभी देवता केवल स्वर्ग लोक में ही निवास करेंगे। वे पृथ्वी पर नहीं आएँगे। ब्रह्मा जी ने तथास्तु कहा। अग्नि, सूर्य, इन्द्र इत्यादि सभी देवता पृथ्वी से अंतर्ध्यान हो गये तो रिपुञ्जय ने प्रजा के कल्याण हुते उन सब देवताओं का रूप धारण कर लिया।

रिपुञ्जय को देवताओं का रुप धारण किये हुवे देखकर सभी देवता बहुत क्रोधित हो गये। राजा रिपुञ्जय के समस्त पृथ्वी पर शासन करने के कारण वह दिवोदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। रिपुञ्जय ने काशी को अपनी राजधानी बनाया। उनके शासन में अपराध का कहीं नामो-निशान नहीं था। असुर भी मनुष्य के वेश में आकर राजा की सेवा में उपस्थित हो जाते थे। सर्वत्र धर्म की प्रधानता थी।

दुसरी तरफ देवलोक में, पृथ्वी पर अपना आवास छूटने के कारण समस्त देवता और भगवान शिव अत्यधिक दुःखी थे। सभी इसी उलझन मे थे की किसी तरह राजा रिपुञ्जय के राज में कमी ढूँढकर उन्हें भूलोक के राज से हटाया जाय। इसी प्रयास में देवताओं ने रिपुञ्जय के राजकाज में कई प्रकार के विघ्न उपस्थित किए, लेकिन कोई भी विध्न-बाधा रिपुञ्जय के सामने टिक नहीं पायी। रिपुञ्जय को पथभ्रष्ट करने के लिए भगवान शिव ने क्रमश: ६४ योगिनियों, सूर्य, ब्रह्मा, शिव गण आदि को काशी भेजा। इस प्रकार क्रमशः कई देवता पृथ्वी पर आते गए और एक-एक कर सभी यहीं निवास करने लगे।

तब भगवान शिव ने अपने पुत्र श्रीगणेश को काशी जाने के लिये आदेश दिया। भगवान श्रीगणेश ने काशी में आपना आवास एक मन्दिर में बनाया तथा वे स्वयं एक वृद्ध ब्राह्मण का वेश धारण कर काशी में रहने लगे। काशी में धीरे-धीरे लोग भगवान श्रीगणेश के पास अपना भविष्य जानने के लिये आने लगे। धीरे-धीरे उनकी कीर्ति तथा प्रसिद्धि राजा रिपुञ्जय तक पहूँची तो उन्होंने वृद्ध ज्योतिषी को अपने यहाँ आमंत्रित किया।

वृद्ध ज्योतिषी के आने पर रिपुञ्जय ने उनका विशेष आदर सत्कार किया और निवेदन किया कि, इस समय मेरा मन भौतिक पदार्थों एवं सभी कर्मों से दूर हो रहा है। इसलिए आप अच्छी तरह गणना कर मेरे भविष्य का वर्णन कीजिए। तब उन वृद्ध ज्योतिषी ने रिपुञ्जय से कहा कि, "आज से १८वें दिन उत्तर दिशा की ओर से एक तेजस्वी ब्राह्मण का आगमन होगा और वे ही तुम्हें उपदेश देकर तुम्हारा भविष्य निश्चित करेंगे।

भगवान गणेश ने सम्पूर्ण काशी नगरी को अपने वश में कर लिया। राजा रिपुञ्जय से दूर रहकर भी भगवान गणेश ने उनके चित्त को राज-काज से विरक्त कर दिया। १८वें दिन भगवान विष्णु ने ब्राह्मण का वेश धारण करके अपना नाम पुण्यकीर्त, गरुड़ का नाम विनयकीर्त तथा लक्ष्मी का नाम गोमोक्ष प्रसिद्ध किया। वे स्वयं गुरु रूप में तथा उन दोनों को चेलों के रूप में लेकर काशी पहुंचे।

रिपुञ्जय को समाचार मिला तो गणेश जी की बात को स्मरण करके उसने पुण्यकीर्त का स्वागत करके उपदेश सुना। पुण्यकीर्त ने हिन्दू धर्म का खंडन करके बौद्ध धर्म का मंडन किया। प्रजा सहित राजा रिपुञ्जय बौद्ध धर्म का पालन करके अपने धर्म से पथभ्रष्ट हो गया। पुण्यकीर्त ने राजा रिपुञ्जय से कहा कि सात दिन उपरांत उसे शिवलोक चले जाना चाहिए। उससे पूर्व शिवलिंग की स्थापना भी आवश्यक है। श्रद्धालु राजा ने उसके कथन अनुसार दिवोदासेश्वर लिंग की स्थापना एवं विधि-पूर्वक पूजा-अर्चना करवाई। गरुड़ विष्णु जी के संदेशस्वरूप समस्त घटना का विस्तृत वर्णन करने शिव के सम्मुख गये। तदुपरांत रिपुञ्जय ने शिवलोक प्राप्त किया तथा देवतागण काशी में अंश रूप से रहने के पुन: अधिकारी बन गये। विद्वानों का कथन हैं की गणेश जी के ज्योतिषी रुप धारण करने से पूर्व सभी देवताओं के प्रयास निष्फल हुवे थे। इस लिए यह गणेशजी के ज्योतिषी रुप का ही चमत्कार था की राजा रिपुञ्जय ने गणेश जी की बात पर विश्वास कर ब्राह्मण रुप धारी विष्णु जी की बात पर विश्वास किया और उनके कहे अनुशार कार्य संपन्न किया।

वर्ष की विभिन्न चतुर्थी व्रत का महत्व

चिंतन जोशी

श्रावण कृष्ण चतुर्थी

संकष्टचतुर्थी व्रत

पौराणिक ग्रंथ भविष्योत्तर के अनुशार संकष्टचतुर्थी व्रत प्रत्येक मासकी कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है। यदि चतुर्थी दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो या दोनों दिन न हो तो मातृविद्धा प्रशस्यते के अनुसार पहले दिन व्रत करना चाहिये।

व्रतधारी को चाहिये कि वह प्रातःस्नानादिके पश्चात् व्रत करनेका संकल्प करके दिनभर यथा संभव मौन रहे और सायंकालमें पुनःस्नान करके लाल वस्त्र धारणकर ऋतुकाल में उपलब्ध गन्ध पुष्पादि से गणेशजीका पूजन करे,(शास्त्रोक्त मत से गणेश पूजन में तुलसी पत्र वर्जित हैं)

उसके बाद चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा का पूजन करे और अर्घ्य से पूजन कर स्वयं भोजन करे तो व्रतधारी को सुख, सौभाग्य और सम्पत्तिकी प्राप्ति होती है।

संकष्टचतुर्थी की व्रत कथा:

पौराणिक कथा के अनुशार सत्ययुग में राजा युवनाश्व के पास सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञाता ब्रह्मशर्मा नामक ब्राह्मण थे, जिनके सात पुत्र और सात पुत्रवधुएँ थीं। ब्रह्मशर्मा जब वृद्ध हुए, तब बड़ी छः बहुओंकी अपेक्षा छोटी बहूने श्वशुरकी अधिक सेवा की। तब उन्होंने संतुष्ट होकर पुत्रवधु से संकष्टहर चतुर्थीका व्रत करवाया, जिसके प्रभावसे वह मरणपर्यन्त सब प्रकारके सुख साधनोंसे संयुक्त रही।

श्रावण शुक्ल चतुर्थी

दूर्वा गणपति व्रत

पौराणिक ग्रंथ सौरपुराण के अनुशार यह व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थी को किया जाता है। गणेश जी के पूजन हेतु इसमें मध्याह्नव्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। यदि चतुर्थी दो दिन हो या दोनों दिन न हो तो मातृविद्धा प्रशस्यते के अनुसार पूर्वविद्धा व्रत करना चाहिये।

चतुर्थी दिन प्रातःस्नानादि करके सुवर्णके गणेशजी बनवावे जो एकदन्त, चतुर्भूज, गजानन और स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान हों।

इसके अतिरिक्त सोनेकी दूर्वा भी बनवावे। फिर सर्वतोभद्र बनाकर मण्डलपर कलश की स्थापन करके उसमें स्वर्णमय दूर्वा लगाकर उसपर उक्त गणेशजीका स्थापन करे।

गणेश जी को रक्तवस्त्रादिसे विभूषित करे और अनेक प्रकारके सुगान्धित पत्र, पुष्पादि अर्पण कर के पूजन करे। बेलपत्र, अपामार्ग, शमीपत्र, दूब आदी अर्पण करें। (शास्त्रोक्त मत से गणेश पूजन में तुलसी पत्र वर्जित हैं)।

स्तोत्र, आरती, स्तवन आदि का विधिवत उच्चारण कर के गणेश जी की परिक्रमा कर अपराधों के लिए गणेश्वर गणाध्यक्ष गौरीपुत्र गजानन। व्रतं सम्पूर्णातां यातु त्वत्प्रसादादिभानन ॥ का उच्चारण करते हुवे क्षमा-याचना प्रार्थना करें। इस प्रकार तीन या पाँच वर्ष तक व्रत पालन से समस्त मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

इस व्रत को करने वाले मनुष्य की संपूर्ण कामनाएँ पूरी होती हैं और अन्त में उसे गणेशजी का पद प्राप्त हो जाता है। विद्वानो का कथ हैं की त्रैलोक्य में इसके समान अन्य कोई व्रत नहीं है।

अधिक मास की गणेश चतुर्थी

व्यासजी के कथनानुशार अधिक मास में चतुर्थी की गणेश्वरके नाम से पूजा करनी चाहिए। पूजन हेतु षोडशोपचार की विधि उत्तम होती है।

चतुर्थी व्रत के लाभ:

हर महीने गणेश जी की प्रसन्नता के निमित्त व्रत करें। इसके प्रभाव से विद्यार्थी को विद्या, धनार्थी को धन प्राप्ति एवं कुमारी कन्या को सुशील वर की प्राप्ति होती है और वह सौभाग्यवती रहकर दीर्घकाल तक पति का सुखभोग करती है। विधवा द्वारा व्रत करने पर अगले जन्म में वह सधवा होती हैं एवं ऐश्वर्य-शालिनी बन कर पुत्र-पौत्रादि का सुख भोगती हुई अंत में मोक्ष पाती है। पुत्रेच्छुको पुत्र लाभ होता एवं रोगी का रोग निवारण होता है। भयभीत व्यक्ति भय रहित होता एवं बंधन में पड़ा हुआ बंधन मुक्त हो जाता है।

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी

शिवाचतुर्थीव्रत:

पौराणिक ग्रंथ भविष्यपुराण के अनुशार भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीकी ' शिवा ' संज्ञा है। इसमें स्नान, दान, जप और उपवास करनेसे सौगुना प्राप्त फल होता है। स्त्रियाँ यदि इस दिन गुड़, घी, लवण और अपूपादिसे अपने सास श्वशुर या माँ आदिको तृप्त करे तो उनके सौभाग्यकी वृद्धि होती है।

श्री गणेश की प्राकट्य तिथि होने के कारण भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी भगवान गुणेश की वरदायक तिथि अत्याधिक प्रख्यात हुई। उस दिन मध्याह्न काल में भगवान गणेश की प्रतिमा का श्रद्धा-भक्तिपूर्ण पूजन कर गणेश जी के स्मरण, चिंतन एवं नाम-जप का अद्‌भुत माहात्म्य है। शास्त्रों में उल्लेख हैं की गणेश चतुर्थी का पुण्यमय एवं अत्यंत फलप्रदायिनी है। स्वयं ब्रह्मा जी ने अपने मुखारविन्द से इस तिथि का माहत्य बढाते हुवे कहा है कि इस चतुर्थी व्रत का निरूपण एवं माहात्म्य की संपूर्ण महिमा वखानना शक्य नहीं।

भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी

बहुला चतुर्थी व्रत

भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी बहुला चौथ या चतुर्थी बहुला के नाम से भी प्रसिद्ध है।

हिन्दु मान्यताओं के अनुशार भाद्रपद मास की कृष्ण चतुर्थी के दिन पुत्रवती स्त्रियां अपने पुत्रों की कुशलता एवं मंगलकामना के निमित्त बहुला व्रत रखती हैं। लेकिन कुछ विद्वानो का मत हैं की बहुला चतुर्थी सही मायनों में गो-माता की पूजा एवं वचन पालन की प्रेरणा देने वाला पर्व है।

जिस प्रकार मां की तरह गो-माता अपना दूध पिलाकर हम सबको पालती है, इस लिए हमें अत:मन में उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखकर ही यह व्रत करना चाहिए। यह व्रत संतान सुख का देनेवाला तथा ऐश्वर्य को बढाने वाला है।

पारंपरिक रूप से इस दिन व्रत को करने वाली स्त्रीयां इस पर्व के दिन गाय का दूध एवं उससे निर्मित कोई पदार्थ नहीं खाती हैं। क्योकी, इस तिथि में गाय के दूध पर केवल उसके बछडे का अधिकार माना जाता है।

दिन भर उपवास रखने के बाद सायंकाल बछडे सहित गौ की पूजा की जाती हैं। कुल्हड में खाने की जो सामग्री को रखकर गाय को भोग लगाया जाता है, बाद में स्त्रीयां उसी को प्रसाद के रूप में ग्रहण करती है। कई जगय इस दिन जौ के सत्तू तथा गुड का भोग भी लगाकर खाया जाता है।

बहुलाचतुर्थी के व्रत से यह प्रेरणा मिलती है हमें हमेंशा सत्य के साथ-साथ अपने कर्तव्य एवं वचनों का सदा पालन होना चाहिए।

विद्वानो के मतानुशार भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को बहुलासहित गणेश की गंध, पुष्प, माला और दूर्वा आदि के द्वारा विधि-विधान से पूजा कर परिक्रमा करनी चाहिए। सामर्थ्य के अनुसार दान-पुण्य करें। दान करने की स्थिति न हो तो बहुला गो माता कि प्रतिमा को प्रणाम कर उसका विसर्जन कर दें। इस प्रकार पाँच, दस या सोलह वर्षों तक इस व्रत का पालन करके उद्यापन करें। उस समय दूध देने वाली स्वस्थ गाय का दान करना चाहिए।

आश्विन कृष्ण चतुर्थी

आश्विन कृष्ण चतुर्थीको व्रत हो और उसी दिन माता - पिता आदिका श्राद्ध भी करना हो तो विद्वानो के मतानुशार दिनमें श्राद्ध करके ब्राह्मणोंको भोजन करा दे और अपने हिस्सेके भोजनको सूँघकर गौ को खिला दे। रात्रिमें चन्द्रोदयके बाद स्वयं भोजन करे।

व्रत कथा:

पौराणिक कथा के अनुशार एक बार बाणासुरकी पुत्री ऊषाको स्वप्न में कृष्ण पौत्र अनिरुद्धका दर्शन हुआ। ऊषाको उनके प्रत्यक्ष दर्शनकी अभिलाषा हुई और उसने चित्रलेखाके द्वारा अनिरुद्धको अपने घर बुला लिया। इससे अनिरुद्धकी माताको बड़ा कष्ट हुआ। इस संकटको टालनेके लिये माताने व्रत किया, तब इस व्रतके प्रभावसे ऊषाके यहाँ छिपे हुए अनिरुद्धका पता लग गया और ऊषा तथा अनिरुद्ध द्वारका आ गये।

आश्विन शुक्ल चतुर्थी

आश्विन शुक्ल चतुर्थी नवरात्र में पड़ने के कारण मां भगवती के पूजन के साथ रात्री जागरण करने का विशेष महत्व हैं एवं इस दिन गणेश जी का पुरुषसूक्त द्वारा षोडशोपचार पूजन करके भक्तिपूर्वक पूजा का विशेष माहात्म्य है।

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी

कृच्छ्र चतुर्थी व्रत:

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी की कृच्छ्र चतुर्थी कहा जाता है।

पौराणिक ग्रंथ स्कन्दपुराण में उल्लेख हैं की कृच्छ्रचतुर्थी व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीसे आरम्भ होकर प्रत्येक चतुर्थीको वर्षपर्यन्त करके फिर दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ष में करनेसे चार वर्षमें पूर्ण होता है।

कृच्छ्रचतुर्थी व्रत की विधि यह है कि पहले वर्षमें (मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी को) प्रातःस्नानके पश्चात् व्रतका नियम ग्रहण करके गणेशजीका यथाविधि पूजन करे। नैवेद्यमें लड्डू तिलकुटा, जौका मँडका और सुहाली अर्पण करके इस मंत्र का उच्चारण करें..

त्वत्प्रसादेन देवेश व्रतं वर्षचतुष्टयम्।
निर्विघ्नेन तु मे यातु प्रमाणं मूषकध्वज ॥
संसारार्णवदुस्तारं सर्वविघ्नसमाकुलम्।
तस्माद् दीनं जगन्नाथ त्राहि मां गणनायक ॥

प्रार्थना करके एक बार परिमित भोजन करे। इस प्रकार प्रत्येक चतुर्थीको करता रहकर दूसरे वर्ष उसी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको पुनः यथापूर्व नियम ग्रहण, व्रत और पूजा करके फक्त (रात्रिमें एक बार) भोजन करे। इसी प्रकार प्रत्येक चतुर्थीको वर्षपर्यन्त करके तीसरे वर्ष फिर मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको व्रत नियम और पूजा करके अयाचित (अर्थात बिना माँगे जो कुछ जितना मिले उसीका एक बार) भोजन करे।

इस प्रकार एक वर्ष तक प्रत्येक चतुर्थीको व्रत करके चौथे वर्षमें उसी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको नियम ग्रहण, व्रत संकल्प और पूजनादि करके निराहार उपवास करे। इस प्रकार वर्षपर्यन्त प्रत्येक चतुर्थीको व्रत करके चौथा वर्ष समाप्त होनेपर सफेद कमलपर ताँबेका कलश स्थापन करके सुवर्णके गणेशजीका पूजन करे। सवत्सा गौका दान करे, हवन करे और चौबीस सपत्नीक ब्राह्मणोंको भोजन करवाकर वस्त्राभूषणादि देकर स्वयं भोजन करे तो

इस व्रतके करनेसे सब प्रकारके विघ्न दूर हो जाते हैं और व्रती को सब प्रकारकी सम्पत्ति प्राप्त होती है।

वरचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ स्कन्दपुराण में उल्लेख हैं की यह व्रत कृच्छ्रचतुर्थीके समान यह व्रत भी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीसे आरम्भ होकर चार वर्षमें पूर्ण होता है।

प्रथम वर्षमें प्रत्येक चतुर्थीको दिनार्द्धके समय एक बार अलोन (बिना नमक का) भोजन, दूसरे वर्षमें नक्त (रात्रि) भोजन, तीसरेमें अयाचित भोजन और चौथेमें उपवास करके यथापूर्व समाप्त करे। यह व्रत सब प्रकारकी अर्थसिद्धि देने वाला है।

परिमित भोजनके विषयमें कहीं पर 32 ग्रास और किसीने 29 ग्रास बतलाये हैं।

स्मृत्यन्तर में उल्लेख हैं

अष्टौ ग्रासा मुनेर्भक्ष्याः षोडशारण्यवासिनः।
द्वात्रिंशद् गृहस्थया परिमितं ब्रह्मचारिणः ॥

अर्थात: मुनिको आठ, वनवासियोंको सोलह, गृहस्थोंको बत्तीस और ब्रह्मचारियोंको अपरिमित (यथारुचि) ग्रास भोजन करनेको कहा गया है।

ग्रासका प्रमाण है एक आँवलेके बराबर अथवा जितना सुगमतासे मुँहमें जा सके, उतना एक ग्रास होता है। न्यून भोजनके लिये (याज्ञवल्क्यने) तीन ग्रास नियत किये हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी

चिंतामणी चतुर्थी व्रत:

मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी को चिंतामणी चतुर्थी के नाम से जाना जाता हैं। विद्वानो के कथनानुशार इस दिन पूरा दिन केवल पानी पिकर उपवास किया जाता हैं। रात्री के समय चन्द्रोदय के बाद कलश पर श्रीचिंतामणी गणेश की स्थापना कर उसका विधि-वत पूजन करने का विधान हैं। नैवेद्य में मोदक का भोग लगाये।

पौष कृष्ण चतुर्थी

संकष्टचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ भविष्योत्तर के अनुशार पौष कृष्ण चतुर्थी को गणपति स्मरणपूर्वक प्रातःस्नानादि नित्यकर्म करनेके पश्चात् संकल्प करके दिनभर मौन रहे। रात्रिमें पुनः स्नान करके गणपति - पूजनके पश्चात् चन्द्रोदयके बाद चन्द्रमाका पूजन करके अर्घ्य दे, फिर भोजन करने का विधान बताया गया हैं।

पौष शुक्ल चतुर्थी

पौष शुक्ल व्रत विधि पूर्वक करने वाले मनुष्य को धन-संपत्ति का अभाव नहीं रहता। उसी सभी प्रकार के सुख सौभाग्य की प्राप्ति होती हैं।

माघ शुक्ल चतुर्थी

शान्तिचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ भविष्यपुराण के अनुशार माघ शुक्ल चतुर्थीको गणेशजीका पूजन करके घीमें सने हुए गुड़के पूआ और लवणके पदार्थ अर्पण करे और गुरुदेवकी पूजा करके उनको गुड, लवण और घी दे तो इस व्रतसे सब प्रकारकी स्थिर शान्ति प्राप्त होती है।

अंगारकचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ मत्स्यपुराण के अनुशार यदि माघ शुक्ल चतुर्थीको मंगलवार हो तो उस दिन प्रातःस्नानके पहले शरीरमें मिट्टी लगाकर शुद्ध स्नान करे, लाल धोती पहने, वस्त्राअभूषण आदि से सुसज्जित धारण करे और उत्तराभिमुख बैठकर 'अग्निमूर्द्धा' मन्त्रका जप करे। फिर भूमिको गोबरसे लीपकर अङ्गरकाय भौमाय नमः का जप करे। फिर उसपर लाल चन्दनका अष्टदल बनाये तथा उसकी पूर्वादि चारों दिशाओंमें भक्ष्य भोजन और चावलोंसे भरे हुए चार करवे रख कर गन्धाक्षतादिसे पूजन करके। दान में कपिला गौ और लाल रंगका अतीव सौम्य धुरंधर

बैल देना और साथमें शय्या देना सहस्त्रगुण फल देने वाला होता है।

सुखचतुर्थी व्रतः

पौराणिक ग्रंथ भविष्यपुराण के अनुशार

चतुर्थी तु चतुर्थी तु यदाङ्गारकसंयुता।
चतुर्थ्यां तु चतुर्थ्यां तु विधानं श्रृणु याद्दशम् ॥

माघ शुक्ल चतुर्थीको यदि मंगलवार हो तो लाल वर्णके गन्ध, अक्षत और पुष्प, नैवेद्यसे गणेशजीका पूजन करके उपवास करे। इस प्रकार चार-चार चतुर्थी (माघ, वैशाख, भाद्रपद और पौष) का एक वर्ष व्रत करे तो सब प्रकारके सुख प्राप्त होते हैं। प्रत्येक चतुर्थीको भौमवार होना आवश्यक है।

गणेशव्रत

पौराणिक ग्रंथ भविष्यपुराण के अनुशार माघ शुक्ल पूर्वविद्धा चतुर्थीको प्रातः स्त्रानादि करके संकल्प करके वेदीपर लाल वस्त्र बिछाये। लाल अक्षतोंका अष्टदल बनाकर उसपर सिन्दूरचर्चित गणेशजीको स्थापित करे। स्वयं लाल धोती पहनकर लाल वर्णके फल पुष्पादिसे षोडशोपचार पूजन करे। नैवेद्यमें (भिगोकर छीली हुई) हल्दी, गुड, शक्कर और घी इनको मिलाकर भोग लगाये और नक्तव्रत (रात्रिमें एक बार भोजन करे तो सम्पूर्ण अभीष्ट सिद्ध होते हैं।

माघ कृष्ण चतुर्थी

वक्रतुण्डचतुर्थी

पौराणिक ग्रंथ भविष्योत्तर के अनुशार माघ कृष्ण चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थीको वक्रतुण्डचतुर्थी कहते हैं। इस व्रतका आरम्भ संकल्प करके करे। सायंकालमें गणेशजीका और चन्द्रोदयके समय चन्द्रका पूजन करके अर्घ्य दे। इस व्रतको माघसे आरम्भ करके हर महीनेमें करे तो संकटका नाश हो जाता है।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी

ढुण्ढिराज व्रतः

फाल्गुन मास की चतुर्थी को मंगलदायक ढुण्ढिराज व्रत किया जाता है। चतुर्थी के दिन व्रत-उपवास के साथ गणेशजी की सोने की मूर्ति बनवाकर उसकी श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पूजा की जाति हैं। गणेशजी को प्रसन्न करने के लिए उस दिन तिल से ही दान, होम, पूजन आदि किये जाते हैं। उस दिन तिल के पीठे से ब्राह्मणों को भोजन कराकर व्रती स्वयं भी भोजन करते हैं। इस व्रत के प्रभाव से समस्त सम्पदाओं की वृद्धि होती है और मनुष्य गणेशजी की कृपा से ही सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

मत्स्यपुराण के अनुसार फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी को मनोरथ चतुर्थी कहते हैं। पूजनोपरान्त नक्तव्रत का विधान है। इस प्रकार बारहों महीने की प्रत्येक शुक्ल चतुर्थी को व्रत करते हुए वर्षभर के बाद उस स्वर्णमूर्ति का दान करने से मनोरथ सिद्ध होते हैं। अग्निपुराण में इसको अविघ्ना चतुर्थी कहां गया है।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी

फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्थी को तिल चतुर्थी भी कहां जाता हैं

चैत्र कृष्ण चतुर्थी

चैत्र मास की चतुर्थी को वासुदेवस्वरूप भगवान श्रीगणेश का विधिपूर्वक पूजन कर ब्राह्मण को दक्षिणा के रुप में सुवर्ण देने पर मनुष्य को संपूर्ण देवताओं से वंदित हो जाता हैं और वह श्री विष्णु लोक को प्राप्त करता है।

कथाः

पौराणिक कथा के अनुशार प्राचीन कालमें मयूरध्वज नामका राजा बड़ा प्रभावशाली और धर्मज्ञ था। एक बार उसका पुत्र कहीं खो गया और बहुत अनुसंधान करनेपर भी न मिला। तब मन्त्रिपुत्रकी धर्मवती स्त्रीके अनुरोधसे राजाके सम्पूर्ण परिवाने चैत्र कृष्ण चतुर्थीका बड़े समारोहसे यथाविधि व्रत किया। तब भगवान गणेशजीकी कृपासे राजपुत्र आ गया और उसने मयूरध्वजकी आजीवन सेवा की।

वैशाख कृष्ण चतुर्थी

वैशाख मास की चतुर्थी को संकष्टी गणेश का पूजा कर ब्राह्मणों को शंख का दान करना चाहिए। इसके प्रभाव से मनुष्य समस्त लोक में कल्पों तक सुख प्राप्त करता है।

वैशाख शुक्ल चतुर्थी

वैशाख मास की कृष्ण चतुर्थी को श्रीकृष्णपिंगाक्ष गणपति का पूजन किया जाता हैं।

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी

संकष्टचतुर्थीव्रत:

पौराणुक ग्रंथ भविष्योत्तर के अनुशार ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थीको, प्रातःस्नानादि नित्यकर्म करके व्रतके संकल्पसे दिनभर मौन रहे। सायंकालमें पुनः स्नान करके गणेशजीका और चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा का पूजन करे तथा शंखमें दूध, दूर्वा, सुपारी आदि से विधिवत पूजन करें। वायन दान करके भोजन करे।

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी

ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को प्रद्मरूपी गणेश की पूजा कर ब्राह्मणों को फल-मूल का दान करने से व्रतधारी को स्वर्गलोक प्राप्त होते हैं।

आषाढ़ चतुर्थी

आषाढ़ मास की चतुर्थी को अनिरुद्धस्वरूप गणेश का विधिपूर्वक पूजन करके संन्यासियों को तूंबी का पात्र दान करना चाहिए। इस व्रत को करने वाला मनुष्य को मनोवांछित फल प्राप्त होते है।

चतुर्थी के दिन मनुष्य श्रद्धा-भक्तिपूर्वक मंगलमूर्ति गणेश का विधिवत पूजन कर एसा उर्लभ फल प्राप्त कर लेता है, जो देव समुदाय के लिए भी अप्राप्य है।

नोट: आपकी अनुकूलता हेतु गणेश पूजन की सरल विधि इस अंक में उपलब्ध करवाई गई हैं। कृप्या उस विधि से पूजन करने से पूर्व किसी जानकार गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श अवश्य करलें। क्योकि प्रांतिय व क्षेत्रिय पूजन पद्धति में भिन्नता होने के कारण पूजन विधि में भिन्नता संभव हैं। उपलब्ध करवाई गई पूजन पद्धति को सरल से सरल बनाकर केवल आपके मर्गदर्शन के उद्देश्य से प्रदान की गई हैं।

विशेष सुझाव: जो लोग सुवर्ण मूर्ति बनवाने या दान करने की क्षमता न हो तो वर्णक (अर्थात हल्दी चूर्ण) से ही गणपति की प्रतिमा बना कर पूजन कर सकते हैं या दान कर सकते हैं।

मनोवांछित फलो कि प्राप्ति हेतु सिद्धि प्रद गणपति स्तोत्र

✍ चिंतन जोशी



प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करने से मनोवांछित फल शीघ्र प्राप्त होते हैं।

मनोवांछित फल प्राप्त करने हेतु गणेशजी के चित्र या मूर्ति के सामने मंत्र जाप कर सकते हैं। पूर्ण श्रद्धा एवं पूर्ण विश्वास के साथ मनोवांछित फल प्रदान करने वाले इस स्तोत्र का प्रतिदिन कम से कम 21 बार पाठ अवश्य करें।

अधिकस्य अधिकं फलम्।

जप जितना अधिक हो सके उतना अच्छा है। यदि मंत्र अधिक बार जाप कर सकें तो श्रेष्ठ।

प्रातः एवं सायंकाल दोनों समय करें, फल शीघ्र प्राप्त होता है।

कामना पूर्ण होने के पश्चयात भी नियमित स्त्रोत ला पाठ करते रहना चाहिए। कुछ एक विशेष परिस्थिति में पूर्व जन्म के संचित कर्म स्वरूप प्रारब्ध की प्रबलता के कारण मनोवांछित फल की प्राप्ति या तो देरी संभव हैं!

मनोवांछित फल की प्राप्ति के अभाव में योग्य विद्वान की सलाह लेकर मार्गदर्शन प्राप्त करना उचित होगा। अविश्वास व कुशंका करके आराध्य के प्रति अश्रद्धा व्यक्त करने से व्यक्ति को प्रतिकूल प्ररिणाम हि प्राप्त होते हैं। शास्त्रोक्त वचन हैं कि भगवान (इष्ट) कि आराधना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

मंत्र:- *गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः। द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः॥*

विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः। द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्॥

विश्वं तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित्। (पद्म पु. पृ. 61।31-33)

भावार्थ: गणपति, विघ्नराज, लम्बतुण्ड, गजानन, द्वैमातुर, हेरम्ब, एकदन्त, गणाधिप, विनायक, चारुकर्ण, पशुपाल और भवात्मज- गणेशजी के यह बारह नाम हैं। जो व्यक्ति प्रातःकाल उठकर इनका नियमित पाठ करता हैं, संपूर्ण विश्व उनके वश में हो जाता हैं, तथा उसे जीवन में कभी विघ्न का सामना नहीं करना पड़ता।

गणेश पूजन से वास्तु दोष निवारण

✍ चिंतन जोशी



हिंदू संस्कृति में भगवान गणेश सर्व विघ्न विनाशक माना हैं। इसी कारण गणपति जी का पूजन किसी भी व्रत अनुष्ठान में सर्व प्रथम किया जाता हैं। भवन में वास्तु पूजन करते समय भी गणपति जी को प्रथमपूजा जाता हैं। जिस घर में नियमित गणपति जी का विधि विधान से पूजन होता हैं, वहां सुख-समृद्धि एवं रिद्धि-सिद्धि का निवास होता हैं।

गणेश प्रतिमा (मूर्ति) की स्थापना भवन के मुख्य द्वार के ऊपर अंदर-बहार दोनो और लगाने से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

गणेश प्रतिमा (मूर्ति) की पूजा घरमें स्थापना करने पर उन्हें सिंदूर चढाने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं।

भवन में द्वारवेध हो, अर्थात भवन के मुख्य द्वार के सामने वृक्ष, मंदिर, स्तंभ आदि द्वार में प्रवेश करने वाली उर्जा हेतु बाधक होने पर वास्तु में उसे द्वारवेध माना जाता हैं। द्वारवेध होने पर वहां रहने वालों में उच्चाटन होता हैं। ऐसे में भवन के मुख्य द्वार पर गणेशजी की बैठी हुई प्रतिमा (मूर्ति) लगाने से द्वारवेध का निवारण होता हैं। लगानी चाहिए किंतु उसका आकार 11 अंगुल से अधिक नहीं होना चाहिए।

पूजा स्थानमें पूजन के लिए गणेश जी की एक से अधिक प्रतिमा (मूर्ति) रखना वर्जित हैं।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नवग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण करता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर मां महा सदा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)-धैरीय लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारत्मन शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षाहोती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगड सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को **सर्व कार्य सिद्धि कवच** देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- http://gk.yolasite.com/ and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

गणेश वाहन मूषक केसे बना

समेरू पर्वत पर सौमरि ऋषि का आश्रम था। उनकी अत्यंत रूपवान तथा पतिव्रता पत्नी का नाम मनोमयी था। एक दिन ऋषिवर लकड़ी लेने के लिए वन में चले गए। उनके जाने के पश्चयात मनोमयी गृहकार्य में व्यस्त हो गईं। उसी समय एक दुष्ट कौंच नामक गंधर्व वहां आया। जब कौंच ने लावव्यमयी मनोमयी को देखा, तो उसके भीतर काम जागृत होगया एवं वह व्याकुल हो गया। कौंच ने मनोमयी का हाथ पकड़ लिया। रोती व कांपती हुई मनोमयी उससे दया की भीख मांगने लगी। उसी समय वहा सौभरि ऋषि आ गए।

उन्हें गंधर्व को श्राप देते हुए कहा, तुमने चोर की भांति मेरी सहधर्मिनी का हाथ पकड़ा हैं, इस कारण तुम अबसे मूषक होकर धरती के नीचे और चोरी करके अपना पेट भरोगे।' ऋषि का श्राप सुनकर गंधर्व ने ऋषि से प्रार्थना की- हे ऋषिवर, अविवेक के कारण मैंने आपकी पत्नी के हाथ का स्पर्श किया। मुझे क्षमा कर दें।

ऋषि बोले: कौंच! मेरा श्राप व्यर्थ नहीं होगा। तथापि द्वापर में महर्षि पराशर के यहां गणपति देव गजरूप में प्रकट होंगे। तब तुम उनका वाहन बन जाओगे। इसके पश्चयात तुम्हारा कल्याण होगा तथा देवगण भी तुम्हारा सम्मान करेंगे।

सिद्धि विनायक व्रत विधान

✍ चिंतन जोशी

सिद्धि विनायक व्रत भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को ही किया जाता है। शास्त्रोक्त मान्यता के अनुशार दिन दोपहर में गणेशजी का जन्म हुआ था। इसीलिए इस चतुर्थी को विनायक चतुर्थी, सिद्धिविनायक चतुर्थी और श्रीगणेश चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। इस लिये पौराणिक काल से ही इस तिथि को गणेशोत्सव या गणेश जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता हैं।

वैसे तो प्रत्येक मास की चतुर्थी को गणेशजी का व्रत होता है। लेकिन भाद्रपद के चतुर्थि व्रत का विशेष माहात्म्य है। ऎसी मान्यता हैं की इस दिन जो श्रधालु व्रत, उपवास और दान आदि शुभ कार्य किया जाता है, श्रीगणेश की कृपा से सौ गुना फल प्राप्त हो जाता हैं। व्यक्ति को श्री विनायक चतुर्थी करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

शास्त्रोक्त विधि-विधान से श्री गणेशजी का पूजन व व्रत इस प्रकार करना अत्यंत लाभप्रद होता हैं।

विधि

- प्रातःकाल स्नानआदि नित्यकर्म से शीघ्र निवृत्त हो कर। अपने सामर्थ्य के अनुसार पूर्ण भक्ति भाव से
- भगवान गणेश की सोने, चांदी, तांबे, पीतल या मिट्टी से बनी प्रतिमा स्थापित करें। मूर्ति को षोड़शोपचार पूजन-आरती आदि से विधि-वत पूजन करें।
- गणेशजी की मूर्ति पर सिंदूर चढ़ाएं।
- गणेशजी का मंत्र बोलते हुए 21 दुर्वा दल चढ़ाएं।
- श्री गणेशजी को लड्डुओं का भोग लगाएं।
- ब्राह्मण भोजन कराएं और ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करने के पश्चात् संध्या के समय स्वयं भोजन ग्रहण करें।
- इस तरह पूजन करने से भगवान श्रीगणेश अति प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों की सकल इच्छाओं की पूर्ति करते हैं।

संकष्टहर चतुर्थी व्रत का प्रारंभ कब हुवा

संकष्टहर चतुदर्शी कथाः भारद्वाज मुनि और पृथ्वी के पुत्र मंगल की कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर माघ मास के कृष्ण पक्ष में चतुर्थी तिथि को गणपति ने उनको दर्शन दिये थे।

गजानन के वरदान के फलस्वरूप मंगल कुमार को इस दिन मंगल ग्रह के रूप में सौर मण्डल में स्थान प्राप्त हुवाथा। मंगल कुमार को गजानन से यह भी वरदान मिला कि माघ कृष्ण पक्ष की चतुदर्शी जिसे संकष्टहर चतुर्थी के नाम से जाना जाता हैं उस दिन जो भी व्यक्ति गणपतिजी का व्रत रखेगा उसके सभी प्रकार के कष्ट एवं विघ्न समाप्त हो जाएंगे।

एक अन्य कथा के अनुसार भगवान शंकर ने गणपतिजी से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था कि माघ कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को चन्द्रमा मेरे सिर से उतरकर गणेश के सिर पर शोभायमान होगा। इस दिन गणेश जी की उपासना और व्रत त्रि-ताप (तीनो प्रकार के ताप) का हरण करने वाला होगा। इस तिथि को जो व्यक्ति श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर विधि-विधान से गणेश जी की पूजा करेगा उसे मनोवांछित फल कि प्राप्ति होगी।



श्री राम शलाका प्रश्नावली

श्री रामश्लाका प्रश्नावली की महिमा स्वयं सिद्ध हैं। यदि आप किसी कार्य को करने या नहीं करने को लेकर असमंजस या उलझन में हो तो विद्वानों के मतानुशार श्री रामश्लाका प्रश्नावली के माध्यम से आपके उलझे प्रश्नों का उत्तर सरलता से एवं स्टिक प्राप्त होता हैं। इसमें जरा भी संशय नहीं हैं।

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रें	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जै	इ	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	हुँ	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह्व	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	जि	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	मि	सम	रि	ग	द	न	ख	म	खि	जि	नि	त	जं
सिं	मु	न	न	कौ	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ब	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तू	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	र	र	स	हिं	र	त	न	ख	ा	ा	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	जा	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

विधि-श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान कर अपने प्रश्न को मन में दोहरायें। फिर ऊपर दी गई सारणी में से किसी एक अक्षर पर अंगुली रखें। अब उससे अगले अक्षर से क्रमशः नौवां अक्षर को लिखते जायें जब तक पुनः उसी जगह नहीं पहुँच जायें। इस प्रकार एक चौपाई बनेगी, जो अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी।

यहां हमने आपकी अनुकूलता हेतु नौवे अक्षर के कोष्टक को एक समान रंग में रंगने का प्रयास किया हैं जिससे आपको हर नौवे अक्षरको गिनती करने की आवश्यक्ता न रहें आप सीधे एक समान रंगो के कोष्टक में लीखे अक्षरोको मिलाले/लिख ले और जो चौपाई बने उस चौपाई को भी देखने में आपको आसानी हो इस उद्देश्य से उसी रंग में रंगने का प्रयास किया हैं।

1 सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।

फलः -प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

यह चौपाई बालकाण्ड में श्रीसीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरीजी ने श्रीसीताजी को आशीर्वाद दिया है।

2 प्रबिसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।

फलः-भगवान् का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमानजी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

3 उघरें अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।

फलः-इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में सन्देह है।

यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।

4 बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।

फलः-खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य की सफलता में सन्देह है।

यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।

5 होइ है सोई जो राम रचि राखा। को करि तरक बढ़ावहिं साषा।।

फलः-कार्य होने में सन्देह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है।

6 मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू।।

फलः-प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

यह चौपाई बालकाण्ड में संत-समाजरुपी तीर्थ के वर्णन में है।

7 गरल सुधा रिपु करय मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

फलः-प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

यह चौपाई श्रीहनुमान् जी के लंका प्रवेश करने के समय की है।

8 बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काह न धीरा।।

फलः-कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।

यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावन की मृत्यु के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।

9 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। राम लखनु सुनि भए सुखारे।।

फलः-प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

यह चौपाई बालकाण्ड पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्रजी का आशीर्वाद है।

गौतम केवली महाविद्या (प्रश्नावली)

✍ स्वस्तिक.ऎन.जोशी

111	**112**	**113**	**121**	**122**	**123**	**131**	**132**	**133**
211	**212**	**213**	**221**	**222**	**223**	**231**	**232**	**233**
311	**312**	**313**	**321**	**322**	**323**	**331**	**332**	**333**

उपर दर्शाएं गये अंक शकुनावली प्रश्नावली से उत्तर प्राप्त करने से पूर्व शुद्ध एवं पवित्र होकर अपने इष्ट देव का स्मरण करते हुवे उपर दर्शाएं गये अंक कोष्टको में से किसी एक कोष्टक पर अपनी अंगुली अथवा शलाका रखें। जिस कोष्टक पर आपने अंगुली अथवा शलाका रखी हैं उस कोष्टक में अंकित संख्या के अनुसार आपके अभीष्ट प्रश्न का हल नीचे क्रमशः अंको में दिया गया हैं।

111: आपने जो प्रश्न विचारा है वह सफल होगा। तुम्हारे खराब दिनों का नाश होकर अच्छे दिन आए हैं। मन की कामनाएँ पूर्ण होंगी। विविध प्रकार की चिंताएँ मन में रहती हैं, वे अब थोड़े दिनों में नाश हो जाएँगी। एक मित्र के धोखे को भोग रहे हो। धर्म कार्य की इच्छा है, परन्तु पापकर्म से विघ्न आता है। आमदनी से खर्च अधिक रहता है। कोई कार्य सिद्ध होने को आता है, तो शत्रु उसमें विघ्न डाल देते हैं। दान-पुण्य करो। जिससे मन की अभिलाषा पूर्ण होगी। विरोधी चाहे कितनी कोशिश करें, परन्तु तुम्हारी धारणा अवश्य फलीभूत होगी।

112: आपका अभीष्ट प्रश्न लाभदायक है। धन की प्राप्ति होगी। भाग्योदय के दिन अब नजदीक आ गए हैं। जिस कार्य को हाथ में लोगे, उसमें जय प्राप्त करोगे। प्रियजन का मिलाप होगा। धर्म के कार्य करते रहो, जिससे पुण्य की प्राप्ति होगी तथा सुख भी मिलेगा। मन चिन्तित रहता है। भाइयों से जुदाई होगी। मकान बनाने का इरादा करते हो वह पार पड़ेगा। जमीन से तुमको लाभ होगा। आमदनी से खर्च अधिक होता है। तीर्थों की यात्रा करने की अभिलाषा है, वह पूर्ण होगी। धार्मिक कार्य सम्पन्न होगा।

113: आपका अभीष्ट प्रश्न अच्छा है। तुम्हारे दिल को आराम मिलेगा। सुख-चैन प्राप्त करोगे। जो कार्य मन में सोचा है, उसमें विजय प्राप्त करोगे। प्रियजनों का मिलाप होगा। चिन्ता के दिन निकल चुके हैं तथा अब अच्छे दिन आए हैं। धर्म के प्रभाव से सुखी हुए हो तथा आगे भी सुख प्राप्त करोगे। कष्ट सहन करते हुए भी दूसरे का कार्य करते हो परन्तु अपने कार्य में सुस्ती रखते हो। बुद्धि तेज है, बिगड़े कार्य को भी सुधार लेते हो। भविष्य में लाभ मिलेगा।

121: आपका विचारा हुआ प्रश्न लाभदायक है। बहुत दिनों तक दुःख सहन करने से निराश हो गए हो, बुरे दिन निकल गए हैं और अब शुभ दिन आए हैं। मन की इच्छाएँ फलीभूत होंगी। जितनी लक्ष्मी गंवाई है उससे भी अधिक प्राप्त करोगे। जिस काम की चिन्ता करते हो वह चिन्ता मिट जायेगी, उसमें एक व्यक्ति विघ्न उपस्थित करने आयेगा, किन्तु

अन्त में तुमको सफलता प्राप्त होगी। भाइयों तथा सम्बन्धियों का निभाव करते हो, जिससे तुम्हारी कीर्ति बढ़ी है। दिल के उदार हो, जहाँ जाते हो वहाँ सुख मिलता है।

122: आपने जो काम विचारा है, उसमें सफलता नहीं मिल पाएगी। आपने आज तक बहुतों का भला किया है। अशुभ कर्म के उदय से विघ्न उपस्थित होते हैं। जहाँ तक बन सके वहाँ तक धर्म करो। अपने इष्टदेव की यथाशक्ति आराधना तथा मन्त्र का जप करो, जिससे तकलीफ दूर होगी।

123: आपके अभीष्ट कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। इतने पापकर्म के थे तथा आपने महान संकट उठाये हैं। अब शुभ दिन आए हैं। बहुतों का भला किया, किन्तु उन्होनें उपकार न माना। धर्म के निमित्त का निकाला हुआ पैसा घर में न रखो। तीर्थों की यात्रा करो, जिस स्थान पर दुःखी हुए हो, उस स्थान का त्याग करो, दूसरे स्थान में जाकर रहो। परदेश में लाभ होगा। तुम्हारा दिल चिन्ता में डूबा रहता है। अब शुभ कर्म का उदय हुआ है। विचारे हुए कार्य में सफलता एवं धन प्राप्त होगा।

131: जो बात आपने सोची है वह अवश्य सिद्ध होगी, जिसका नुकसान हुआ है वह दूर होकर भविष्य में लाभ होगा। धन मिलेगा। तुम्हारे हाथ से धर्म के कार्य होंगे। जिस मनुष्य से मुलाकात चाहते हो वह होगी। चिन्ता के दिन अब गए हैं। धातु, धन, सम्पत्ति और कुटुम्ब की वृद्धि होगी।

132: आज तक तुम्हारे बड़े-बड़े दुश्मन हुए अब उनका जोर नहीं चलेगा। मन में विचारे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त करोगे। इज्जत में वृद्धि होगी। तुम्हारे हाथों से धर्म के कार्य होंगे, मन वांछित सुख की प्राप्ति होगी। भाइयों का मिलाप होगा। दान-पुण्य के प्रभाव से सुखी होंगे।

133: इतने दिन संकट रहा। चिंतित कार्य अच्छी तरह से पार न पड़ा, अब अच्छे दिनों की शुरुआत हुई है, जो कार्य विचारा है वह फलीभूत होगा, किसी भी प्रकार का विघ्न नहीं आयेगा। इष्टदेव के प्रभाव से लक्ष्मी प्राप्त होगी, प्रियजन से अचानक लाभ होगा।

211: तुमने मन में जिस कार्य का विचार किया है, वह सफल नहीं होगा। इसके सिवाय कोई दूसरा काम करो। तीर्थों की यात्रा करो, जिससे पुण्य का लाभ हो। दुश्मन लोग तुमको बाधाएँ डालते हैं।

212: विचारा हुआ कार्य होगा। प्रेमिका से लाभ होगा। कुटुम्ब की वृद्धि होगी। बहुत मुद्दत से विचारा हुआ कार्य होगा। दुश्मन तुम्हारे विरुद्ध कोशिश करेंगे, किन्तु तुम्हारे सद्भाग्य के आगे उनका जोर नहीं चलेगा। तीर्थों की यात्रा करने की इच्छा है वह हो सकेगी। मकान बनाने का तथा जमीन खरीदने का तुम्हारा इरादा सफल होगा। तुमको जमीन से लाभ है। भाग्यबल से कार्य सिद्ध होंगे।

213: दुःख के दिन अब दूर हो गए हैं। सुख के दिन शुरु हुए हैं। बहुत दिनों से कष्ट उठा रहे हो, परदेश गए तो भी सुख की प्राप्ति न हुई, किन्तु अब सुख भोगने के दिन प्राप्त हुए हैं। आबरु बढ़ेगी, संतान का सुख होगा। इतने दिनों मित्रों तथा कुटुम्बी जनों की तरफ से दुःख सहन किया। जहाँ तक बना दूसरों का भला किया, परन्तु उन लोगों ने गुण नहीं माना। शत्रु लोग पग-पग पर तैयार रहते हैं, किन्तु उनका जोर नहीं चलता क्योंकि तुम्हारा भाग्य बलवान् है। पास में धन थोड़ा है, किन्तु इज्जत अच्छी है, इसलिये जितना प्राप्त करने का विचार करोगे उतना प्राप्त कर सकोगे। मित्र लोगों से जैसा चाहिए वैसा सुख नहीं है। इज्जत आबरु के लिये खर्च बहुत करते हो। तुम्हारा धर्म सुधरा हुआ है, इसलिए धर्म पर श्रद्धा रखो।

221: इतने दिन गए वे अच्छे गए, जो जो कार्य किए वे भी पार पड़ गए, किन्तु अब जो कार्य दिल में विचारा है वह पाप कर्म के उदय से पूर्ण नहीं होगा। मित्र लोग भी शत्रु हो जाएँगे। कुटुम्ब में अनबन रहेगी, भाई जुदा होंगे। जो काम

दिल में विचारा है, उसका त्याग करना ही श्रेष्ठ है। धर्म पर श्रद्धा रखो, इष्टदेव की सेवा करो, दान-पुण्य के प्रभाव से सुख मिलेगा।

222: जो काम मन में विचारा है, उसको छोड़कर दूसरा काम करो। यदि इस विचारे हुए कार्य को करोगे तो संकट उत्पन्न होगा, नुकसान होगा, शत्रु लोग विघ्न उपस्थित करेंगे। इष्टदेव की सेवा करो, तीर्थों पर जाओ, जिससे दूसरे कार्य भी सुधरेंगे। दिल में विविध प्रकार की चिन्ताओं ने वास किया है, वह विचारे हुए कार्य को छोड़ देने से दूर होगी।

223: यह सवाल अच्छा है, सुख के दिन नजदीक आए हैं। व्यापार से धन प्राप्त होगा, ऐशो-आराम प्राप्त करोगे। पत्नी का सुख प्राप्त करोगे तथा संतान की वृद्धिहोगी, जो कार्य करोगे उसमें लाभ प्राप्त करोगे। ईमानदारी से काम करते हो तो अन्त में भला ही होगा। धर्म के प्रभाव से सुखी होंगे, इसलिये धर्म को भूलना मत, धर्म के कार्यों में सुस्ती रखना ठीक नहीं।

231: जिस कार्य के लिए मन में विचार किया है, वह कार्य तीन मास में होगा। अपनी स्त्री की तरफ से लाभ होगा। आज तक कुटुम्बीजनों की तरफ से सुख नही मिला, किन्तु भविष्य में मिलेगा। संतानों की वृद्धि होगी। ससुराल के खर्च की चिन्ता है, सो मिट जाएगी। आबरु के लिए आमदनी से खर्च अधिक करना पड़ता है। तीर्थों की यात्रा करने का इरादा है, किन्तु विघ्न आता है। भविष्य में धर्म कार्य कर सकोगे। हृदय में जिस कार्य की चिन्ता है, वह धर्म के प्रभाव से दूर हो जाएगी, इसलिए धर्म पर श्रद्धा रखो, जिससे सफलता प्राप्त कर सकोगे।

232: जो काम विचारा है, उसे छोड़कर कोई दूसरा काम करो। विचारे हुए कार्य को करने में लाभ नहीं है, यदि करोगे तो तुमको तुम्हारा स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना पड़ेगा, कुटुम्बीजनों का वियोग होगा। इसलिए उचित है कि इस कार्य को छोड़ दो। धर्म में होशियार रहना तथा अपनी शक्ति के अनुसार दान-पुण्य करना जिससे सुख हो।

233: थोड़े दिनों में धन मिलेगा। जो काम विचारा है, वह पूर्ण होगा। प्रियजनों से मिलाप होगा। जमीन, जागीर अथवा मकान से लाभ होगा। आबरु बढ़ेगी। धर्म कार्यों में खर्च करो। उसके प्रताप से सुख-चैन रहेगा। राज्यपक्ष से लाभ होगा। मन की धारणा पूर्ण होगी। स्त्री की तरफ से सुख है। एक समय अकस्मात् लाभ मिलेगा।

311: यह सवाल बहुत ही गरम है। जिस कार्य का विचार किया है, वह पूर्ण होगा। मुकदमा जीत जाओगे, व्यापार रोजगार में लाभ होगा। कीर्ति बढ़ेगी, राज्य की तरफ से लाभ होगा। धर्म के प्रभाव से सुख मिला है तथा भविष्य में भी मिलेगा। दूसरों के कार्य परिश्रम से पूरा करते हो, किन्तु अशुभ कर्म उदित होने से अपने कर्म में उदासीन रहते हो, विदेश यात्रा होगी और वहाँ लाभ होगा। धर्म पर श्रद्धा रखो जिससे संकट दूर हों। अपने हाथ से लक्ष्मी प्राप्त करोगे।

312: जो कार्य विचारा है उसे छोड़कर कोई दूसरा काम करो अन्यथा शत्रु लोग विघ्न डालेंगे, दौलत की खराबी होगी, घर के मनुष्यों तथा पशुओं पर संकट आएगा, इसलिए विचारे हुए कार्य को छोड़ देना ही उचित है। धर्म के प्रभाव से सब कार्य सफल होते हैं। निराश्रितों को आश्रय दो तथा देवाधिदेव का स्मरण करो जिससे सुखी होंगे।

313: यह प्रश्न अच्छा है। धन तथा स्त्री से सहयोग एवं सुख मिलेगा। संतान से सुख मिलेगा। संतान होगी, प्रियजन का मिलाप होगा। अमुक मुद्दत की धारी हुई धारणा सफल होगी। चिन्ता के दिन अब दूर हुए हैं। देव गुरु तथा धर्म की सेवा करो। दुश्मन लोग सताते हैं, किन्तु अब तुम्हारा प्रारब्ध बलवान् बना है जिससे इन लोगों का जोर नहीं चलेगा। जमीन से लाभ होगा। कीर्ति के लिए खर्च अधिक करना पड़ता है। मित्रों से लाभ होगा।

321: जमीन, मकान अथवा बाग-बगीचे से लाभ होगा। धन प्राप्त करोगे, स्नेही जन से मिलाप होगा। किसी भी मनुष्य के साथ मित्रता होगी और उसके द्वारा धनादि की प्राप्ति होगी। पुण्य के उदय से इच्छाएँ परीपूर्ण होगी। धर्म का आराधन करो। दुश्मन लोग पग-पग पर तैयार रहेंगे, किन्तु सन्मुख होने से उनका जोर नहीं चलेगा। अपनी शक्ति के अनुसार खर्च करो। मकान बनाने के

मनोरथ फलीभूत होंगे। धन पैदा करते हो, किन्तु खर्च अधिक होने से इकट्ठा नहीं होता है,पिता से धन थोड़ा मिलेगा। स्त्री की तरफ से लाभ होगा। वृद्धावस्था में धर्म के कार्य बन सकते हैं।

322: जो कार्य आपने मन में विचारा है, उसमे शत्रु लोग विघ्न डालेंगे, परिणाम अच्छा नहीं। राज्य की तरफ से नाराजगी होगी यदि सुखी होना चाहते हो, तो विचारा हुआ कार्य छोड़कर दूसरा कार्य करो, तुम्हारे सहयोगी बदल गए हैं, उनका विश्वास मत करना। भजन-पूजन, व्रत-नियम में ध्यान दो।

323: जिस कार्य का मन में विचार किया है, उसमें लाभ होगा, इच्छा पूर्ण होगी, स्नेही का मिलाप होगा, जो जो चिन्ताएँ उपस्थित हुई हैं, वे सब दूर होंगी। धर्म के कार्य बन सकेंगे। बहुत दिनों से परदेश में दुःख प्राप्त किया है, किन्तु अब दुःख के दिन गए। तीर्थयात्रा होगी। अब देश में जाकर आनन्द प्राप्त करोगे। धर्म के कार्यों में लक्ष्य रखो, जिससे सब सुख प्राप्त करोगे।

331: तुम्हारे मन की चिन्ता मिटेगी। बीमारी की फरियाद दूर होगी। मन की धारणा पूर्ण होगी। थोड़े दिनों में ही धन की प्राप्ति होगी। स्नेही का मिलाप होगा। धर्म-कर्म में पैसा खर्च करो, जिससे परिणाम में फायदा होगा। अच्छे दिन आए हैं, पापकर्म से इतने दिन दुःख प्राप्त किया है, परन्तु अब वे बीत गए हैं।

332: बुरे दिन गए अब अच्छे दिन आए हैं। जमीन तथा धन-दौलत में जो हानि हुई है, वह मिट जाएगी तथा भविष्य में लाभ होगा। परमेश्वर का ध्यान करो। हृदय शुद्ध है, जिससे मन की चिन्ता जल्दी दूर होगी। परदेश में रहे मनुष्य की चिन्ता है सो उसका मिलाप होगा। धर्म के प्रभाव से सुखी होंगे।

333: इतने दिन निर्धन अवस्था में व्यतीत किए, किन्तु अब धन प्राप्त होगा तथा मन की धारणा फलीभूत होगी। जीवनसाथी से सुख प्राप्त होगा, तीन महिने बाद अच्छे दिन आएँगे। इष्टदेव की आराधना करो। आमदनी से खर्च अधिक है, धन इकट्ठा किया नहीं, मित्र की तरफ से धोखा मिला है, दुश्मन लोग पीछे से निन्दा करते हैं, किन्तु सामने आकर बोल नहीं सकते। जमीन से लाभ होगा। परमेश्वर का जप करो।

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 255 से 10900 तक**

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ORISSA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

चौंतीसा यन्त्र द्वारा भविष्य ज्ञान प्रश्नावली

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

9	16	2	7
6	3	13	12
15	10	8	1
4	5	11	14

भविष्य ज्ञान प्रश्नावली को चौंतीसा यन्त्र के अनुरुप बनाया गया हैं।

- ❖ प्रश्नकर्ता को अपने इष्ट का ध्यान करके नीचे वर्णित 34 प्रश्नों में से अपने संबंधित प्रश्न का उच्चारण या स्मरण करते हुए दिये गये चौंतीसा यन्त्र के किसी भी अंक पर अंगुली रखें।
- ❖ अंगुली रखें अंक की संख्या एवं अपने प्रश्न की संख्या को जोड़कर उसमें से 1 अंक घटा दें।
- ❖ जो संख्या शेष बचे उस संख्या को 34 प्रश्नों की प्रश्न तालिका में देख कर उस संख्या के देवता का नाम नोट कर लें।
- ❖ जो देवता का नाम प्राप्त हुवा है, उस देवता के प्रश्न फल में चौंतीसा यन्त्र पर अंगुली रख कर प्राप्त हुइ संख्या को अपने संबंधित प्रश्न का उत्तर समझे।
- ❖ चौंतीसा यन्त्र की संख्या एवं प्रश्न संख्या का जोड़ यदि 34 अंक से अधिक हो तो जोड़कर प्राप्त हुइ संख्या में से 34 घटा कर शेष बची हुइ संख्या को 34 प्रश्नों की प्रश्न तालिका में देख कर उस संख्या के देवता का नाम प्राप्त करें।

उदाहरण:1

इष्ट का ध्यान कर 34 प्रश्नों में से यदि किसी ने चयन किया हो प्रश्न नंबर 3 भाग्योदय कब होगा? तो, उस प्रश्न का स्मरण कर के चौंतीसा यन्त्र की संख्या में से किसी एक संख्या 16 पर अंगुली रखी हो, तो प्रश्न संख्या 3 + 16 जो चौंतीसा यन्त्र पर अंगुली रख कर प्राप्त हुइ संख्या हैं उन दोनो का जोड 3+16 = 19 होता हैं उस उस संख्या में से 1 घटाकर 19-1 = 18 शेष संख्या बचती हैं। अब प्रश्न तालीका के प्रश्न क्रम की संख्या 18 के देवता शनि हैं, तो अब शनिदेव के प्रश्नफल पर 16 नंबर के फल में लिखा हैं भाग्योदय शीघ्र होगा।

उदाहरण:2

यदि किसी का प्रश्न हो प्रश्न संख्या 27. आज का दिन कैसा रहेगा? तो उस प्रश्न का स्मरण करके चौंतीसा यन्त्र की संख्या में से किसी एक संख्या का चयन करने पर संख्या 10 पर अंगुली रखी हो तो 27 + 10 का जोड़ 37 होता है, अब

37 में से 1 घटाने पर 37-1= 36 संख्या प्राप्त हुई लेकिन प्रश्न तालिका में 36 संख्या का प्रश्न नहीं हैं प्रश्न तालिका में केवल 34 प्रश्न दिये गये हैं, तो अब 36 संख्या में से 34 घटाये तो शेष बची संख्या हैं 2 तो अब प्रश्नताली का के 2रें प्रश्न के देवता हैं ब्रह्मा, अब ब्रह्माजी के प्रश्नफल पर 10 नंबर के फल में लिखा हैं दिन शुभ रहेगा।

उदाहरण:3

यदि किसी का प्रश्न हो प्रश्न संख्या 32. अमुक स्त्री मुझे प्रेम करती है या नहीं? तो उस प्रश्न का स्मरण करके चौंतीसा यन्त्र की संख्या में से किसी एक संख्या का चयन करने पर संख्या 15 पर अंगुली रखी हो तो 32 + 15 का जोड़ 47 होता है, अब 47 में से 1 घटाने पर 47-1= 46 संख्या प्राप्त हुई लेकिन प्रश्न तालिका में 46 संख्या का प्रश्न नहीं हैं प्रश्न तालिका में केवल 34 प्रश्न दिये गये हैं, तो अब 46 संख्या में से 34 घटाये तो शेष बची संख्या हैं 12 तो अब प्रश्नताली का के 12वें प्रश्न के देवता हैं पृथ्वी, अब पृथ्वी प्रश्नफल पर 15 नंबर के फल में लिखा हैं दिखावटी प्रेम करती है।

इसी प्रकार आप अपने संबंधित प्रश्न का उत्तर सरलता से प्राप्त कर सकते हैं।

संख्या	प्रश्न	देवता	संख्या	प्रश्न	देवता
1	सन्तान सुख होगा या नहीं?	गणेश	18	मेरी चिंता दूर होगी या नहीं?	शनि
2	कोर्ट-केस में हार होगी या जीत?	ब्रह्मा	19	मित्र के साथ कैसी बनेगी?	राहु
3	भाग्योदय कब होगा?	विष्णु	20	कर्ज मिलेगा या नहीं?	केतु
4	नौकरी मिलेगी या नहीं?	शिव	21	खोई वस्तु मिलेगी या नहीं?	ध्रुव
5	तरक्की का योग है या नहीं?	इन्द्र	22	परदेशी कब आयेगा?	यम
6	खेती में लाभ होगा या हानि?	अग्नि	23	यात्रा से लाभ मिलेगा या हानि?	विश्वेदेवा
7	मकान बनेगा या नहीं?	वायु	24	भाइयों में कैसी बनेगी?	यक्ष
8	पास होऊंगा या फेल?	सूर्य	25	कुआं बनेगा या नहीं?	भैरव
9	विद्या प्राप्त होगी या नहीं?	चन्द्रमा	26	यह वर्ष कैसा रहेगा?	वासुकि
10	मेरा जीवन कैसा व्यतीत होगा?	वसुदेव	27	आज का दिन कैसा रहेगा?	कुबेर
11	जीवन में सफलता मिलेगी या नहीं?	वरुण	28	पुत्र होगा या कन्या?	मित्र
12	गुप्त धन मिलेगा या नहीं?	पृथ्वी	29	मेरी इच्छा पूरी होगी या नहीं?	जयन्त
13	विवाह होगा या नहीं?	अश्विनी	30	स्त्री स्वभाव में कैसी मिलेगी?	तक्षक
14	बीमार अच्छा होगा या नहीं?	मंगल	31	सम्बन्धी धोखा तो नहीं देगा?	शेष
15	स्वप्न फल कैसा है?	बुध	32	अमुक स्त्री मुझे प्रेम करती है या नहीं?	काम
16	तबादला होगा या नहीं?	बृहस्पति	33	तीर्थ यात्रा को जाना होगा या नहीं?	काल
17	व्यापार से लाभ रहेगा या हानि?	शुक्र	34	मन्दिर बनेगा या नहीं?	अनन्त

गणेश

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको सन्तान का सुख अवश्य मिलेगा।	9	आज का दिन मध्यम रहेगा।
2	किसी की सहायता से मन्दिर शीघ्र बनेगा।	10	यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा।
3	तीर्थ यात्रा में विघ्न आनेकी संभावना हैं।	11	कुएं का निर्माण नहीं होगा।
4	स्त्री आपसे शुद्ध प्रेम करती है।	12	भाइयों में अच्छी बन जाएगी।
5	आपके सम्बन्धी आपको धोखा दे सकता है।	13	इस यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
6	आपकी स्त्री का स्वभाव गरम रहेगा।	14	परदेशी शीघ्र ही लौटेगा।
7	इच्छा पूरी होने में देरी हो सकती है।	15	खोई वस्तु की शीघ्र प्राप्ति होगी।
8	कन्या सुख में वृद्धि होगी।	16	कर्ज मिलने में कठिनाई होगी।

ब्रह्मा

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	कोर्ट-केस में आपकी जीत होगी।	9	संतान सुख प्राप्त होगा।
2	सन्तान सुख हेतु इष्ट देवता का पूजन करें।	10	आज का दिन आपके लिए शुभ रहेगा।
3	मन्दिर निर्माण में विलम्ब होगा।	11	यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं है।
4	तीर्थ यात्रा जाने की इच्छा पूर्ण होगी।	12	कुआँ निर्माण की इच्छा पूर्ण होगी।
5	इस समय स्त्री प्रेम नहीं करती है।	13	भाइयों में अनबन की संभावना अधिक है।
6	सम्बन्धी आपको धोखा दे सकता है, सावधान रहें।	14	आपको यात्रा से लाभ होगा।
7	आपकी स्त्री का स्वभाव सरल रहेगा।	15	परदेशी के आने में विलम्ब होगा।
8	इस समय इच्छा की पूर्ति शीघ्र नहीं हो सकेगी।	16	खोई वस्तु के मिलने की संभावना कम हैं।

विष्णु

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपका भाग्योदय शीघ्र ही होगा।	9	आपकी इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
2	कोर्ट-केस में विजय प्राप्त होने में सन्देह है।	10	आपको कन्या सुख की प्राप्ति होगी।
3	आपको सन्तान सुख उपाय से प्राप्त होगा।	11	आज का दिन आपके लिए शुभ नहीं रहेगा।
4	मन्दिर निर्माण की इच्छा पूरी होगी।	12	यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा।
5	तीर्थ यात्रा पर जाने में विलम्ब होगा।	13	कुंआँ निर्माण होने में संदेह हैं।
6	स्त्री आपसे गोपनीय प्रेम करती है।	14	भाइयों में अनबन अधिक रहेगी।
7	सम्बन्धी आपको धोखा नहीं देगा।	15	यात्रा में लाभ मिलने की सम्भावना कम हैं।
8	आपकी स्त्री का स्वभाव उत्तम होगा।	16	परदेशी को आने में विलम्ब होगा। निश्चिंत रहें।

शिव

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।	9	स्त्री के स्वभाव से आपका स्वभाव मिल जायेगा।
2	आपके भाग्योदय में अभी देर है।	10	आपकी इच्छा पूरी होगी।
3	कोर्ट-केस में आपकी हार होने की सम्भावना हैं।	11	आपको संतान सुख मिलेगा।
4	संतान सुख की इच्छा शीघ्र पूर्ण होगी।	12	आज का दिन दिन शुभ है।
5	मन्दिर नहीं बनेगा।	13	यह वर्ष आपके लिए उत्तम नहीं रहेगा।
6	तीर्थ-यात्रा नहीं होने का संकेत है।	14	कुआँ निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
7	स्त्री आपसे प्रेम करती है।	15	भाइयों में अनबन रहने की सम्भावना हैं।
8	सम्बन्धी आपको धोखा दे सकता हैं, सावधान रहें।	16	आपको यात्रा में लाभ मिलेगा।

.

इन्द्र

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपकी तरक्की के योग अच्छे हैं।	9	आपसे सम्बन्धी गोपनिय चाल चलेगा।
2	आपको नौकरी प्रयत्न से मिलेगी।	10	आपकी स्त्री का स्वभाव अच्छा रहेगा।
3	आपके भाग्योदय में विलम्ब होगा।	11	आपकी इच्छा पूर्ण होने में सन्देह है।
4	कोर्ट-केस में आपकी जीत अवश्य होगी।	12	कन्या सुख में वृद्धि का संकेत हैं।
5	आपको संतान सुख उपाय से मिलेगा।	13	आज का दिन मध्यम रहेगा।
6	मन्दिर निर्माभ की आशा पूर्ण होगी।	14	आपके लिए यह वर्ष कठिनाई भरा रहेगा।
7	तीर्थ यात्रा पर जाना संभव हैं।	15	कुवें का निर्माण देरी से होगा।
8	स्त्री आपसे प्रेम नहीं करती,दिखावटी प्रेम कर रही है।	16	भाइयों के बिच में अच्छा मेल रहेगा।

.

अग्नि

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको खेती से लाभ होगा।	9	उस स्त्री के लिए प्रेम का दिखावा ही अच्छा है।
2	आपकी तरक्की में देर हो सकती है।	10	सम्बन्धी आपको धोखा नहीं देगा।
3	आपको शीघ्र नौकरी नहीं मिलेगी।	11	आपकी स्त्री का स्वभाव प्रतिकूल होगा।
4	आपका भाग्योदय शीघ्र ही होगा।	12	इच्छा शीघ्र पूरी नहीं होगी।
5	कोर्ट-केस की जीत में सन्देह है।	13	संतान सुख प्राप्त होगा।
6	आपको सन्तान का सुख देर से मिलेगा।	14	आज का दिन आपके लिए उत्तम है।
7	मन्दिर का निर्माण प्रियजनो के सहयोग से होगा।	15	आपके लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।
8	तीर्थ यात्रा होने में संदेह रहेगा।	16	कुएँ के निर्माण की इच्छा पूरी होगी।

वायु

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपकी गृह निर्माण की कामना पूरी होगी।	9	किसी कारण आपकी तीर्थ यात्रा अभी नहीं होगी।
2	आपको खेती में लाभ कम होगा।	10	स्त्री आपसे प्रेम करती है।
3	आपकी तरक्की अभी नहीं होगी।	11	सम्बन्धी आपको धोखा दे सकते हैं।
4	आपको नौकरी काफी प्रयत्न के बाद मिलेगी।	12	आपकी स्त्री का स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा होगा।
5	आपका भाग्योदय शीघ्र हो सकता हैं।	13	आपकी इच्छा पूर्ण होगी।
6	कोर्ट-केस में आपको विजय मिलने में कठिन है।	14	आपको कन्या का सुख प्राप्त होगा।
7	आपको संतान का सुख मिलेगा।	15	आज का दिन आपके लिए प्रतिकूल रहेगा।
8	आपकी मन्दिर बनाने की कामना पूर्ण होगी।	16	यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा।

सूर्य

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	इस परिक्षा में सफल होने की पूर्ण संभावना हैं।	9	मन्दिर निर्माण होगा लेकिन देर से।
2	आपका मकान बनने में विलम्ब है।	10	यह तीर्थ यात्रा आपके लिए उत्तम रहेगी।
3	आपको इस बार खेती से लाभ नहीं होगा।	11	उस स्त्री का प्रेम दिखावटी है।
4	इस बार आपकी तरक्की शीघ्र होगी।	12	आपका सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
5	आपको नौकरी अभी नहीं मिलेगी।	13	आपकी स्त्री का स्वभाव उत्तम रहेगा।
6	आपका भाग्योदय देर से होगा।	14	आपकी यह इच्छा पूरी नहीं होगी।
7	आपके मुकदमा जीतने की संभावना प्रबल हैं।	15	आपको संतान सुख प्राप्त होगा।
8	संतान सुख में बाधा, संतान गोपाल का पूजन करें।	16	आपका दिन शुभ रहेगा।

चन्द्रमा

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको उत्तम विद्या प्राप्त होगी।	9	आपको संतान सुख विलम्ब से प्राप्त होगा।
2	इस बार आपके सफल होने में सन्देह रहेगा।	10	मन्दिर बनने में विघ्न आयेगें।
3	आपका मकान अभी नहीं बन सकेगा।	11	तीर्थ यात्रा होने में सन्देह हैं।।
4	इस बार खेती से आपको लाभ मिलेगा।	12	आपके लिए गोपनिय प्रेम हानिकारक होगा।
5	आपकी तरक्की का योग इस बार नहीं है।	13	सम्बन्धी आपको धोखा देगा।
6	आपको नौकरी शीध्र मिल जायेगी।	14	आपकी स्त्री का स्वभाव अनुकूल नहीं होगा।
7	आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।	15	आपकी इच्छा पूरी होने में विलम्ब होगा।
8	कोर्ट-केस में विजय प्राप्ति में सन्देह रहेगा।	16	कन्या सुख में वृद्धि होगी।

वसुदेव

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपका आने वाला जीवन सुखपूर्वक रहेगा।	9	कोर्ट-केस में आपकी विजय निश्चित होगी।
2	आपके विद्या प्राप्ति की संभावना थोड़ी हैं।	10	आपको सन्तान सुख मिलने में बाधाएं आयेगी।
3	इस वर्ष परिक्षा में असफलता मिल सकती हैं।	11	मन्दिर के निर्माण में विघ्न आयेंगे।
4	आपकी मकान की इच्छा पूर्ण होने में विलंब होगा।	12	आपकी तीर्थयात्रा की इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
5	इस बार खेती से कम लाभ मिलने की संभावना हैं।	13	स्त्री आपसे सच्चा प्रेम करती है।
6	आपकी तरक्की का योग इस बार बन रहा है।	14	आपका सम्बन्धी आपको धोखा नहीं देगा।
7	आपको नौकरी मिलने में अभी देर है।	15	आपको स्त्री उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
8	आपका भाग्योदय शीघ्र होने की संभावना हैं।	16	आपकी इच्छा शीघ्र पूरी होगी।

वरुण

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको जीवन में सफलता प्राप्त होगी।	9	आपका भाग्योदय शीघ्र होने का संकेत है।
2	आपका जीवन संघर्षमय रहेगा।	10	कोर्ट-केस में आपकी जीत होने में सन्देह है।
3	आपकी विद्या अपूर्ण होने की संभावना हैं।	11	आपको सन्तान सुख उपाय के बाद में प्राप्त होगा।
4	परिक्षा में सफलता मिलने की पूर्ण सम्भावना हैं।	12	आपकी मन्दिर निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
5	आपका मकान बनाने की इच्छा अभी पूर्ण नहीं होगी।	13	तीर्थ यात्रा की कामना पूर्ण होगी।
6	इस बार आपको खेती से विशेष लाभ नहीं होगा।	14	स्त्री आपसे गोपनिय प्रेम करती है।
7	आपकी इस बार तरक्की होने में सन्देह रहेगा।	15	सम्बन्धी का आपको धोखा देना कठिन है।
8	आपको नौकरी मिलने के अभी समय लगेगा है।	16	आपकी स्त्री का स्वभाव मिलनसार रहेगा।

पृथ्वी

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको गुप्त धन प्राप्त होगा।	9	आपको जल्दी नौकरी मिल जायेगी।
2	आपको जीवन में सफलता मिल जाएगी।	10	आपके भाग्योदय में देर है।
3	आपका जीवन संघर्ष से बीतेगा।	11	कोर्ट-केस में आपकी हार होने की संभावना है।
4	आपको विद्या प्राप्त होगी।	12	आपको सन्तान सुख प्राप्त होगा।
5	इस बार आपके सफल होने में सन्देह है।	13	मन्दिर बनने में विलम्ब होगा।
6	आपका मकान अभी देर से बनेगा।	14	तीर्थ यात्रा में रुकावट सम्भव हैं।
7	आपको इस बार खेती से अच्छा लाभ मिलेगा।	15	स्त्री आपसे दिखावटी प्रेम करती है।
8	आपकी तरक्की अभी नहीं होगी।	16	आपका सम्बन्धी आपको धोखा नहीं देगा।

अश्वनी

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपका विवाह हो जायेगा।	9	आपके तरक्की में विलम्ब है।
2	अपको गुप्त धन विशेष उपाय द्वारा मिलेगा।	10	आपको जल्द नौकरी मिल जायेगी।
3	कठिन प्रयासों के बाद जीवन में सफलता प्राप्त होगी।	11	आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
4	आपका जीवन अच्छे से बीतेगा।	12	कोर्ट-केस में आपको विजय की प्राप्ति होगी।
5	उत्तम विद्या प्राप्त नहीं होगी।	13	आपको सन्तान का सुख उपाय से होगा।
6	इस बार सफलता मिलने की सम्भावना कम हैं।	14	आपके मन्दिर निर्माण की कामना में विलम्ब होगा।
7	आपकी मकान की इच्छा देर से पूर्ण होगी।	15	तीर्थ यात्रा होने की सम्भावना कम हैं।
8	आपको खेती में अधिक लाभ नहीं होगा।	16	स्त्री आपसे सच्चा प्रेम करती है।

मंगल

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	बीमार अच्छा हो जायेगा।	9	आपको खेती में लाभ अवश्य मिलेगा।
2	आपका विवाह होने में सन्देह है।	10	आपकी तरक्की देर से होगी।
3	गुप्त धन इष्ट देव के पूजन से प्राप्त हो सकता हैं।	11	आपको अभी नौकरी मिलने में सन्देह है।
4	आपको जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी।	12	आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा।
5	आपका जीवन मध्यम वर्ग का होगा।	13	कोर्ट-केस की जीत में सन्देह होगा।
6	आपको विद्या प्राप्त हो जायेगी।	14	निश्चिन्त रहें, सन्तान सुख अवश्य मिलेगा।
7	इस बार आपको सफलता प्राप्त होगी।	15	मन्दिर निर्माण की इच्छा शीघ्र पूर्ण होगी।
8	आपका मकान शीघ्र बनेगा।	16	तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी होगी।

बुध

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपके स्वप्न का फल उत्तम मिलेगा।	9	आपका मकान अभी नहीं बनेगा।
2	बीमार व्यक्ति देर से स्वस्थ होगा।	10	आपको खेती से लाभ विशेष मिलेगा।
3	आपका विवाह उपाय के पश्चयात होगा।	11	आपकी तरक्की विलम्ब से होगी।
4	आपको गुप्त धन प्राप्त होगा।	12	आपको नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
5	आपको जीवन में सफलता सरलता से नहीं मिलेगी।	13	आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
6	आपके जीवन में कठिनाइयां अधिक रहेगी।	14	कोर्ट-केस में आपकी जीत होगी।
7	आपको विद्या प्राप्ति इष्ट पूजा से मिलेगी।	15	आपको सन्तान सुख उपाय पश्चयात मिलेगा।
8	आपके सफल होने में सन्देह है।	16	मन्दिर बनने में विलम्ब होगा।

बृहस्पति

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपका तबादला शीघ्र होगा।	9	आप सफल होगें, इष्ट पूजन से लाभ मिलेगा।
2	आपके स्वप्न का फल अधिक शुभ नहीं है।	10	आपकी मकान की कामना पूरी होगी।
3	बीमार व्यक्ति के ठीक होने में सन्देह है।	11	आपको खेती से पूरा लाभ नहीं मिलेगा।
4	आपका विवाह हो जायेगा।	12	आपकी तरक्की शीघ्र ही होगी।
5	आपको गुप्त धन उपाय से मिलेगा।	13	आपको नौकरी मिल जायेगी।
6	आपको जीवन में सफलता कम मिलेगी।	14	आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा।
7	आपका जीवन अच्छी तरह से बीतेगा।	15	आपको कोर्ट-केस में विजय प्राप्ति में सन्देह है।
8	आपको विद्या प्राप्ति में कठिनाई होगी।	16	आपको संतान सुख सरलता से नहीं मिलेगा।

शुक्र

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको व्यापार में सावधानी से लाभ मिले।	9	आपको विद्या थोड़ी मात्रा में प्राप्त होगी।
2	आपका तबादला हो जायेगा।	10	आप सफल होगे।
3	आपके स्वप्न का फल शुभ है।	11	आपका मकान विलम्ब से बनेगा।
4	बीमार व्यक्ति शीघ्र स्वस्थ हो जायेगा।	12	आपको खेती से लाभ मिलने में सन्देह है।
5	आपका विवाह उपाय से होगा।	13	आपकी तरक्की अभी नहीं होगी।
6	आपको गुप्त धन अवश्य मिलेगा।	14	आपको नौकरी मिलने में कष्ट होगा है।
7	आपको जीवन में सफलता कठिनाई से प्राप्ति होगी।	15	आपका भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
8	आपके जीवन में कठिनाइयां अधिक आयेगीं।	16	कोर्ट-केस में आपकी जीत निश्चित होगी।

शनि

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपकी चिन्ता दूर होने में वक्त लगेगा।	9	आपका जीवन सुखमय व्यतीत होगा।
2	आपको व्यापार में लाभ होगा।	10	आप अच्छि विद्या प्राप्त कर सकोगे।
3	आपका तबादला अभी नहीं होगा।	11	आपका सफल होना मुश्किल है।
4	आपके स्वप्न का फल उत्तम है।	12	आपका मकान अभी नहीं बनेगा।
5	बीमार व्यक्ति के ठीक होने में सन्देह है।	13	इस बार आपको खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
6	आपका विवाह होने में सन्देह है।	14	आपकी तरक्की अभी नहीं होगी।
7	आपको गुप्त धन आसुरी सिद्धि द्वारा मिल सकेगा।	15	आपको नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
8	आप जीवन में अच्छि सफलता प्राप्त करोगे।	16	आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।

राहु

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपका मित्र आपको धोखा देगा, सावधान रहे।	9	आपको जीवन में सफलता कम मिलेगी।
2	आपकी मानसिक चिंता शीघ्र दूर हो जायेगी।	10	आपका जीवन बाधाओं से युक्त रहेगा।
3	आपको व्यापार से लाभ नहीं होगा।	11	आपको उत्तम विद्या प्राप्त नहीं हो सकेगी।
4	आपका तबादला हो जायेगा।	12	आपके सफल होने में सन्देह है।
5	आपके स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।	13	आपकी मकान की इच्छा पूरी होगी।
6	बीमार व्यक्ति जल्द अच्छा हो जायेगा।	14	इस बार आपको खेती में लाभ मिलेगा।
7	आपका विवाह हो जायेगा।	15	आपकी तरक्की प्रयत्न के उपरांत होगी।
8	गुप्त धन आपके भाग्य में नहीं है।	16	आपको नौकरी मिलने में विलम्ब होगा।

केतु

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको इस समय कर्ज मिलने में अभी देर है।	9	आपको गुप्त धन पितृ पूजन से मिलेगा।
2	आप मित्र से सतर्क रहें।	10	आपको जीवन में विशेष सफलता नहीं मिलेगी।
3	आपकी मानसिक चिंता इष्ट आराधना से दूर होगी।	11	आपको जीवन में सफलता कम मिलेगी।
4	आपको व्यापार में अवश्य लाभ होगा।	12	आपको विद्या कठिन परिश्रम से प्राप्त होगी।
5	आपका तबादला रुक सकता हैं।	13	आप सफल हो जाओगे।
6	आपके स्वप्न का फल मध्यम रहेगा।	14	आपकी मकान की इच्छा जल्द पूरी नहीं होगी।
7	बीमार व्यक्ति अच्छा हो जायेगा।	15	आपको खेती से इस बार विशेष लाभ नहीं होगा।
8	आपका विवाह उपाय के बाद होगा।	16	आपकी तरक्की में विघ्न-बाधा आसकती हैं।

ध्रुव

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको खोयी वस्तु प्रयत्न के उपरांत मिल सकेगी।	9	आपका विवाह देर से होगा।
2	आपको इस समय कर्ज मिल जायेगा।	10	आपको गुप्त धन मिलने में सन्देह है।
3	आपकी मित्र के साथ नहीं बनेगी।	11	आपको जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
4	आपकी चिन्ता शीघ्र दूर होगी।	12	आपको जीवन में सुख नहीं मिलेगा।
5	आपको व्यापार में अधिक लाभ नहीं होगा।	13	आप विद्या प्राप्त करोगे।
6	आपका तबादला इसबार नहीं होगा।	14	आपके सफल होने में सन्देह है।
7	आपके स्वप्न का फल उत्तम है।	15	आपका मकान अभी नहीं बनेगा।
8	बीमार व्यक्ति के अच्छे होने में सन्देह है।	16	आपको इस बार खेती से विशेष लाभ मिलेगा।

यम

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	परदेशी का आना संभव है।	9	व्यक्ति की बीमारी अच्छी हो जायेगी।
2	आपको खोयी वस्तु मिल जायेगी।	10	आपका विवाह हो जायेगा।
3	आपको इस समय कर्ज मिलना मुश्किल होगा।	11	आपको गुप्त धन प्राप्त होगा।
4	आपकी मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।	12	आपका जीवन में सफल होना कठिन है।
5	आपकी चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।	13	आप जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।
6	आपको व्यापार से लाभ मिलेगाअ।	14	आपको उत्तम विद्या प्राप्त नहीं कर सकोगे।
7	आपका तबादला हो जायेगा।	15	इस बार आप सफल नहीं होगें।
8	आपके स्वप्न का फल मध्यम है।	16	आपकी तरक्की में बाधा आयेंगी।

विश्वेदेवा

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपके लिए यात्रा लाभदायी रहेगी।	9	आपके स्वप्न का फल अशुभ है।
2	परदेशी अभी नहीं आयेगा।	10	बीमार व्यक्ति जल्द अच्छा नहीं होगा।
3	आपको खोयी वस्तु नहीं मिलेगी।	11	आपका विवाह होने में सन्देह है।
4	आपको इस समय कर्ज देर से मिलेगा।	12	आपको गुप्त धन नहीं मिलेगा।
5	आपकी मित्र के साथ नहीं बन सकेगी।	13	आपको जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।
6	आपकी सब चिन्ता दूर हो जायेगी।	14	आपके जीवन में कष्ट अधिक मिलेंगे।
7	आपको व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।	15	आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करोगे।
8	आपका तबादला नहीं होगा।	16	आप सफल हो जाओगे।

यक्ष-प्रश्न-फल

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपकी भाइयों में बननी मुश्किल है।	9	आपका तबादला हो सकता हैं।
2	आपको यात्रा में लाभ कम मिले।	10	आपके स्वप्न का फल शुभ है।
3	परदेशी शीघ्र ही आ जायेगा।	11	बीमार व्यक्ति जल्दी अच्छा हो जायेगा।
4	आपको खोयी वस्तु मिल जायेगी।	12	आपका विवाह उपाय के बाद होगा।
5	इस समय आपको कर्जा नहीं मिलेगा।	13	आपको गुप्त धन शीघ्र प्राप्त होगा।
6	आपका मित्र के साथ अच्छा मेल होगा।	14	आपका जीवन में सफल होना मुश्किल है।
7	आपकी चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।	15	आपका जीवन सुखपूर्वक बीतेगा।
8	आपको व्यापार से लाभ मिलेगा।	16	आपको विद्या इष्ट कृपा से प्राप्त होगी।

भैरव

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपकी कुएँ के निर्माण की कामना पूरी होगी।	9	आपको व्यापार में लाभ मिलने में मुश्किल है।
2	आपकी भाइयों से अच्छी बन जायेगी।	10	आपका तबादला प्रयत्न से होगा।
3	आपको यात्रा से लाभ नहीं रहेगा।	11	आपके स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
4	आपका परदेशी अभी नहीं आयेगा।	12	बीमार व्यक्ति का स्वस्थ होना कठिन है।
5	आपको खोयी वस्तु प्रयत्न से मिलेगी।	13	निश्चिन्त रहे आपका विवाह हो जायेगा।
6	आपको इस समय कर्ज मिल सकेगा।	14	आपको गुप्त धन नहीं मिलेगा।
7	आपकी मित्र से बननी कठिन है।	15	आपको जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।
8	आपकी चिन्ता मिटेगी, इष्ट पूजा करें।	16	आपके जीवन में विशेष बाधाएं आयेंगी।

वासुकि

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपके लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा।	9	आपकी चिन्ता मिट जायेगी।
2	कुआं इस समय बन जायेगा।	10	आपको व्यापार से लाभ मिलेगा।
3	आपकी भाइयों से नहीं बनेगी।	11	आपका तबादला हो जायेगा।
4	आपको यात्रा में लाभ मिलेगा।	12	आपके स्वप्न का फल शुभ है।
5	परदेशी शीघ्र ही आ जायेगा।	13	बीमार व्यक्ति के अच्छे होने में सन्देह है।
6	आपको खोयी वस्तु मिलेगी।	14	आपका विवाह उपाय से हो सकेगा।
7	आपको इस समय कर्ज मिलेगा।	15	आपको गुप्त धन पितृ पूजा से मिल सकेगा।
8	आपका मित्र धोखा देगा, सावधान।	16	आपको जीवन में सफलता कम मिलेगी।

कुबेर

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपके लिए आज का दिन शुभ नहीं है।	9	आप मित्र के साथ सावधानी से कार्य करे।
2	आपके लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा।	10	आपकी चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
3	कुआं इस समय नहीं बन सकेगा।	11	आपको व्यापार से लाभ मिलना कठिन है।
4	आपकी भाइयों में अच्छी बन जायेगी।	12	आपका तबादला नहीं होगा।
5	आपको यात्रा से विशेष लाभ नहीं मिलेगा।	13	आपके स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
6	परदेशी किसे कारण से अभी नहीं आयेगा।	14	बीमार व्यक्ति अच्छा हो जायेगा।
7	आपको खोयी वस्तु मिलने में सन्देह है।	15	आपका विवाह उपाय से होगा।
8	आपको इस समय कर्ज नहीं मिलेगा।	16	आपको गुप्त धन शीघ्र प्राप्त होगा।

मित्र

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको संतान सुख प्राप्त होगा।	9	आपको इस समय कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
2	आपके लिए आज का दिन शुभ है।	10	आपकी मित्र के साथ अच्छी बनेगी।
3	आपके लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।	11	आपकी चिन्ता मिट जायेगी।
4	कुआं इस समय बन जायेगा।	12	आपको व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
5	आपका भाइयों से अनबन होगी।	13	आपका तबादला हो जायेगा।
6	आपको यात्रा में कम लाभ मिलेगा।	14	आपके स्वप्न का फल शुभ है।
7	परदेशी से जल्द मुलाकात होगी।	15	बीमार व्यक्ति ले स्वस्थ होने में सन्देह है।
8	आपको खोयी वस्तु नहीं मिलेगी।	16	आपका विवाह शीघ्र ही हो जायेगा।

जयन्त

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपकी इच्छा देर से पूर्ण होगी।	9	आपको खोयी वस्तु मिलने में सन्देह है।
2	आपके कन्या सुख में वृद्धि होगी।	10	आपको इस समय कर्ज नहीं मिलेगा।
3	आपके लिए आज का दिन मध्यम रहेगा।	11	आपकी मित्र के साथ बनना कठिन है।
4	आपके लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।	12	आपकी मानसिक चिन्ता बढ़ जायेगी।
5	इस समय कुआं बनने में रुकावटें ज्यादा है।	13	आपको व्यापार में लाभ कठिनाई से मिलेगा।
6	आपका भाइयों से मेल-मिलाप अच्छा रहेगा।	14	अभी आपका तबादला होने में सन्देह है।
7	आपको यात्रा में लाभ रहेगा।	15	आपके स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
8	परदेशी अभी आने में सन्देह हैं।	16	बीमार व्यक्ति शीघ्र ही अच्छा होगा।

शेष

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपके सम्बन्धी आपको धोखा नहीं देगा।	9	आपको यात्रा से विशेष लाभ नहीं मिलेगा।
2	आपको स्त्री तेज स्वभाव की मिलेगी।	10	परदेशी शीघ्र वापस आ जायेगा।
3	आपकी इच्छा पूरी होने में सन्देह है।	11	आपको खोयी वस्तु मिलने में सन्देह है।
4	आपके कन्या सुख में वृद्धि होगी।	12	आपको इस समय कर्ज नहीं मिलेगा।
5	आपके लिए आज का दिन मध्यम रहेगा।	13	आपकी मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
6	आपके लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।	14	आपकी चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
7	इस समय कुआं बनाने में आकस्मिक विघ्न-बाधा आयेगी।	15	आपको व्यापार से लाभ मिलेगा।
8	आपकी भाइयों से बननी मुश्किल रहेगी।	16	आपके तबादले की इच्छा विलम्ब से पूर्ण होगी।

तक्षक

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपको स्त्री सरल स्वभाव की मिलेगी।	9	परदेशी के आने में वक्त लग सकता हैं।
2	आपकी इच्छा जल्द पूरी होगी।	10	आपको खोयी वस्तु विलम्ब से मिलेगी।
3	आपको संतान सुख प्राप्त होगा।	11	आपको कर्ज मिलने में विलम्ब होगा।
4	आपके लिए आज का दिन शुभ रहेगा।	12	आपकी मित्र के साथ नही बनेगी।
5	आपके लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा।	13	आपकी चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
6	कुआं इस समय बन जायेगा।	14	आपको व्यापार से विशेष लाभ नहीं मिलेगा।
7	आपकी भाइयों से अनबन रहेगी।	15	आपकी तबादले की इ९च्छा जल्द पूरी होगी।
8	आपको यात्रा में लाभ मिलने में कठिनाई होगी।	16	आपके स्वप्न का फल उत्तम होगा।

काम

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	स्त्री आपसे गोपनिय प्रेम करती है।	9	आपकी भाइयों से साधारण बनेगी।
2	आपके सम्बन्धी से धोखे की उम्मीद कम है।	10	आपको यात्रा से लाभ मिलेगा।
3	आपकी स्त्री सरल स्वभाव होगी।	11	परदेशी अभी नहीं आयेगा।
4	आपकी इच्छा जल्द पूरी होगी।	12	आपको खोयी वस्तु मिल जायेगी।
5	आपको संतान सुख प्राप्त होगा।	13	आपको इस समय कर्ज मिल जायेगा।
6	आपके लिए आज का दिन शुभ नहीं है।	14	आपकी मित्र के साथ नहीं बनेगी।
7	आपके लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा।	15	आपकी चिंता शीघ्र मिट जायेगी।
8	गृह-निर्माण की कामना जल्द पूरी होगी।	16	आपको व्यापार में हानि होगी।

काल

संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपकी तीर्थ यात्रा अभी नहीं होगी।	9	कुआँ बननें में विलम्ब होगा।
2	स्त्री आपसे सच्चा प्रेम करती है।	10	आपका भाइयों से मेल कम रहेगा।
3	सम्बन्धी आपको धोखा दे सकता है।	11	आपको यात्रा से लाभ नहीं रहेगा।
4	आपको स्त्री प्रतिकूल स्वभाव की मिलेगी।	12	परदेशी अभी नहीं आयेगा।
5	आपकी इच्छा पूरी होने में विलम्ब होगा।	13	आपको खोयी वस्तु मिलना कठिन है।
6	कन्या सुख में वृद्धि होगी।	14	आपको इस समय कर्ज मिलने में सन्देह है।
7	आपके लिए आज का दिन शुभ रहेगा।	15	आपकी मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
8	आपके लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।	16	आपकी चिंता कुछ समय बाद मिटेगी।

अनन्त			
संख्या	प्रश्न फल	संख्या	प्रश्न फल
1	आपकी मन्दिर बनवाने की इच्छा पूरी होगी।	9	आपके लिए यह वर्ष मध्यम है।
2	आप तीर्थ यात्रा कर सकोगे।	10	आपकी कुएँ के निर्माण की इच्छा शीघ्र पूरी होगी।
3	स्त्री आपसे विशेष प्रेम नहीं करती है।	11	आपकी भाइयों से नहीं बनेगी।
4	सम्बन्धी आपको धोखा नहीं देगा।	12	आपको यात्रा से लाभ मिलेगा।
5	आपको स्त्री उत्तम स्वभाव की मिलेगी।	13	परदेशी जल्द आ जायेगा।
6	आपकी इच्छा जल्द पूरी होगी।	14	आपको खोयी वस्तु नहीं मिल सकेगी।
7	आपको संतान सुख प्राप्त होगा।	15	आपको इस समय कर्ज शीघ्र मिल जायेगा।
8	आपके लिए आज का दिन शुभ नहीं है।	16	आपकी मित्र से अनबन रहेगी, सावधान।

गणेश जी की कथा

पोराणिक कथा के अनुशार एक नगर में एक बहुत ही ग़रीब और अंधी बुढ़िया थी। बुढ़िया का एक बेटा और बहू थे। वह बुढ़िया नियमित गणेश जी की पूजन किया करती थी। एक दिन गणेश जी उसकी पूजा से प्रस्न्न हो कर उसके सामने प्रकट होकर बुढ़िया से बोले मैं तुम्हारी पूजा से प्रसन्न हुँ मां! तू जो चाहे सो मांग ले।

बुढ़िया गणेश जी से बोली मुझसे तो मांगना नहीं आता। कैसे और क्या मांगू?' तब गणेशजी बोले अपने बहू-बेटे से पूछकर मांग ले।

तब बुढ़िया ने अपने बेटे से कहा- 'गणेशजी कहते हैं तू कुछ मांग ले बता मैं क्या मांगू?

पुत्र ने कहा- मां! तू धन मांग ले।

बहू से पूछा तो बहू ने कहा- नाती मांग ले।

तब बुढ़िया ने सोचा कि ये तो अपने-अपने मतलब की बात कह रहे हैं।

अतः उस बुढ़िया ने पड़ोसिनों से पूछा, तो उन्होंने कहा- बुढ़िया! तू तो थोड़े दिन जीएगी, क्यों तू धन मांगे और क्यों नाती मांगे।

तू तो अपनी आंखों की रोशनी मांग ले, जिससे तेरी ज़िन्दगी आराम से कट जाए।

इस पर बुढ़िया बोली- यदि आप प्रसन्न हैं, तो मुझे नौ करोड़ की माया दें, निरोगी काया दें, अमर सुहाग दें, आंखों की रोशनी दें, नाती दें, पोता, दें और सब परिवार को सुख दें और अंत में मोक्ष दें।

यह सुनकर तब गणेशजी बोले- मां! तुने तो हमें ठग दिया।

फिर भी जो तूने मांगा है वचन के अनुसार सब तुझे मिलेगा। और यह कहकर गणेशजी अंतर्धान हो गए।

उधर बुढ़िया मां ने जो कुछ मांगा वह सबकुछ मिल गया।

हे गणेशजी! जैसे आपने उस बुढ़िया मां को सबकुछ दिया, वैसे ही सबको देना।

भविष्य ज्ञान के लिए रमल प्रश्नावली

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

विधि: रमल प्रश्नावली से प्रश्न का उत्तर जान ने का तरीका है कि चंदन की लकड़ी का चौकोर पासा बनाकर उस पर 1, 2, 3, 4 अंकित करा लें। फिर अपने संबंधित प्रश्न का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें। फेके हुवे पासे के उसका जो अंक आये, उसी अंक पर अपने प्रश्न का फल देखें। यदि किसी कारण पासा नहीं हो तो, यहां दर्शायी गई सारणी में अनामिका अंगुली रखकर अपने प्रश्नों का फल जान सकते हैं।

111	131	211	231	311	331	411	431
112	132	212	232	312	332	412	432
113	133	213	233	313	333	413	433
114	134	214	234	314	334	414	434
121	141	221	241	321	341	421	441
122	142	222	242	322	342	422	442
123	143	223	243	323	343	423	443
124	144	224	244	324	344	424	444

111. आपकी मनोकामना शीघ्र पूर्ण होगी।

112. कोई महत्वपूर्ण कार्य करने से पूर्व अपने निर्णय पुर्विचार कर लें।

113. कठिन परिश्रम के बाद गया धन पुनः प्राप्त होगा।

114. पूर्ण विश्वास से सुख की प्राप्ति होगी।

121. अपना चरित्र साफ रखें एवं अनुचित कर्म से बचे।

122. समय शीघ्र बदलने वाला है। इष्ट उपासना करें।

123. किसी निर्णय को लेने से पूर्व अच्छितरह सोच-विचारलें। अन्यथा नुक्शान संभव हैं।

124. प्रतिकूल परिस्थिति में अपना संयम एवं धैर्य बनाये रखे। सफलता जरूर मिलेगी।

131. वास्तविकता में जीवन जीये व अपनी भावुकता पर नियंत्रण रखें।

132. कलकी चिंता छोड़कर वर्तमान में जीने का प्रयास करें।

133. सब्र का फल मीठा होता है। कर्मों का फल अवश्य प्राप्त होगा।

134. सच्चाई और ईमानदारी से अपने भाग्य को उज्जवल बनाये।

141. अपने इष्ट पर भरोसा रखे आपके शुभ दिन जल्द आने वाले है।

142. अच्छे कर्म करें फल भी अच्छा मिलेगा।

143. नीति और रीति से कार्य करें सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

144. धन लाभ उत्तम रहेगा, सत्कर्म करते रहें।

211. जल्दबाजी से बचे व किसी महत्वपूर्ण निर्णय पर सोच-विचार कर ही फैसला लें।

212. घर की सुख-समृद्धि बढ़ेगी।

213. घर-परिवार में जल्द मांगलिक कार्य होगें। विधिवत इष्ट आराधना करते रहें।
214. अच्छे कर्म करते रहे जल्द ही आपके भाग्य का सितारा बुलंदियों पर होगा।
221. माता-पिता एवं बड़े बुजुर्गोंकी सेवाकरें धन लाभ होगा।
222. जरुरत मंद की सहायता करें। भाग्य उज्जवल होगा।
223. नियमित देवी उपासना करें, औरतों का सम्मान करें सकल कार्य सिद्ध होगा।
224. पूरानी परेशानियों से जल्द छुटकारा मिलने वाला हैं।
231. दृढ़ निश्चिय से अपने कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करें सफलता निश्चिन्त मिलेगी।
232. अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें, अन्यथा हानी संभव हैं।
233. इष्ट आराधना करते रहें, आपके सारे कष्ट जल्द दूर हो जायेंगे।
234. प्रियजनो का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।
241. आँख मूंद कर किसी पर भरोंसा मत करें, बड़ा नुक्शान उठाना पड़ेगा।
242. नकारात्मक विचारों को छोड़ कर सकारात्म सोच अपनाये कार्य सफल होगें।
243. उचित समय पर उचित निर्णय लेने में सक्षम बने अपको सभी प्रकार के सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।
244. अपने कार्य को पूर्ण ईमानदारी से करें, सफलता अवश्य मिलेगी।
311. ईश्वर पर भरोसा रखें आपका कार्य सफल होगा।
312. दुर्बुद्धि व दुष्ट विचारधारा वाले लोगों से सावधान रहें, यहं लोग आपका इस्तमाल कर सकते हैं।
313. आपकी इच्छा पूर्ण होगी।
314. जीवन में सकारात्मक द्रष्टि कोण अपनाये अवश्य सफलता मिलेगी।
321. आर्थिक लाभ मिलने की प्रबल संभावना हैं।
322. समय प्रतिकूल हैं, थोड़ा इन्तजार करें।
323. प्रियजनों की भावनाओं का सम्मान करें सफलता मिलेगी।
324. अपनों के बिच में रहकर कार्य करें, सफलता मिलेगी।
331. शत्रु पक्ष से सावधान रहें, आप पर गुप्त वार हो सकता हैं।
332. आपके सभी कार्य शीघ्र पूर्ण होंगे संदेह न करें।
333. समय शुभ हैं महत्वपूर्ण निर्णय से आपको विशेष लाभ की प्राप्ति होगी।
334. एकाग्रचित्त से अपने कार्य को संपन्न करें, अधिक लाभ की प्राप्ति होगी।
341. शत्रु पर विजय प्राप्त होगी।
342. सफलता की दौड़ में अपनो की अवहेलना न करें, अन्यथा भाग्य साथ छोड देगा।
343. बुराईयोंको दूरकरें व अपनी विचारधारा को शुद्ध रखें।
344. आपको जल्द ही इष्ट कृपा से लाभ की प्राप्ति होगी।
411. आपके भौतिक सुख साधन एवं धन-सम्पत्ति में वृद्धि होगी।
412. आपके उचित व्यवहार से आपके कार्य सिद्ध होगें।
413. किसी भी कार्य में अति आत्मविश्वास अच्छा नहीं हैं इसलिए दोबारा सोच कर निर्णय लें।
414. आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होगी।
421. आपको कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।
422. इस समय किसी कार्य में बड़ जोखिम नहीं उठायें।
423. भाग्य आपके साथ हैं, आपके सभी कार्य सफल होगें।
424. अपने कार्य में लापरवाहीं नहीं रखें, अन्यथा प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
431. किसी कार्य में जल्दबाजी अच्छी नहीं हैं, धैर्य रखें।
432. मौके का फायदा उठाये परिस्थिती अनुकूल हैं।
433. सावधानी से कार्य करें, सफलता मिलेगीं।
434. प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।
441. शुभ कर्मो का फल जल्द ही मिलने वाला हैं।
442. सतर्क रहकर कार्य करें शत्रुओं पर विजय मिलेगी।
443. शीघ्र ही अच्छा समय आनेवाला हैं।
444. आपका कार्य सफल होगा, अपने इष्ट पर भरोसा रखें।

श्री हनुमान प्रश्नावली

✍ स्वस्तिक.ऎन.जोशी

विधिः श्री राम भक्त श्री हनुमान जी का ध्यान कर अपने प्रश्न को मन में दोहरायें। फिर दर्शाई गई सारणी पर तर्जनी अंगुली घुमाते हुवे प्रश्न का स्मरण करते हुवे किसी एक अक्षर पर अंगुली रखें। जो अक्षर आये उसे अपने प्रश्न का अभिष्ट उत्तर समझे और प्रश्न फल तालिका में उसको पढ़ें।

अ	आ	य	ष	न	क्ष	क	ख
प	इ	ई	ह	त्र	ग	घ	ध
र	म	उ	ऊ	ड	च	थ	द
श	छ	ज	ए	ऐ	ण	त	फ
झ	ञ	ङ	ढ	ओ	औ	स	व
ब	ट	ठ	ज्ञ	ल	अं	अः	भ

प्रश्न फल तालिका

अ:- समय उत्तम हैं सभी शुभ कार्यों में निश्चित सफलता मिल सकती हैं।

आ:- संयम और धैर्य बनाये रखं, कार्य पूर्ण होने में समय लग सकता हैं।

इ:- आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी, सभी क्षेत्रों में लाभ मिल सकता हैं।

ई:- समय प्रतिकूल हैं कोई भी निर्णय लेने से पूर्व उस पर अच्छि तरह विचार करलें।

उ:- कार्य क्षेत्र में उत्तम सफलता प्राप्त होगी। दान पुण्य लाभप्रद रहेगा।

ऊ:- स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पारिवारीक जीवन में सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

ए:- किसी पर आखँ मूंद कर भरोसा करना नुक्शान देने वाला होगा, सतर्क रह कर निर्णय लें।

ऐ:- व्यवहार कूशल रहें, लापरवाहि आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा भंग कर सकती हैं।

ओ:- पारिवारीक समस्याओं से ग्रस्त रहेंगे। मानसिक अशांति बढ़ सकती हैं, इष्टदेव का पूजन करें।

औ:- संतान संबंधित समस्याएं आपको परेशान कर सकती हैं।

अं:- पुरानी समस्याएं दूर होगी, शुभ समय आने वाला हैं, मौके का फायदा उठायें।

क:- आपको व्यापार से विशेष लाभ होगा । अच्छा समय आने वाला है ।

ख:- धन लाभ मिलेगा हैं । शुभ समय का आगमन होगा।

ग:- विदेश यात्रा लाभ प्रद रहेगी। धन में वृद्धि सामाजिक यश बढ़ेगा।

घ:- निकट के भविषय में शुभ समय आने वाला हैं।

ङः- समय प्रतिकूल हैं, इष्ट आराधना से राहत मिलेगी।

चः- शीघ्र ही शुभ समाचार की प्राप्ति होगी । चिंता दूर होगी।

छः- प्रियजनो के सहयोग से लाभ मिलेगा ।

जः- किसी माध्य में आकस्मिक धन लाभ हो सकता है ।

झः- दूरस्थ स्थान की यात्रा हेतु समय अनुकूल नहीं हैं। एक माह प्रतिक्षा करें।

जः- कोर्ट-कचहरी के कार्य में सफलता मिलेगी।

टः- किसी से अनावश्यक वाद-विवाद से दूर रहें, समय प्रतिकूल हैं।

ठः- मनोकामना शीघ्र पूर्ण होगी । इष्ट आराधना करें।

डः- पूरानी परेशानियों से छुटकारा मिलेगा।

ढः- समय प्रतिकूल है, एक वर्ष तक जोखिम भरे निर्णयों से दूर रहें, दान-पुण्य करते रहे जल्द समय बदलेगा।

णः- किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय विशेष सावधान रहें समय प्रतिकूल हैं।

तः- समय विपरित है, किसी से वाद-विवाद में उलझे नहीं इष्ट आराधना करें ।

थः- दूरस्थान से लाभ प्राप्त हो सकता हैं, पारिवारीक समस्याएं कष्ट प्रद रहेगीं।

दः- समय मध्य हैं, स्थान परिवर्तन लाभ प्रद हो सकता हैं।

धः- राजकिय कार्य से कष्ट होने की संभावना हैं, सावधान रहें।

नः- स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं परेशान कर सकती हैं। लापरवाही नुक्शान देह हो सकती हैं।

पः- समय उत्तम हैं मौके का फायदा उठाये अधिक मात्रा में लाभ प्राप्त होगा।

फः- आकस्मिक धन लाभ हो सकता हैं, कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

भः- समय अनुकूल हैं, अपना कर्म करते रहे अवश्य सफलता मिलेगी।

मः- कार्यक्षेत्र में विशेष लाभ की प्राप्ति होगी। समय अनुकूल रहेगा।

यः- पुरानी परेशानीयों से मुक्ति मिलेगी, स्वजनो का सहयोग प्राप्त होगी।

रः- जल्द ही शुभ समय आने वाला हैं। नियमित अपने ईष्ट देवका पूजन करें।

लः- समय अनुकूल हैं, आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होगी।

वः- बहुमूल वस्तुओं को संभालकर रखें, आकस्मिक दुर्घटनाएं संभव हैं अतः आप तीन माह तक सावधान रहें ।

शः- स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं हो सकती हैं, सावधान रहें।

षः- शुभ समाचार की प्राप्ति होगी, अपनों से व्यवहार कूशल रहें।

सः- पारिवारीक सुख में वृद्धि होगी, अविवाहित हैं तो विवाह संभव हैं।

हः- कठिन परिश्रम के उपरांत सफलता प्राप्त होगी।

क्षः- कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होगी।

त्रः- कार्यक्षेत्र में परिश्रम के अनुरुप फल प्राप्त होगें। इष्ट आराधना लाभप्रद रहेगी।

ज्ञः- समय अनुकूल हैं, भविष्य उज्जवल रहेगा, अपनो से संबंध बनाये रखें।

श्री कृष्ण शलाका प्रश्नावली

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

विधि: श्रीकृष्ण का ध्यान कर अपने प्रश्न को मन में दोहरायें। फिर ऊपर दी गई सारणी में से किसी एक अक्षर पर अंगुली रखें। अब उससे अगले अक्षर से क्रमशः बारहवें अक्षर को लिखते जायें जब तक पुनः उसी जगह नहीं पहुँच जायें। इस प्रकार एक चौपाई बनेगी, जो अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी।

यहां हमने आपकी अनुकूलता हेतु बारहवें अक्षर के कोष्टक को एक समान रंग में रंगने का प्रयास किया हैं जिससे आपको हर बारहवें अक्षरको गिनती करने की आवश्यक्ता न रहें आप सीधे एक समान रंगो के कोष्टक में लीखे अक्षरोको मिलाले/लिख ले और जो चौपाई बने उस चौपाई को भी देखने में आपको आसानी हो इस उद्देश्य से उसी रंग में रंगने का प्रयास किया हैं।

मि	भ	म	ह	हो	अ	त	वि	कि	क	का	मि	लि	ा	न	रि	इ	स
न	धि	ये	ह	म	ल	ह	गि	अ	इ	ह	फ	म	वि	सु	ध	न	त
हि	तु	नु	च्छा	हु	ल	न	धा	कृ	र्म	हो	न	तु	म्हा	कू	ह	स	हो
क	न	त	ज	ई	शा	म	रि	ल	रि	फ	इ	र	क	ब	जे	अ	न्ति
हिं	न	स	स	ल	नि	ज	र	हु	हि	स	कु	वि	जा	दा	न	स	र
हं	उ	पा	प	म	सं	ज	य	हो	न	दा	ा	मे	ल	व	र	भ	ग
य	ब	इ	हिं	स	श	ल	ट	त	त	व	ति	र	ख	ज	पू	ब	न
न	न	न	व	को	म	न	ा	ा	छ	ठ	ह	हो	ह	ा	दा	ई	ा
म	नी	ई	ा	ा	ो	ई	ा	हीं	या	स	हीं	ा	ध	वि	हो	हीं	ई
ब	रा	व	स	ा	नि	हीं	न्य	धि	इ	न	स	न	न	ह	ह	ह	त
जी	न	वि	ह	हीं	फ	त	हीं	ग	ज	स	न	ति	को	धा	हु	त	ल
क	स	ति	हीं	क	व	न	उ	न	अ	नि	ह	ा	म	द	सु	र	व्या
स	तु	मे	व	क	ो	ज	र्थ	ी	ल	इ	धि	क	म	ह	सि	सं	त
क	को	न	भ	ल	ग्र	त	स	य	म	श	सं	ह	उ	अ	वि	ह	स
इ	म	ह	नो	य	श	त	य	ा	ज	इ	त	न्द्र	ज	न	र	य	य
स	हि	जु	य	फ	न	हू	ग	हिं	थ	हि	न	ब	सं	ते	य	ल	र
च	प्र	भ	छू	म	हीं	क	स	हि	दु	स	क	ा	ा	ा	छ	ा	को
ो	ा	का	रा	ो	ा	हीं	नी	ई	ो	हीं	ई	ई	रा	हीं	या	ई	हीं

1. तन मन कर जहं मेल न होई। बनत काज कहत सब कोई।। फलः- भारतकाण्ड में गान्धारी अपने पुत्र को समझा रही है। फल उत्तम नहीं है। कार्य में पूर्ण रुप से मन नहीं लग रहा है। इससे अभीष्ट कार्य के सिद्ध होने में संदेह है।
2. मन अनुकूल सदा होइ जाई। विधि विधान में यह नहीं भाई।। फलः- द्वारकाकाण्ड में जरासन्ध शिशुपाल को रुकमणी स्वयंवर के समय हार जाने पर समझा रहे है। इसका फल मध्यम है। किसी अभीष्ट की आशंका तो नहीं है, परन्तु अभीष्ट कार्य की सिद्धि भी नहीं होगी।
3. हरि इच्छा हरिसन नहीं पूछा। होइहहु अवसि मनोरथ छूछा।। फलः- स्वर्गारोहण काण्ड में बिना भगवान् श्रीकृष्ण से पूछे ऋषियों का शाप से साम्ब के पेट से निकले मूसल को चूर्ण करके समुद्र में फेंक दिया था। इसका फल खराब है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि कभी भी नहीं होगी।
4. होइहहु सफल सदा सब ठांही। नहीं तनिक संशय यहि माहीं।। फलः- यह चौपाई भीष्म पितामह के राजनीतिक उपदेश के ज्ञान-काण्ड में है। प्रश्न-फल उत्तम है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि अवश्य होगी।
5. यह चौपाई उस समय की है, जब श्रीकृष्ण ने अपने सखाओं को समझाकर ब्रजकाण्ड में भोजन हेतु द्विज-पत्नियों के पास भेजा था। फल सामान्य है। निरन्तर प्रयत्न करने से ही फल मिलना सम्भव है।
6. भागि तुम्हारि न जाय बखानी। धन्य न कोउ तुम सम जग प्रानी।। फलः- भारत-काण्ड में इसको सूर्य-ग्रहण के अवसर पर एकत्रित हुए राजा-महाराजा उग्रसेन से कहते हैं। यह फल उत्तम है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी।
7. विधि विधान कर उलटन हारा। नहीं समर्थ कोउ यहि संसारा।। फलः- मथुरा काण्ड में अक्रूर के समझाने पर धृतराष्ट्र का कथन है। प्रश्न-फल सामान्यतया उत्तम नहीं है, अभीष्ट कार्य की सिद्धि पाना सन्देहास्पद लगती है।
8. किये सुकृत बहु पावत नाहीं। वह गति दीन आजु तेहि काहीं।। फलः- स्वर्गारोहण काण्ड में भगवान् श्रीकृष्ण अपने पैर के तलवे में बाण मारने वाले व्याध को शुभ गति दे रहे हैं। प्रश्न-फल अतीव श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि शीघ्र ही मिलेगी।
9. कह धर्मज जेहि पर तव दाया। सहजहीं सुलभ विजय यदुराया।। फलः- भरतकाण्ड में भीष्म पितामह के रथ से गिर जाने पर युधिष्ठिर भगवान् श्रीकृष्ण से कह रहे हैं। प्रश्नफल श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी।
10. काम न होई असंभव कोई। साहस करइ लहइ फल सोई।। फलः- ब्रजकाण्ड में भगवान् कृष्ण ब्रजवासियों से वृषभासुर द्वारा भयभीत होने पर कह रहे हैं। प्रश्नफल सामान्यतया उत्तम है। साहस पूर्वक निरन्तर प्रयत्न करने पर ही अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी।
11. मिलत न शांति कुसंगति माहीं। नित नव व्याधि ग्रसत नर काहीं।। फलः- भरतकाण्ड में धृतराष्ट्र के दरबार में जाकर भगवान् श्रीकृष्ण दुर्योधन को संधि के लिए समझा रहे हैं। प्रश्नफल अत्यन्त नेष्ट है। अभीष्ट कार्य के अतिरिक्त अनिष्ट होने की संभावना भी है।
12. मिलहहिं तुमहि विजय रन माहीं। जीति न सकत इन्द्रहू चाहीं।। फलः- युद्ध के लिए तैयार अर्जुन ने जब भगवती दुर्गा देवी की स्तुति की तो भगवती दुर्गा ने उन्हें आशिर्वाद दिया। यह उसी समय की चौपाई है। प्रश्न-फल अतीव श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य की शीघ्र सिद्धि ही मिलेगी।

पर्यूषण का महत्व

चिंतन जोशी

॥ मिच्छामी दुक्कडम् ॥

जैन धर्म के अनुयायी पर्यूषण पर्व को जीव की आत्म शुद्धि का मार्ग बताते हैं। जैन मुनिजनो के अनुसार पर्यूषण पर्व इष्ट आराधना और क्षमा का पर्व भी हैं। पर्यूषण को मुख्यत: मनुष्य के पुननिर्माण का द्योतक मानाजाता हैं। पर्यूषण में मनुष्य अपने भितर की विकृतियों का त्याग करता हैं।

पर्यूषण के दिनों में श्रावक-श्राविकाएं ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोज त्याग, सचित्त का त्याग रखते हैं। व्रत-उपवास, सामयिक-प्रतिक्रमण, प्रवचन-श्रवण आदि के माध्यम से इन दिनों अधिक से अधिक समय धर्म ध्यान में व्यतीत किया जाता हैं।

पर्यूषण के दिन श्रावक-श्राविकाएं उपवास रखते हैं और स्वयं के पापों की आलोचना करते हुए भविष्य में उनसे बचने की प्रतिज्ञा करते हैं। इसके साथ ही वे चौरासी लाख योनियों में विचरण कर रहे, समस्त जीवों से क्षमा माँगते हुए यह सूचित करते हैं कि उनका किसी से कोई बैर नहीं है।

श्रावक-श्राविकाएं परोक्ष रूप से वे यह संकल्प करते हैं कि वे प्रकृति में कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगे। मन, वचन और काया से जानते या अजानते वे किसी भी हिंसा की गतिविधि में भाग न तो स्वयं लेंगे, न दूसरों को लेने को कहेंगे और न लेने वालों का अनुमोदन करेंगे। यह आश्वासन देने के लिए कि उनका किसी से कोई बैर नहीं है, वे यह भी घोषित करते हैं कि उन्होंने विश्व के समस्त जीवों को क्षमा कर दिया है और उन जीवों को क्षमा माँगने वाले से डरने की जरूरत नहीं है।

क्षमा देने से मनुष्य अन्य समस्त जीवों को अभयदान देते हैं और उनकी रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। तब व्यक्ति संयम और विवेक का अनुसरण करेंगे, आत्मिक शांति अनुभव करेंगे और सभी जीवों और पदार्थों के प्रति मैत्री भाव रखेंगे। आत्मा तभी शुद्ध रह सकती है जब वह अपने सेबाहर हस्तक्षेप न करे और बाहरी तत्व से विचलित न हो। क्षमा-भाव जैन धर्म का मूलमंत्र है।

जैन धर्म में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा में आठ दिनों तक "कल्पसूत्र" पढ़ा व सुना जाता हैं। जबकि जैन धर्म में स्थानकवासी परम्परा में आठ दिनों तक "अन्तकद्दशा सूत्र" का वाचन किया जाता हैं।

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 255 से 10900 तक**

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुशार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 730 से 10900 तक**

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ORISSA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	460	1” X 1”	370	1” X 1”	255
2” X 2”	820	2” X 2”	640	2” X 2”	460
3” X 3”	1650	3” X 3”	1090	3” X 3”	730
4” X 4”	2350	4” X 4”	1650	4” X 4”	1090
6” X 6”	3600	6” X 6”	2800	6” X 6”	1900
9” X 9”	6400	9” X 9”	5100	9” X 9”	3250
12” X12”	10800	12” X12”	8200	12” X12”	6400

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‍भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‍भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुशार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 730 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध

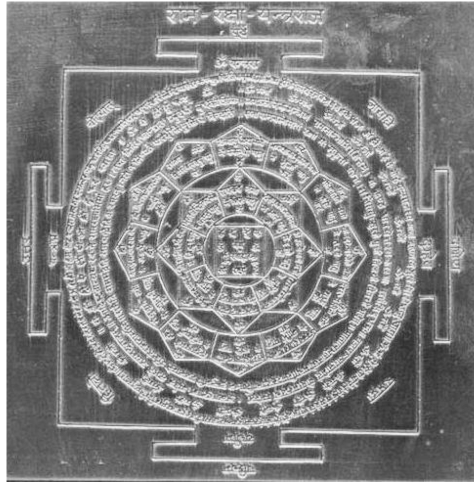
राम रक्षा यंत्र

राम रक्षा यंत्र सभी भय, बाधाओं से मुक्ति व कार्यो में सफलता प्राप्ति हेतु उत्तम यंत्र हैं। जिसके प्रयोग से धन लाभ होता हैं व व्यक्ति का सर्वांगी विकार होकर उसे सुख-समृद्धि, मानसम्मान की प्राप्ति होती हैं। राम रक्षा यंत्र सभी प्रकार के अशुभ प्रभाव को दूर कर व्यक्ति को जीवन की सभी प्रकार की कठिनाइयों से रक्षा करता हैं। विद्वानो के मत से जो व्यक्ति भगवान राम के भक्त हैं या श्री हनुमानजी के भक्त हैं उन्हें अपने निवास स्थान, व्यवसायीक स्थान पर राम रक्षा यंत्र को अवश्य स्थापीत करना चाहिये जिससे आने वाले संकटो से रक्षा हो उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो सके एवं उनकी समस्त आदि भौतिक व आध्यात्मिक मनोकामनाएं पूर्ण हो सके।



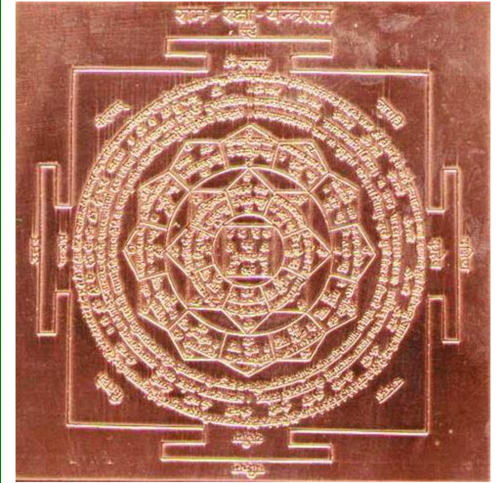
ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस

(Gold Plated)



ताम्र पत्र पर रजत पोलीस

(Silver Plated)



ताम्र पत्र पर

(Copper)

साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	460	1” X 1”	370	1” X 1”	255
2” X 2”	820	2” X 2”	640	2” X 2”	460
3” X 3”	1650	3” X 3”	1090	3” X 3”	730
4” X 4”	2350	4” X 4”	1650	4” X 4”	1090
6” X 6”	3600	6” X 6”	2800	6” X 6”	1900
9” X 9”	6400	9” X 9”	5100	9” X 9”	3250
12” X12”	10800	12” X12”	8200	12” X12”	6400

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र
(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं।

मूल्य:- Rs. 1650 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध

संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

मासिक राशि फल

चिंतन जोशी

मेष: 1 से 15 सितम्बर 2012 : भूमि-भवन-वाहन से संबंधित कार्यो में लाभ प्राप्त होगा। व्यवसायिक **यात्रा में सफलता प्राप्त हो सकती है। व्यय पर नियन्त्रण रखने से लाभ प्राप्त होगा। शत्रु पक्ष से सावधान रहें आप पर झूठे आरोप लग सकते है। शत्रुओं पर आपका प्रभाव रहेगा। आपके विरोधी एवं शत्रु पक्ष परास्त होंगे। आपका सामाजिक जीवन उच्च स्तर का हो सकता हैं।**



16 से 30 सितम्बर 2012 : आपकी आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। नौकरी, व्यवसाय में आप अपने कार्य का अच्छा प्रदर्शन करने में समर्थ होंगे। पूर्ण परिश्रम एवं कड़ी मेहनत से किये गये कार्यो में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पैतृक धन-संपत्ति की प्राप्ति हो सकती हैं। महत्वपूर्ण एवं घरेलू मामलो में चुनौतीओं का सामना करना पड सकता हैं। प्रेम संबंधित मामलो में भी सफलता प्राप्त कर सकते है।

वृषभ: 1 से 15 सितम्बर 2012 : अनाचश्यक खर्च करने से बचे अन्यथा बडा आर्थिक नुकसान हो सकता हैं। साझेदारी से धनलाभ की प्राप्ति होगी। उन्नति के लिए आपको अपनी महत्वपूर्ण योजनाओं को यथा शीघ्र अमल में लाना चाहिए। अन्यथा आपके प्रतियोगी आपसे आगे निकल सकते हैं। नए व्यावसायिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। जीवनसाथी का स्वास्थ्य चिंताजनक हो सकता हैं।



16 से 30 सितम्बर 2012 : यदि नौकरी कर रहे हैं तो पदौन्नति के योग हैं। व्यवसाय से जुडे हैं तो विशेष रुप से आपको किसी स्त्रोत से आकस्मिक धन प्राप्ति होने के योग बन रहे हैं। अपनी आय में वृद्धि कर अपने पुराने ऋण का भुगतान करने के लिए उत्तम समय साबित हो सकता हैं। परिवार के लोगो के लिए विशेष रुप से खर्च करना पड सकता हैं। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा।



मिथुन: 1 से 15 सितम्बर 2012 : समय आपके लिए उत्तम साबित हो सकता हैं। व्यवसायीक कार्यो में विलंब हो सकता हैं। इष्ट मित्रो एवं प्रियजनो से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता हैं। भूमि-भवन इत्यादि कार्यो में विशेष लाभ प्राप्ति हो सकती हैं। परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य आपकी चिंता का विषय हो सकता हैं। परिवार के पुराने वाद-विवादो को जल्द सुलझाने का प्रयास करें।

16 से 30 सितम्बर 2012 : उत्तम वाहन सुख के योग बन रहे हैं। नौकरी में पदौन्नति के योग बन रहे हैं। व्यवसाय में आकस्मिक धनलाभ प्राप्त हो सकता हैं। शत्रु व विरोधी पक्ष परेशानी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। दूरस्थानो की व्यवसायीक यात्राएं आपके लिए लाभदायक हो सकती हैं। परिवार में सुख-शांति बनाए रखने का प्रयास करें।

कर्क: 1 से 15 सितम्बर 2012 : कार्यक्षेत्र में आपके आर्थिक लाभों में वृद्धि होने के योग बन रहे हैं। दांपत्य सुख में वृद्धि होगी। आपको शारीरिक कष्ट परेशान कर सकते हैं। समाज में आपके यश एवं कीर्ति की वृद्धि होगी। प्रेम संबंधो में सफलता एवं दांपत्य सुख में वृद्धि के योग हैं। शत्रु पक्ष से सावधान रहें आप पर झूठे आरोप लग सकते है।



16 से 30 सितम्बर 2012 : आपकी आय के स्त्रोत एक से अधिक बन सकते हैं। आपको दूरस्थ स्थानो की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। सरकार से विशेष लाभप्राप्त हो सकते हैं। आपकी महत्वपूर्ण योजनाएं सफल होने के योग हैं। नये लोगो से मित्रता होगी। अपने व्ययों पर नियन्त्रण रखने का प्रयास करें और ऋण लेने से बचे और पुराने ऋणों का भुगतान करने का प्रयास करे।

सिंह: 1 से 15 सितम्बर 2012 : कोर्ट-कचहरी के कार्यो में सफलता प्राप्त हो सकती हैं। किसी को दिया हुवा उधार धन वापस प्राप्त हो सकता हैं। अपने कार्यक्षेत्र में अपने प्रतिद्वंद्वीयों से आगे निकलने के लिए किसी महत्वपूर्ण योजना पर विशेष रुप से कार्य करना पड़ सकते हैं। अपने अनावश्यक खर्चो पर नियन्त्रण रखने का प्रयास करें। आपकि सामाजिक कार्यो में विशेष रुचि हो सकती हैं।



16 से 30 सितम्बर 2012 : नौकरी व्यवसाय से संबंधित समस्याओं का निवारण होगा। भूमि-भवन से सांबंधित कार्यो से लाभ प्राप्त हो सकते हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति के साधन प्राप्त हो सकते हैं। आपके विरोधी एवं शत्रु पक्ष परास्त होंगे। ऋण लेने से बचे और पुराने ऋणों का भुगतान करने का प्रयास करे। प्रेम संबंधों में सफलता प्राप्त हो सकती हैं। अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखे।

कन्या: 1 से 15 सितम्बर 2012 : छोटी-छोती व्यवसायिक समस्याओं के निवारण हेतु कर्ज लेना पड़ सकता हैं। आपके रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य पूरे हो सकते हैं। अपनी वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखे अन्यथा आपके बने बनाये कार्य बिगड सकते हैं। अपने खाने- पीने का ध्यान रखे अन्यथा आपका का स्वास्थ्य नरम हो सकता है। प्रेम संबंधों में सफलता प्राप्त हो सकती हैं।



16 से 30 सितम्बर 2012 : आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बन रहे है। नया व्यवसाय या नौकरी प्राप्त हो सकती हैं या आपके कार्य क्षेत्र में नये बदलाव हो सकते हैं। भूमि-भवन से संबंधिअ मामलो में लाभप्राप्ति हो सकती हैं। कोर्ट-कचहरी के कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती हैं। विपरीत लिंग के प्रति आपका विशेष झुकाव रहेगा। आपके विरोधी एवं शत्रु पक्ष परास्त होंगे।

तुला: 1 से 15 सितम्बर 2012 : अपने कार्यक्षेत्र में आप कड़ी मेहनत और परिश्रम से धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। अत्याधिक भागदौड़ के कारण आपको थकावट हो सकती हैं। विरोधी एवं शत्रु पक्ष से परेशानी हो सकती हैं। दूरस्थ स्थानों की यात्राएं लाभदायक सिद्ध होगी। जीवन साथी से रिश्तो में सुधार होगा। प्रेम संबंधित मामलो के लिए समय मिलाझुला साबित हो सकता हैं। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।



16 से 30 सितम्बर 2012 : आपकी महत्वपूर्ण योजनाए पूर्ण हो सकती हैं। नौकरी-व्यवसाय से संबंधित कार्यों के लिए यह समय आर्थिक लाभदेने वाला रहेगा। भूमि-भवन-वाहन से संबंधित कार्यो में लाभ प्राप्त होगा। अपनी अधिक खर्च करने कि प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने का प्रयास करें। आपके भौतिक सुख साधनो में वृद्धि होगी। जीवन साथी से पूर्णसहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक: 1 से 15 सितम्बर 2012 : आप कड़ी मेहनत और परिश्रम से धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। छोटी-छोटी समस्याए आने के उपरांत भी कामयाबी प्राप्त होगी। किसी से वाद-विवाद करने से बचे। समाज में अपना नाम और प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिये आपको पूर्ण योजनाबद्ध तरिके सेकार्य करना चाहिये। खाने-पीने का विशेष ध्यान रखे अन्यथा स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं हो सकती हैं।



16 से 30 सितम्बर 2012 : उच्चाधिकारियों से लाभ प्राप्त होगा। नौकरी-व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। जीवन साथी के साथ व्यवहार अच्छा रखे अन्यथा समस्याओं का सामना कर सकते हैं। मित्रों पर अंधाविश्वास करने के कारण आपके परिवर में विवाद बढसकते है। परिवार और रिश्तेदारों से आत्मियता के अनुभव में कमी रह सकती हैं।

धनु: 1 से 15 सितम्बर 2012 : भूमि-भवन-वाहन से संबंधित कार्यो में रुचि बढेगी। लेकिन इस दौरान इन चिजों में भारी मात्रा में निवेश करना नुक्शा कारक हो सकता हैं। आपके भौतिक सुख-साधनो में वृद्धि होगी। संतान पक्ष के प्रति चिंता रहेगी। जीवन साथी के साथ वैचारिक मतभेद संभव हैं। धार्मिक यात्रा या दूरस्थ स्थानो की यात्रा होने के योग हैं। प्रेम संबंधित मामलो में अनबन हो सकती हैं।



16 से 30 सितम्बर 2012

नौकरी-व्यवसाय में धन लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। कोर्ट-कचहरी के कार्यो में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपके जोश एवं उत्साह में वृद्धि होगी। आपके सामाजिक मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नये लोगो की मित्रता से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य कमजोर हो सकता हैं। जीवनसाथी से साथ व्यवहार कूशल रहें।

मकर: 1 से 15 सितम्बर 2012 : नौकरी व्यवसाय में महत्वपूर्ण कार्यो को कुशलता से पूरा करने का प्रयास करें। व्यय पर नियन्त्रण रखने से लाभ प्राप्त होगा। भूमि- भवन-वाहन के क्रय-विक्रय से लाभ प्राप्त हो सकता हैं। अपने खाने-पीने का ध्यान रखे अन्यथा आपका का स्वास्थ्य नरम होसकता है। प्रेम संबंधित मामलो में अनबन हो सकती हैं लेकिन अल्प प्रयासो से संबंदो में सुधार होने लगेगा।



16 से 30 सितम्बर 2012 : परिवार के सदस्यों से छोटी-छोटी बातों में विवाद हो सकते हैं। ऋण देने से बचें अन्यथा धन की पुनः प्राप्ति में विलंब हो सकता हैं। आवश्यकता से अधिक संघर्ष करना पड सकता है। आपके सामाजिक मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके स्वास्थ्य में गिरावट हो सकती हैं। नये लोगो से मित्रता लाभप्रद हो सकती हैं।

कुंभ: 1 से 15 सितम्बर 2012 : कार्यक्षेत्र में आपकी कार्य शैली अत्याधिक सक्रिय हो जाएगी। आपको आकस्मिक धन की प्राप्ति हो सकती हैं। भूमि-भवन-वाहन की प्राप्ती हो सकती हैं। किसी से वाद-विवाद करने से बचे अन्यथा कोर्ट-कचहरी के चक्करों में उलझना पड सकता हैं। संतान पक्ष के प्रति विशेष चिंता रह सकती हैं। प्रेम संबंधित मामलो के लिए समय मिलाझुला साबित हो सकता हैं।



16 से 30 सितम्बर 2012 : आपको एकाधिक स्त्रोत से धनलाभ प्राप्त हो सकता हैं। प्रायः आपके सभी कार्य सुचारु रुप से पूर्ण होंगे। ऋण के लेन-देने से बचने का प्रयास करें अन्यथा धन की पुनः प्राप्ति-भुगतान में विलंब हो सकता हैं। प्रकृति में बदलाव से आपका स्वास्थ्य नरम रह सकता है। परिवार की सुख -शान्ति को बनाये रखने का प्रयास करें। थोडी से सावधाने से स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी।

मीन: 1 से 15 सितम्बर 2012 : व्यवासाय से जुडे हैं और साझेदारी की योजना बना रहे हैं तो समय प्रतिकूल साबित हो सकता हैं। इष्ट मित्रो के सहयोग से नये लोगो से मित्रता होगी। महत्वपूर्ण एवं घरेलू मामलो में चुनौतीओं का सामना करना पड सकता हैं। प्रेम संबंधित मामलों में समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। संयम में रहने का प्रयास करें। प्रकृति में बदलाव से आपका स्वास्थ्य नरम रह सकता है।



16 से 30 सितम्बर 2012 : कार्यक्षेत्र में जोखिम भरे कार्य करने से बचे क्योकि आपकी लापरवाही आपको लंबे समय का नुक्शान कर सकती हैं। आय से व्यय अधिक होने के योग बन रहे हैं। ऋण के लेन-देने से बचने का प्रयास करें अन्यथा धन की पुनः प्राप्ति-भुगतान में विलंब हो सकता हैं। व्यवसायिक यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी। जीवनसाथी के साथ संबंधों में सुधार होने के योग हैं।

सितम्बर 2012 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	शनि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	एकम	19:16:06	पू.भाद्रपद	30:10:29	धृति	25:40:29	बालव	07:17:59	कुंभ	23:57:00
2	रवि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	द्वितीया	19:39:06	पू.भाद्रपद	06:10:58	शूल	25:05:21	तैतिल	07:23:10	मीन	-
3	सोम	अ.भाद्रपद	कृष्ण	तृतीया	20:39:36	उ.भाद्रपद	07:29:17	गंड	24:57:24	वणिज	08:04:54	मीन	-
4	मंगल	अ.भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्थी	22:15:43	रेवति	09:25:05	वृद्धि	25:19:28	बव	09:24:09	मीन	09:25:00
5	बुध	अ.भाद्रपद	कृष्ण	पंचमी	24:24:39	अश्विनी	11:53:42	ध्रुव	26:03:05	कौलव	11:18:05	मेष	-
6	गुरु	अ.भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	26:54:12	भरणी	14:46:42	व्याघात	27:00:46	गर	13:37:19	मेष	21:33:00
7	शुक्र	अ.भाद्रपद	कृष्ण	सप्तमी	29:29:23	कृतिका	17:53:45	हर्षण	28:05:00	विष्टि	16:11:34	वृष	-
8	शनि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	अष्टमी	31:56:07	रोहिणि	20:57:03	वज्र	29:01:44	बालव	18:44:52	वृष	-
9	रवि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	अष्टमी / नवमी	07:56:36	मृगशिरा	23:43:29	सिद्धि	29:41:36	कौलव	07:56:36	वृष	10:24:00
10	सोम	अ.भाद्रपद	कृष्ण	नवमी	09:58:58	आद्रा	25:58:58	व्यतिपात	29:55:13	गर	09:58:58	मिथुन	-
11	मंगल	अ.भाद्रपद	कृष्ण	दशमी	11:23:50	पुनर्वसु	27:33:13	वरियान	29:34:09	विष्टि	11:23:50	मिथुन	21:14:00
12	बुध	अ.भाद्रपद	कृष्ण	एकादशी	12:04:38	पुष्य	28:23:23	परिग्रह	28:38:23	बालव	12:04:38	कर्क	-
13	गुरु	अ.भाद्रपद	कृष्ण	द्वादशी	11:59:30	अश्लेषा	28:28:34	शिव	27:04:11	तैतिल	11:59:30	कर्क	28:28:00
14	शुक्र	अ.भाद्रपद	कृष्ण	त्रयोदशी	11:10:18	मघा	27:53:26	सिद्धि	24:59:03	वणिज	11:10:18	सिंह	-
15	शनि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्दशी	09:41:44	पू.फाल्गुनी	26:44:33	साध्य	22:25:48	शकुनि	09:41:44	सिंह	-
16	रवि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	अमावस्या / प्रतिपदा	07:41:17	उ.फाल्गुनी	25:11:17	शुभ	19:30:02	नाग	07:41:17	सिंह	08:23:00
17	सोम	शु.भाद्रपद	शुक्ल	प्रतिपदा / द्वितीया	26:41:47	हस्त	23:22:05	शुक्ल	16:19:17	बालव	16:00:32	कन्या	-
18	मंगल	शु.भाद्रपद	शुक्ल	तृतीया	23:58:12	चित्रा	21:26:20	ब्रह्म	13:01:01	तैतिल	13:19:46	कन्या	10:25:00
19	बुध	शु.भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्थी	21:16:31	स्वाती	19:30:35	इन्द्र	09:41:50	वणिज	10:36:12	तुला	-



20	गुरु	शु.भाद्रपद	शुक्ल	पंचमी	18:42:19	विशाखा	17:41:23	वैधृति	06:23:34	बव	07:58:15	तुला	12:07:00
21	शुक्र	शु.भाद्रपद	शुक्ल	षष्ठी	16:18:27	अनुराधा	16:02:30	प्रीति	24:15:38	तैतिल	16:18:27	वृश्चिक	-
22	शनि	शु.भाद्रपद	शुक्ल	सप्तमी	14:08:38	जेष्ठा	14:38:38	आयुष्मान	21:28:19	वणिज	14:08:38	वृश्चिक	14:39:00
23	रवि	शु.भाद्रपद	शुक्ल	अष्टमी	12:17:34	मूल	13:32:34	सौभाग्य	18:55:04	बव	12:17:34	धनु	-
24	सोम	शु.भाद्रपद	शुक्ल	नवमी	10:43:23	पूर्वाषाढ	12:43:23	शोभन	16:36:49	कौलव	10:43:23	धनु	18:33:00
25	मंगल	शु.भाद्रपद	शुक्ल	दशमी	09:27:57	उत्तराषाढ	12:11:04	अतिगंड	14:34:30	गर	09:27:57	मकर	-
26	बुध	शु.भाद्रपद	शुक्ल	एकादशी	08:32:12	श्रवण	12:01:16	सुकर्मा	12:47:12	विष्टि	08:32:12	मकर	24:03:00
27	गुरु	शु.भाद्रपद	शुक्ल	द्वादशी	07:58:58	धनिष्ठा	12:11:09	धृति	11:17:43	बालव	07:58:58	कुंभ	-
28	शुक्र	शु.भाद्रपद	शुक्ल	त्रयोदशी	07:48:13	शतभिषा	12:45:25	शूल	10:06:58	तैतिल	07:48:13	कुंभ	-
29	शनि	शु.भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्दशी	08:04:41	पू.भाद्रपद	13:45:56	गंड	09:16:52	वणिज	08:04:41	कुंभ	07:28:00
30	रवि	शु.भाद्रपद	शुक्ल	पूर्णिमा	08:49:15	उ.भाद्रपद	15:13:38	वृद्धि	08:49:15	बव	08:49:15	मीन	-

सितम्बर-2012 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	शनि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	एकम	19:16:06	-
2	रवि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	द्वितीया	19:39:06	अशून्यशयन व्रत, महाव्यतिपात देररात 3.32 से
3	सोम	अ.भाद्रपद	कृष्ण	तृतीया	20:39:36	महाव्यतिपात प्रातः 8.50 बजे तक
4	मंगल	अ.भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्थी	22:15:43	अंगारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.8.35), दादाभाई नौरोजी जयंती,
5	बुध	अ.भाद्रपद	कृष्ण	पंचमी	24:24:39	शिक्षक दिवस, डा.राधाकृष्णन जयंती, मदर टेरेसा स्मृति दिवस,
6	गुरु	अ.भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	26:54:12	-
7	शुक्र	अ.भाद्रपद	कृष्ण	सप्तमी	29:29:23	-
8	शनि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	अष्टमी	31:56:07	कालाष्टमी व्रत, विश्व साक्षरता दिवस,
9	रवि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	अष्टमी / नवमी	07:56:36	-
10	सोम	अ.भाद्रपद	कृष्ण	नवमी	09:58:58	पं. गोविन्दवल्लभ पंत स्मृति दिवस
11	मंगल	अ.भाद्रपद	कृष्ण	दशमी	11:23:50	संत विनोबा भावे जयंती, महादेवी वर्मा स्मृति दिवस
12	बुध	अ.भाद्रपद	कृष्ण	एकादशी	12:04:38	कमला एकादशी व्रत, पुरुषोत्तमी एकादशी, श्वेतांबर जैन पर्युषण पर्व प्रारंभ,
13	गुरु	अ.भाद्रपद	कृष्ण	द्वादशी	11:59:30	प्रदोष व्रत, जैन पर्युषण पर्व प्रारंभ, ब्रह्मानंद लोधी स्मृति दिवस
14	शुक्र	अ.भाद्रपद	कृष्ण	त्रयोदशी	11:10:18	मासिक शिवरात्रि व्रत, हिंदी दिवस,
15	शनि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्दशी	09:41:44	श्राद्ध की अमावस्या, कल्पसूत्र वांचन एवं पाक्षिक प्रतिक्रमण (श्वेतांबर जैन), लब्धिविधान व्रत 5 दिन (दिगंबर जैन)
16	रवि	अ.भाद्रपद	कृष्ण	अमावस्या / प्रतिपदा	07:41:17	स्नान-दान हेतु उत्तम पुरुषोत्तमी अमावस्या, रुद्रव्रत, मौनव्रत प्रारंभ, कन्या-संक्रान्ति सायं 5:56 बजे, स्नान-दान का पुण्यकाल दिन 11:32 से सायं 5:56 बजे तक, पुरुषोत्तम (अधिक/मल) मास- व्रत-नियम पूर्ण, वैधृति महापात प्रातः 9.35 से दिन 2.36 बजे तक, महावीर जन्मवांचन(श्वेतांबर जैन)

17	सोम	शु.भाद्रपद	शुक्ल	प्रतिपदा / द्वितीया	26:41:47	विश्वकर्मा पूजा, नवीन चंद्र-दर्शन, श्रीरामदेव पीर जयंती व नवरात्र प्रारंभ (राज.) तेलाघर (श्वेतांबर जैन),
18	मंगल	शु.भाद्रपद	शुक्ल	तृतीया	23:58:12	हरितालिका तीज व्रत, बड़ी तीज, वाराहावतार जयंती, गौरी तृतीया व्रत, केवड़ा तीज, गौरी तीज (ओड़ीसा), त्रिलोक तीज
19	बुध	शु.भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्थी	21:16:31	सिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत(चं.उ.रा.8.41), श्रीगणेशोत्सव 11 दिन, श्रीकृष्ण-कलंकनी चतुर्थी, शास्त्रोक्त मत से आज के दिन चंद्रमा का दर्शन सर्वथा निषिद्ध, पत्थर (ढेला) चौथ, चौठ चंद्र (मिथि.), सौभाग्य चतुर्थी (प.बं), शिवा चतुर्थी, सरस्वती पूजा (ओड़ीसा), लक्ष्मी पूजा, जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) (श्वेतांबर जैन), मूलसूत्रवांचन (श्वेतांबर जैन),
20	गुरु	शु.भाद्रपद	शुक्ल	पंचमी	18:42:19	ऋषिपंचमी-मध्याह्न में सप्तर्षि पूजन, गर्ग एवं अंगिरा ऋषि जयंती, आकाश पंचमी (जैन), जैन संवत्सरी (पंचमी पक्ष), गुरु पंचमी (ओड़ीसा), रक्षापंचमी (प.बं), भारतेंदु जयंती, दशलक्षण व्रत 10 दिन एवं पुष्पांजलि व्रत 5 दिन (दिगंबर जैन), आकाश पंचमी (जैन),
21	शुक्र	शु.भाद्रपद	शुक्ल	षष्ठी	16:18:27	सूर्यषष्ठी व्रत, लोलार्क षष्ठी (काशी), बलदेव छठ-श्रीबलराम जयंती महोत्सव (ब्रज), ललिता षष्ठी, मंथन षष्ठी (प.बं), स्कन्द कुमार षष्ठी व्रत, सोमनाथ व्रत (ओड़ीसा), अनुराधा नक्षत्र में ज्येष्ठा गौरी का आवाहन, चंदनषष्ठी (जैन), कालू निर्वाण दिवस (जैन)
22	शनि	शु.भाद्रपद	शुक्ल	सप्तमी	14:08:38	मुक्ताभरण सप्तमी व्रत, संतान सप्तमी व्रत, ललिता सप्तमी (प.बं-ओड़ीसा), नवाखाई, अपराजिता पूजा, ज्येष्ठानक्षत्र में ज्येष्ठागौरी का पूजन, महालक्ष्मी व्रत-अनुष्ठान प्रारंभ (चंद्रोदय कालीन अष्टमी में), सूर्य सायन तुलाराशि में रात्रि 8.19 बजे, शरद् सम्पात, महाविषुव दिवस, सूर्य दक्षिणी गोलाद्र्ध में, निर्दोष-शीलसप्तमी (दिगंबर जैन),
23	रवि	शु.भाद्रपद	शुक्ल	अष्टमी	12:17:34	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, श्रीराधाष्टमी व्रतोत्सव (बरसाना-मथुरा), दधीचि जयंती, महारविवार व्रत, मूल नक्षत्र में ज्येष्ठागौरी का विसर्जन, नि:शल्य अष्टमी (दिग.जैन), दुबली आठम (श्वेत.जैन),
24	सोम	शु.भाद्रपद	शुक्ल	नवमी	10:43:23	श्रीमद्भागवत जयंती-सप्ताह प्रारंभ,नन्दानवमी, अदुख नवमी, श्रीचंद्र जयंती, तल नवमी (प.बं- ओड़ीसा),

25	मंगल	शु.भाद्रपद	शुक्ल	दशमी	09:27:57	दशावतार दशमी व्रत, तेजा दशमी, श्रीरामदेव पीर नवरात्र एवं मेला रामदेव समाप्त (राज.), पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती, सुगन्ध-धूप दशमी एवं अनन्त व्रत प्रारंभ (दिग.जैन),
26	बुध	शु.भाद्रपद	शुक्ल	एकादशी	08:32:12	पद्मा एकादशी व्रत, पाश्व-परिवर्तनी एकादशी, जलझूलनी एकादशी, धर्मा-कर्मा एकादशी, डोल ग्यारस (म.प्र.), वामनद्वादशी (मध्याह्नकालीन श्रवण नक्षत्रयुता), वामनावतार जयंती, श्रवणद्वादशी,
27	गुरु	शु.भाद्रपद	शुक्ल	द्वादशी	07:58:58	श्यामबाबा द्वादशी, प्रदोष व्रत, भुवनेश्वरी महाविद्या जयंती, हरिवासर प्रातः 7:58 बजे तक, विश्व पर्यटन दिवस
28	शुक्र	शु.भाद्रपद	शुक्ल	त्रयोदशी	07:48:13	मतान्तर से अनन्तचतुर्दशी व्रत (मध्याह्नव्यापिनी चतुर्दशी होने से देश के कुछ अंचलों में आज) गोत्रिरात्र व्रत प्रारंभ, महाव्यतिपात प्रातः 7:59 से दिन 1:06 बजे तक, शहीद भगत सिंह जयंती, रत्नत्रय व्रत 3 दिन (दिग.जैन)
29	शनि	शु.भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्दशी	08:04:41	अनन्तचतुर्दशी व्रत, गणेश विसर्जन (महाराष्ट्र), पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण पूजा-कथा, उमा महेश्वर व्रत, महालया प्रारंभ-प्रौष्ठपदी पूर्णिमा का श्राद्ध, नान्दीमातामह श्राद्ध, कुलधर्म, इन्द्रगोविन्द पूजा (ओड़ीसा), लोकपाल पूजा पूर्णिमा, पाक्षिक प्रतिक्रमण (श्वेत. जैन), ईश्वरचंद्र विद्यासागर जयंती,
30	रवि	शु.भाद्रपद	शुक्ल	पूर्णिमा	08:49:15	स्नान-दान हेतु उत्तम पूर्णिमा, गोत्रिरात्र व्रत पूर्ण, संन्यासियों का चातुर्मास समाप्त, श्रीमद्भागवत सप्ताह पूर्ण, प्रतिपदा का श्राद्ध, अम्बाजी का मेला (गुज), संध्या पूजा, क्षमावाणी पर्व (दिग.जैन),

गणेश लक्ष्मी यंत्र

प्राण-प्रतिष्ठित गणेश लक्ष्मी यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में पूजन स्थान, गल्ला या अलमारी में स्थापित करने व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। यंत्र के प्रभाव से भाग्य में उन्नति, मान-प्रतिष्ठा एवं व्यापर में वृद्धि होती हैं एवं आर्थिक स्थिमें सुधार होता हैं। गणेश लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करने से भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी का संयुक्त आशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

Rs.730 से Rs.10900 तक

मंगल यंत्र से ऋण मुक्ति

मंगल यंत्र को जमीन-जायदाद के विवादो को हल करने के काम में लाभ देता हैं, इस के अतिरिक्त व्यक्ति को **ऋण मुक्ति** हेतु मंगल साधना से अति शीघ्र लाभ प्राप्त होता हैं। विवाह आदि में मंगली जातकों के कल्याण के लिए मंगल यंत्र की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। प्राण प्रतिष्ठित मंगल यंत्र के पूजन से भाग्योदय, शरीर में खून की कमी, गर्भपात से बचाव, बुखार, चेचक, पागलपन, सूजन और घाव, यौन शक्ति में वृद्धि, शत्रु विजय, तंत्र मंत्र के दुष्ट प्रभा, भूत-प्रेत भय, वाहन दुर्घटनाओं, हमला, चोरी इत्यादी से बचाव होता हैं।

मूल्य मात्र Rs- 730

कुबेर यंत्र

कुबेर यंत्र के पूजन से स्वर्ण लाभ, रत्न लाभ, पैतृक सम्पत्ती एवं गड़े हुए धन से लाभ प्राप्ति कि कामना करने वाले व्यक्ति के लिये कुबेर यंत्र अत्यन्त सफलता दायक होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। कुबेर यंत्र के पूजन से एकाधिक स्त्रोत्र से धन का प्राप्त होकर धन संचय होता हैं।



ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस

(Gold Plated)



ताम्र पत्र पर रजत पोलीस

(Silver Plated)



ताम्र पत्र पर

(Copper)

साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	460	1” X 1”	370	1” X 1”	255
2” X 2”	820	2” X 2”	640	2” X 2”	460
3” X 3”	1650	3” X 3”	1090	3” X 3”	730
4” X 4”	2350	4” X 4”	1650	4” X 4”	1090
6” X 6”	3600	6” X 6”	2800	6” X 6”	1900
9” X 9”	6400	9” X 9”	5100	9” X 9”	3250
12” X12”	10800	12” X12”	8200	12” X12”	6400

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारण करने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं। गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

अष्ट लक्ष्मी कवच

अष्ट लक्ष्मी कवच को धारण करने से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)-धैरीय लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का स्वतः अशीर्वाद प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र: Rs-1250**

मंत्र सिद्ध व्यापार वृद्धि कवच

व्यापार वृद्धि कवच व्यापार के शीघ्र उन्नति के लिए उत्तम हैं। चाहें कोई भी व्यापार हो अगर उसमें लाभ के स्थान पर बार-बार हानि हो रही हैं। किसी प्रकार से व्यापार में बार-बार बांधा उत्पन्न हो रही हो! तो **संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित मंत्र सिद्ध पूर्ण चैतन्य युक्त व्यापात वृद्धि यंत्र** को व्यपार स्थान या घर में स्थापित करने से शीघ्र ही व्यापार वृद्धि एवं नितन्तर लाभ प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र: Rs.730 & 1050**

मंगल यंत्र

(त्रिकोण) मंगल यंत्र को जमीन-जायदाद के विवादो को हल करने के काम में लाभ देता हैं, इस के अतिरिक्त व्यक्ति को ऋण मुक्ति हेतु मंगल साधना से अति शीध्र लाभ प्राप्त होता हैं। विवाह आदि में मंगली जातकों के कल्याण के लिए मंगल यंत्र की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र Rs- 730**

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

ओनेक्स

जो व्यक्ति पन्ना धारण करने मे असमर्थ हो उन्हें बुध ग्रह के उपरत्न **ओनेक्स** को धारण करना चाहिए। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु और स्मरण शक्ति के विकास हेतु ओनेक्स रत्न की अंगूठी को दायें हाथ की सबसे छोटी उंगली या लॉकेट बनवा कर गले में धारण करें। ओनेक्स रत्न धारण करने से विद्या-बुद्धि की प्राप्ति हो होकर स्मरण शक्ति का विकास होता हैं।

सितम्बर 2012 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
2	प्रातः 6.10 से दिन-रात	16	सम्पूर्ण दिन-रात
4	प्रातः 9.25 से दिन-रात	20	सायं 5.40 से 21 सितंबर को सायं 4.02 तक
8	सूर्योदय से रात्रि 8.56 तक	23	सूर्योदय से दिन 1.31 तक
12	दिन 12.04 से 13 सितंबर को प्रात:4.22 तक	30	सूर्योदय से दिन 3.12 तक
अमृत योग			
4	प्रातः 9.25 से दिन-रात	16/17	रात्रि 1.10 से सूर्योदय तक
8	सूर्योदय से रात्रि 8.56 तक		
त्रिपुष्कर योग (तीन गुना) योग			
1	सायं 7.15 से 2 सितंबर को प्रातः 6.10 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
3	प्रात: 8.08 से रात्रि 8.38 तक	19	प्रातः 10.36 से रात्रि 9.15 तक
6/7	रात्रि 2.53 से सायं 4.11 तक	22	दिन 2.08 से रात्रि 1.12 तक
10	रात्रि 10.40 से 11 सितंबर दिन 11.23 तक	25	रात्रि 8.58 से 26 सितंबर को प्रातः 8.31 तक
14	दिन 11.09 से रात्रि 10.24 तक	29	प्रातः 8.03 से रात्रि 8.25 तक

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोक्त मत से विघ्नकारक भद्रा या भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुशार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।



दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक

वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र

रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक

रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

ग्रह चलन सितम्बर -2012

Day	Sun	Mon	Ma	Me	Jup	Ven	Sat	Rah	Ket	Ua	Nep	Plu
1	04:14:55	10:20:01	06:11:21	04:05:45	01:20:32	02:29:58	06:02:12	07:05:34	01:05:34	11:13:35	10:07:30	08:12:59
2	04:15:53	11:02:58	06:12:00	04:07:41	01:20:38	03:01:01	06:02:18	07:05:22	01:05:22	11:13:33	10:07:28	08:12:58
3	04:16:51	11:15:37	06:12:40	04:09:38	01:20:44	03:02:05	06:02:23	07:05:12	01:05:12	11:13:31	10:07:26	08:12:58
4	04:17:49	11:28:00	06:13:19	04:11:35	01:20:50	03:03:09	06:02:29	07:05:05	01:05:05	11:13:29	10:07:25	08:12:58
5	04:18:48	00:10:08	06:13:58	04:13:32	01:20:56	03:04:13	06:02:35	07:05:00	01:05:00	11:13:27	10:07:23	08:12:57
6	04:19:46	00:22:05	06:14:38	04:15:29	01:21:01	03:05:17	06:02:41	07:04:58	01:04:58	11:13:25	10:07:22	08:12:57
7	04:20:44	01:03:55	06:15:18	04:17:25	01:21:07	03:06:22	06:02:47	07:04:57	01:04:57	11:13:22	10:07:20	08:12:56
8	04:21:42	01:15:42	06:15:58	04:19:21	01:21:12	03:07:27	06:02:53	07:04:57	01:04:57	11:13:20	10:07:18	08:12:56
9	04:22:40	01:27:34	06:16:37	04:21:16	01:21:17	03:08:32	06:02:59	07:04:57	01:04:57	11:13:18	10:07:17	08:12:56
10	04:23:39	02:09:34	06:17:17	04:23:10	01:21:21	03:09:38	06:03:05	07:04:56	01:04:56	11:13:16	10:07:15	08:12:55
11	04:24:37	02:21:48	06:17:57	04:25:03	01:21:26	03:10:43	06:03:11	07:04:53	01:04:53	11:13:14	10:07:14	08:12:55
12	04:25:35	03:04:21	06:18:38	04:26:55	01:21:30	03:11:49	06:03:17	07:04:47	01:04:47	11:13:11	10:07:12	08:12:55
13	04:26:34	03:17:16	06:19:18	04:28:46	01:21:35	03:12:55	06:03:24	07:04:39	01:04:39	11:13:09	10:07:11	08:12:55
14	04:27:32	04:00:34	06:19:58	05:00:36	01:21:39	03:14:02	06:03:30	07:04:29	01:04:29	11:13:07	10:07:09	08:12:55
15	04:28:31	04:14:16	06:20:39	05:02:25	01:21:43	03:15:08	06:03:36	07:04:19	01:04:19	11:13:04	10:07:08	08:12:55
16	04:29:29	04:28:17	06:21:19	05:04:13	01:21:46	03:16:15	06:03:43	07:04:08	01:04:08	11:13:02	10:07:06	08:12:55
17	05:00:28	05:12:35	06:22:00	05:06:00	01:21:50	03:17:22	06:03:49	07:03:59	01:03:59	11:13:00	10:07:05	08:12:54
18	05:01:26	05:27:02	06:22:41	05:07:46	01:21:53	03:18:29	06:03:56	07:03:52	01:03:52	11:12:57	10:07:03	08:12:54
19	05:02:25	06:11:32	06:23:22	05:09:31	01:21:56	03:19:37	06:04:02	07:03:47	01:03:47	11:12:55	10:07:02	08:12:54
20	05:03:24	06:26:01	06:24:02	05:11:15	01:21:59	03:20:44	06:04:09	07:03:46	01:03:46	11:12:53	10:07:00	08:12:54
21	05:04:22	07:10:23	06:24:43	05:12:57	01:22:02	03:21:52	06:04:15	07:03:45	01:03:45	11:12:50	10:06:59	08:12:55
22	05:05:21	07:24:37	06:25:25	05:14:39	01:22:04	03:23:00	06:04:22	07:03:46	01:03:46	11:12:48	10:06:57	08:12:55
23	05:06:20	08:08:40	06:26:06	05:16:20	01:22:07	03:24:08	06:04:29	07:03:46	01:03:46	11:12:45	10:06:56	08:12:55
24	05:07:18	08:22:32	06:26:47	05:18:00	01:22:09	03:25:16	06:04:35	07:03:45	01:03:45	11:12:43	10:06:55	08:12:55
25	05:08:17	09:06:13	06:27:28	05:19:39	01:22:11	03:26:24	06:04:42	07:03:42	01:03:42	11:12:41	10:06:53	08:12:55
26	05:09:16	09:19:42	06:28:10	05:21:16	01:22:13	03:27:33	06:04:49	07:03:37	01:03:37	11:12:38	10:06:52	08:12:55
27	05:10:15	10:03:00	06:28:51	05:22:53	01:22:14	03:28:41	06:04:56	07:03:29	01:03:29	11:12:36	10:06:51	08:12:56
28	05:11:14	10:16:05	06:29:33	05:24:30	01:22:16	03:29:50	06:05:03	07:03:20	01:03:20	11:12:33	10:06:49	08:12:56
29	05:12:13	10:28:57	07:00:15	05:26:05	01:22:17	04:00:59	06:05:09	07:03:11	01:03:11	11:12:31	10:06:48	08:12:56
30	05:13:11	11:11:36	07:00:56	05:27:39	01:22:18	04:02:08	06:05:16	07:03:02	01:03:02	11:12:29	10:06:47	08:12:57

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते हैं. अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता हैं.

- क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच?
- उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं
- कोई विशेष निति-नियम नहीं
- कोई बुरा प्रभाव नहीं
- कवच के बारे में अधिक जानकारी हेतु

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

सर्व कार्य सिद्धि	4600/-	ऋण मुक्ति	910/-	विघ्न बाधा निवारण	550/-
सर्व जन वशीकरण	1450/-	धन प्राप्ति	820/-	नज़र रक्षा	550/-
अष्ट लक्ष्मी	1250/-	तंत्र रक्षा	730/-	दुर्भाग्य नाशक	460/-
संतान प्राप्ति	1250/-	शत्रु विजय	730/-	* वशीकरण (२-३ व्यक्तिके लिए)	1050/-
स्पे- व्यापर वृद्धि	1050/-	विवाह बाधा निवारण	730/-	* पत्नी वशीकरण	640/-
कार्य सिद्धि	1050/-	व्यापर वृद्धि	730/-	* पति वशीकरण	640/-
आकस्मिक धन प्राप्ति	1050/-	सर्व रोग निवारण	730/-	सरस्वती (कक्षा +10 के लिए)	550/-
नवग्रह शांति	910/-	मस्तिष्क पृष्टि वर्धक	640/-	सरस्वती (कक्षा 10 तकके लिए)	460/-
भूमि लाभ	910/-	कामना पूर्ति	640/-	* वशीकरण (1 व्यक्ति के लिए)	640/-
काम देव	910/-	विरोध नाशक	640/-	रोजगार प्राप्ति	550/-
पदों उन्नति	910/-	रोजगार वृद्धि	730/-		

*कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

YANTRA LIST		EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

YANTRA LIST		EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 255, 370, 460, 550, 640, 730, 820, 910, 1250, 1850, 2300, 2800 and Above…..

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA KARYALAY

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	200.00	500.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	75.00	90.00	12.00	180.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	120.00	150.00	190.00	280.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	20.00	28.00	42.00	51.00	90.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye Orissa	(उडिसा लहसुनिया)	460.00	640.00	1050.00	2800.00	5500.00 & above
Gomed	(गोमेद)	15.00	27.00	60.00	90.00	120.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	300.00	410.00	640.00	1800.00	2800.00 & above
Zarakan	(जरकन)	350.00	450.00	550.00	640.00	910.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	60.00	120.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	60.00	90.00	120.00	280.00	460.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	20.00	30.00	45.00	60.00	120.00 & above
Opal	(उपल)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Garnet	(गारनेट)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	09.00	12.00	15.00	19.00	25.00 & above
Real Onyx	(ओनेक्स)	60.00	90.00	120.00	190.00	280.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	25.00	30.00	45.00	55.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	21.00	30.00	45.00	100.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	09.00	12.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Diamond (.05 to .20 Cent)	(हीरा)	50.00 (Per Cent)	100.00 (Per Cent)	200.00 (PerCent)	370.00 (Per Cent)	460.00 & above (Per Cent)

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

BOOK PHONE/ CHAT CONSULTATION

We are mostly engaged in spreading the ancient knowledge of Astrology, Numerology, Vastu and Spiritual Science in the modern context, across the world.

Our research and experiments on the basic principals of various ancient sciences for the use of common man. exhaustive guide lines exhibited in the original Sanskrit texts

BOOK APPOINTMENT PHONE/ CHAT CONSULTATION

Please book an appointment with Our expert Astrologers for an internet chart . We would require your birth details and basic area of questions so that our expert can be ready and give you rapid replied. You can indicate the area of question in the special comments box. In case you want more than one person reading, then please mention in the special comment box . We shall confirm before we set the appointment. Please choose from :

PHONE/ CHAT CONSULTATION	
Consultation 30 Min.:	RS. 1250/-*
Consultation 45 Min.:	RS. 1900/-*
Consultation 60 Min.:	RS. 2500/-*

*While booking the appointment in Addvance

How Does it work Phone/Chat Consultation

This is a unique service of **GURUATVA KARYALAY** where we offer you the option of having a personalized discussion with our expert astrologers. There is no limit on the number of question although time is of consideration.

Once you request for the consultation, with a suggestion as to your convenient time we get back with a confirmation whether the time is available for consultation or not.

- We send you a Phone Number at the designated time of the appointment
- We send you a Chat URL / ID to visit at the designated time of the appointment
- You would need to refer your Booking number before the chat is initiated
- Please remember it takes about 1-2 minutes before the chat process is initiated.
- Once the chat is initiated you can commence asking your questions and clarifications
- We recommend 25 minutes when you need to consult for one persona Only and usually the time is sufficient for 3-5 questions depending on the timing questions that are put.
- For more than these questions or one birth charts we would recommend 60/45 minutes Phone/chat is recommended
- Our expert is assisted by our technician and so chatting & typing is not a bottle neck

In special cases we don't have the time available about your Specific Questions We will taken some time for properly Analysis your birth chart and we get back with an alternate or ask you for an alternate.

All the time mentioned is Indian Standard Time which is + 5.30 hr ahead of G.M.T.

Many clients prefer the chat so that many questions that come up during a personal discussion can be answered right away.

BOOKING FOR PHONE/ CHAT CONSULTATION PLEASE CONTECT

GURUTVA KARYALAY

Call Us:- 91+9338213418, 91+9238328785.

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com, chintan_n_joshi@yahoo.co.in,

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों , सामाजिक , कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका सितम्बर -2012

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
http://gk.yolasite.com/
http://www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



Sep 2012